RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 अप्रैल 2024
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अप्रैल 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 01
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©
राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

अहिंसा ★ सत्य ★ अस्तेय ★ ब्रह्मचर्य ★ अपरिग्रह

सुविचार

राम चमकते भानु समाना

दुनिया के सुधरने का इंतजार वह करता है, जो अपना सुधार नहीं कर पाता।

दोष दर्शन की नीयत पैदा होते ही मित्रता को खिसकते-दरकते देर नहीं लगेगी।

महान् व्यक्ति अपने जीवन की चिंता नहीं करते। उनको यह विश्वास, भरोसा, आत्मविश्वास होता है कि कहीं भी जाएँगे, आराम से रहेंगे।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.

॥ आगमवाणी ॥

सारो परुवणाए चरणं, तस्स वि य होइ निव्वाणं।

-आचारांगनिर्युक्ति (17)

प्ररूपणा का सार है - आचरण! आचरण का सार है - निर्वाण!

The essence of sermon (by Lords Jina) is right-conduct. The essence (result) of right-conduct is liberation.

चरण गुणविप्पहीणो, बुड्डइ सुबहुंपि जाणंतो।

-आवश्यक निर्युक्ति (97)

जो साधक चारित्र के गुण से हीन है, वह बहुत से शास्त्र पढ़ लेने पर भी संसार-समुद्र में डूब जाता है।

The aspirant who is well-read but devoid of right-conduct drowns in the ocean of worldly existence.

सुबहुंपि सुयमहीयं, किं काही, चरणविप्पहीणस्स?
अंधस्स जह पलित्ता, दीव सयसहस्सकोडी वि॥

-आवश्यक निर्युक्ति (98)

शास्त्रों का बहुत-सा अध्ययन भी चारित्रहीन के लिए किस काम का? क्या करोड़ों दीपक जला देने पर भी अँधे को कोई प्रकाश मिल सकता है?

What use is the study of scriptures for the corrupt? Can billions of lighted lamps show light to the blind?

सीलेण विणा विसया, णाणं विणासंति।

-शीलपाहुड (2)

शील-सदाचार के बिना इंद्रियों के विषय, ज्ञान को नष्ट कर देते हैं।

Without righteousness the sensual pleasures destroy knowledge.

णाणं चरित्तसुद्धं थोओ पि महाफलो होई।

-शीलपाहुड (6)

चारित्र से विशुद्ध हुआ ज्ञान यदि अल्प भी है, तब भी वह महान् फल देने वाला है।

Even a little knowledge purified by right-conduct, yields great benefit.

सीलगुणवज्जिदाणं, णिरत्थयं माणुसं जम्म।

-शीलपाहुड (15)

शीलगुण से रहित व्यक्ति का मनुष्य जन्म पाना निरर्थक ही है।

The human incarnation of the one without righteousness is futile.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

09 महान् कौन?
–आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

12 आंतरिक जाग्रति
–आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

16 जीवन में स्वस्थ व्यवहार
–आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

20 ऐसी वाणी बोलिए : मधुर वचन
–संकलित

24 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
–कंचन कांकरिया

26 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र
–सरिता बैंगानी

विविध

31 बालमन में उपजे ज्ञान
–मोनिका जय ओस्तवाल

47 गुरुचरण विहार
–महेश नाहटा

संस्कार सौरभ

28 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी
–संकलित

33 मुक्ति के मार्ग में बाधक है मोह
–गौतम पारख

35 सहजता, सरलता की प्रतिमूर्ति आचार्य प्रवर
–सुरेश बोरदिया

38 व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर
–डॉ. आभाकिरण गाँधी

40 मार्गदर्शक महावीर
–संकलित

42 Discovering Goodness
–Urja Mehta

भक्ति रस

39 नवम् पट्टधर
–धर्मेंद्र पारख

44 बरगद जैसे आचार्य हमारे
–संध्या धाड़ीवाल

45 हे मेरे आराध्य! हे मेरे भगवन्!
–संकलित

46 देशनोक का सिंह गजब
–मोहन बाफना

आत्म-संवेदन से अनुभूति

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के प्रयत्न वर्तमानकालिक नहीं हैं। दीर्घभूत में भी प्रयत्न होते रहे हैं। आत्मा को सिद्ध करने से आत्मा के होने का तो विश्वास हो सकता है, पर उससे अनुभूति हो जाए, यह पूर्ण रूप से नहीं कहा जा सकता। अनुभव तर्क से नहीं, संवेदन से जुड़ा हुआ प्रसंग है। संवेदन वह तथ्य है जिसे बिना तर्क के जाना जा सकता है। हृदय की धड़कन का जैसे संवेदन होता है, अनुभव होता है, वैसे ही आत्मा की अनुभूति होती है।

दार्शनिक जगत् ने आत्मा को स्वीकार तो किया ही है, फर्क उसके स्वभाव के विषय में है। कोई कूटस्थ नित्य मानता है तो कोई उसे क्षण विनाशी मानता है। कोई आत्मा को अलग-अलग इकाई के रूप में मानता है तो कोई आत्मा को एक ही ब्रह्म रूप में स्वीकार करता है। इस संदर्भ में विचार करें तो कूटस्थ नित्य मानने वाला आत्मा के द्रव्य को देख रहा होता है। क्षण विनाशी उसके पर्याय को आत्मा मान रहा है। यथार्थ द्रव्य बिना पर्याय के हो नहीं सकता और पर्याय द्रव्य रहित प्राप्त नहीं हो सकती। मात्र द्रव्य या पर्याय को मानना दूसरी तरफ से आँख मूँदने जैसी बात है। दूसरी तरफ से बिना आँख मूँदे जो कथन होता है उसमें पदार्थ की एक अवस्था का कथन करते हुए दूसरी अवस्था का अपलाप नहीं किया जाता, अपितु दूसरी अवस्था को उस समय अकथनीय माना जाता है। इस प्रकार का कथन वस्तु पर प्रत्येक एंगल-प्रकार से विचार करने का प्रयत्न करता है। उसका विचार वस्तुस्वरूप के स्पष्ट प्रतिपादन का होता है। जैन दर्शन ने उसी विधा से नित्यानित्य जैसी अवस्थाओं का सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है, जो पूरे जगत् को सोचने की दृष्टि देता है।

आत्मा भी पदार्थ है। उसे एक ही एंगल-प्रकार से कैसे निर्णीत किया जा सकता है। उसे भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से विचारना जरूरी है। उससे आत्मा के सम्यक् स्वरूप का बोध हो सकेगा। साथ ही संवेदन-अनुभव की दिशा में भी लक्ष्य बन सकेगा।

कार्तिक कृष्ण 8, मंगलवार, 03-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

EXPEERIENCE THROUGH SELF-SENSATION

-Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

Efforts to prove the existence of the soul are by no means contemporary. In the distant past too, such exercises were undertaken. Now, such proof might serve for reinforcing faith in the soul's existence, but it can hardly be claimed in toto that it would make for self-experience. Experience is not a function of logic; rather, it is a happening linked to sensation. Deep feelings constitute a reality that may be known without recourse to logic. Just as heart beat can be felt and experienced, awareness of the soul too can come about.

The philosophical world has doubtlessly accepted the phenomenon of soul; the difference though lies in the realm of its nature. One might believe the soul to be 'kootasthanitya' (or, unchanging and imperishable), while another might call it ever-changing or ephemeral. Again, one might perceive it as comprising discrete units, and another might accept it as a single supreme form. Pondering in this context, one supposing the soul to be 'kootasthanitya' is envisioning the soul as 'dravya' (or, the six 'astikayas', or fundamental entities, constituting the stuff of existence, viz. 'dharma', 'adharma', 'akash', 'kaal', 'pudgala' and 'jiva' – say, motion, rest, space, time, matter and soul respectively). On the other hand, one supposing it to be ever-changing is confusing the soul with its 'paryay' (or, mode/state).

Now, the real 'dravya' cannot subsist except in a state, and no state can be contemplated sans 'dravya'. To acknowledge either 'dravya' or 'paryay' (and not both) would tantamount to turning the Nelson eye to an alternative standpoint. Discussion from a holistic view would not be dismissive of the other aspect, even though one may forbear to mention it at that point in time. This kind of narrative aims at examining it from all angles, the idea being to expound on it with clarity. It is in this manner that Jain philosophy has presented the right resolution of states of permanence and transience, and placed before the world a thought perspective.

The soul too is a 'padaarth' (that is, a 'dravya', or a fundamental entity). How could it ever be defined from a single angle or standpoint? It has to be pondered from diverse perspectives. Only then can the true nature of the soul be known. Simultaneously, it would be possible to feel and experience it too.

Tuesday, 03-11-2015

Courtesy- Brahmakshar

जन्मकल्याणक करें सार्थक

मैं तुम्हारे लिए कोई चमत्कार नहीं कर सकता। मैं तुम्हें सिर्फ मार्ग दिखा सकता हूँ, जिस पर मैं स्वयं चला हूँ।

-श्रमण भगवान महावीर

बने हुए रास्ते पर चलना आसान है, परंतु नया रास्ता बनाना कठिन है।

-आचार्य श्री रामेश

उपरोक्त वाक्यांश हमारी आस्था के केंद्र श्रमण भगवान महावीर स्वामी और परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के हैं। भगवान महावीर ने संयम का मार्ग चुनकर उसमें आई अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए विभिन्न परीषह सहन कर मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त किया और जन-जन के लिए पदचिह्न स्वरूप आत्मकल्याण का मार्ग बता गए।

धर्म के विषय में सदैव ही दो पक्ष रहे हैं – एक पक्ष धर्म की तरफदारी का तो दूसरा पक्ष विरुद्ध मतावलंबियों का। प्राय: यह सुना जाता है कि एक ही तो जीवन है उसे ऐशो-आराम में ना जीकर क्यों धर्म के मार्ग पर चलना और कठिनाइयों को झेलना आदि-आदि।

आचार्य प्रवर फरमाते हैं कि ''तर्क का कोई समाधान नहीं है। समाधान जिज्ञासा का ही हो सकता है।''

धर्म करना आवश्यक नहीं है। धर्म करना तो मनुष्य का स्वभाव है, जिसमें उसे रहना आवश्यक है। धर्म किया नहीं जाता, धर्म तो जीया जाता है। पानी का स्वभाव शीतलता, अग्नि का स्वभाव उष्णता, प्रकृति का स्वभाव देना आदि अनेक उदाहरण हैं। हम कल्पना करें कि इनमें से कोई एक भी अपने स्वभाव को छोड़कर विभाव में चला जाए तो कैसी भयावह स्थिति पैदा हो जाएगी। वर्तमान की भयावह स्थिति किसी से छुपी हुई नहीं है। इस भयावह स्थिति का जिम्मेदार है मनुष्य, जो अपने विभाव में जी रहा है। अहिंसा, करुणा, दया, ईमानदारी, परोपकार, नैतिकता को परे रखकर हिंसा, राग-द्वेष, क्रोध, माया, छल-कपट को मनुष्य ने अपना स्वभाव बना लिया है। इसके अविश्वसनीय परिणाम दिन-रात देखने को मिल रहे हैं। वर्तमान में हो रही त्राही-त्राही को रोकने के लिए मनुष्य को अपने स्वभाव में आना अत्यावश्यक है।

जीव की चार गतियाँ बताई गई हैं। उनमें से सिर्फ मनुष्य ही मोक्ष में जा सकता है। केवल और केवल मनुष्य योनि में ही वह सामर्थ्य है। वर्तमान में मिला पाँचों इंद्रियों से परिपूर्ण मानव शरीर, उच्च कुल, आर्यक्षेत्र, जिनशासन यह सब पूर्वभवों में किए गए सुकर्मों का फल है। अत: हमें इस मनुष्य जीवन का सदुपयोग करके अपनी आत्मा का कल्याण करना चाहिए और अपने जीवन को धर्म से ओत-प्रोत रखना चाहिए।

धर्म में रहा हुआ व्यक्ति सदैव निर्णायक स्थिति में रहता है। उसे कभी भी अनिर्णायक स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता। वह प्रत्येक अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति के लिए तैयार रहता है। साथ ही उसे स्वीकार करने की क्षमता भी उसमें परिलक्षित होती है। धर्म में रहा हुआ व्यक्ति भली-भाँति समझता है कि उसके साथ जो भी हो रहा है, वह सभी उसके पूर्व संचित् कर्मों का फल है। अत: वह निराशा से मुक्त रहता है। धर्म में रहा हुआ व्यक्ति सदैव निर्भय रहता है, क्योंकि वह अपने व प्रकृति के स्वभाव के अनुरूप गति कर रहा है। इससे मनुष्य के भीतर सकारात्मकता का प्रवाह होता है और सकारात्मकता सफलता की पहली सीढ़ी है। एक विद्यालय में नियमों के अनुरूप ना चलने पर अध्यापक द्वारा विद्यार्थी को ज्यादा दिन बर्दाश्त नहीं किया जाता। या तो उसे सबक सिखाने के लिए दंड दिया जाता है अथवा स्कूल से निकाल दिया जाता है। समरूप मनुष्य यदि प्रकृति के अनुरूप स्वभाव में नहीं रहता है, नियम तोड़ने की कोशिश करता है तो प्रकृति उसे भी दंड देने में पीछे नहीं रहती है।

धर्म में रहना परमानंद की अनुभूति है। धर्म की ऊँचाइयों को हासिल करना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए तभी मनुष्य जीवन सफल व सार्थक हो पाएगा।

भगवान महावीर का 2623वाँ जन्मकल्याणक हमारे समक्ष उपस्थित हो रहा है। 2623 वर्ष पूर्व छोड़े गए पदचिह्नों पर आज भी हमारे साधु-साध्वी गतिमान हैं और स्व-कल्याण करते हुए अपने उपदेशों से पर-कल्याण रूप हमें भी उस पथ पर चलने की प्रेरणा देते हुए फरमाते हैं कि ''भगवान महावीर का बताया मार्ग ही सच्चा मार्ग है।'' हम सब उस मार्ग पर चलने का पुरुषार्थ करें, इसी शुभभावना के साथ....

सह-संपादिका

महत्तम महोत्सव अब है महत्तम 'शिखर'

व्यक्ति, श्रावक, साधक ऐसे ही महत्तम नहीं बन जाता। इसके लिए महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेनी होती है। उनके जीवन के संस्मरण रूपी फूलों से खुशबू लेनी होती है, जो महापुरुष अपनी प्रज्ञा से सभी को निष्पृह भाव से प्रदान करते हैं। ऊर्जा लेनी होती है महापुरुषों की संयम साधना से, तब जाकर व्यक्ति महत्तम बन शिखर आरूढ़ हो सकता है।

शिखर पर आरूढ़ होने के लिए नींव बनना अवश्यंभावी है और महत्तम शिखर की नींव है इसके नौ बिंदु व मंजिल **'शिखर'** है आध्यात्मिक उत्थान से सर्वांगीण विकास। हम सभी ने 13 जुलाई 2022 से 20 फरवरी 2024 तक आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव को **'महत्तम महोत्सव'** के रूप में मनाया है। अब समय आ गया है **'शिखर'** में प्रवेश करने का। तो हम सभी मिलकर **21 फरवरी 2024 से 09 फरवरी 2025 तक** आचार्य श्री रामेश के 50वें दीक्षा वर्ष को **'महत्तम शिखर'** के रूप में अपने जीवन का अंग बना रहे हैं।

इस महत्तम शिखर में हमको साधना के शिखर पुरुष, चेतना के पवित्र प्रवाह, अनुपम, अद्वितीय, अप्रतिम युगपुरुष की स्वर्णिम संयम यात्रा से रूबरू होकर दूसरों को भी इससे जोड़ना है और यही **'शिखर'** आरोहण है। इन महापुरुष का जीवन बोलता है, उनकी साधना की खुशबू, अदम्य पुरुषार्थ की झलक चारों ओर फैली हुई है।

रूबरू होना व करना – कनेक्टिविटी

9 बिंदुओं का मनन कर अपने आपको जोड़ना। जो नहीं जुड़े हैं उनको जोड़ने का लक्ष्य कर सफलता पाना। इससे स्वयं पुण्यवानी बाँधकर दूसरों को भी पुण्यवानी का बंध होना निश्चित है।

मार्ग सरल भी है तो थोड़ा कठिन भी

सरल इसलिए कि केवल प्रभावना कर प्रेरित करना है और थोड़ा कठिन इसलिए कि अपने साथ-साथ ऐसे लोगों के भी कदमों को गति देना है, जो उन संयमशील युगपुरुष के उत्कृष्ट संयमी जीवन, विचारों एवं व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर 'शिखर' पर आरूढ़ होना चाहते हैं। यह मत देखो कि कौन क्या कर रहा है। यह देखो कि मैं क्या कर रहा हूँ। समय है उत्साह, उल्लास, श्रद्धा, समर्पणा, जिम्मेदारी एवं वात्सल्यता से महत्तम शिखर मनाने का।

धर्मदेशना

महान् कौन?

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

महान् पुरुषों की सेवा करने की इच्छा सबकी होती है, परंतु महान् कौन है? भागवत में कहा है –

महत्सेवां द्वारमाहुर्विमुक्तेः,
तमोद्वारं योषितां संगि संगम्।
महान्तस्ते समचित्ताः प्रशान्ता,
विमन्यवः सुहृद् साधवो ये।।

अर्थात् इस संसार में मोक्ष के द्वार महान् पुरुषों की सेवा, संगति और उपासना है और नरक का द्वार स्त्री के उपासक, कनककामिनी के भोगीजन की सेवा करना है। जो समभावी हों, शांतचित्त हों, क्षमावान हों और निर्मल अंत:करण वाले साधु हों, वे ही महान् हैं।

महान् पुरुषों की सेवा-संगति को मोक्ष का द्वार कहा गया है, परंतु प्रश्न यह है कि महान् पुरुष किसे कहा जाए? जो बड़े जागीरदार हैं, जो ठाठ के साथ मूल्यवान वस्त्र पहनते हैं और अकड़ते हुए चलते हैं, जो विशाल हवेलियों में रहते हैं, उन्हें महान् समझा जाए या किसी दूसरे को? महान् वास्तव में किसे कहना चाहिए, उसका निर्णय शास्त्रकारों द्वारा किया ही जाएगा, परंतु भागवत-पुराणकार कहते हैं कि ऐसी उपाधियों को धारण करने वाले महान् नहीं हैं। किंतु जितना चित्त सम है, समतोल है, वही महान् कहलाने योग्य हैं। जिनका मन आत्मा में है, पुद्गलों में रचा-पचा नहीं रहता है, वे महान् हैं।

महान् पुरुष का मन हमेशा समतोल रहना चाहिए। मन को समतोल रखने का अर्थ है आत्मा को भूलकर पुद्गलों में रमण न करना। जड़ और चेतन का विवेक करके जड़ स्वभाव को दूर करना और चेतन स्वभाव को अपनाना अर्थात् यह मानना कि जड़ का धर्म नश्वरता व अज्ञान है और चेतन का धर्म अविनाशी व ज्ञानमय है। यही चित्त की सम-स्थिति है।

कहा जा सकता है कि कार्मण शरीर की अपेक्षा जीव के पीछे अनादिकाल से उपाधि लगी है। यह मेरा कान है, यह मेरी नाक है, यह मेरा शरीर है, इस प्रकार जड़ को अपना मानकर आत्मा शरीर के अधीन हो रहा है। इस उपाधि को उपाधि मानना भी समचित्त का लक्षण है।

कंकर को रत्न और रत्न को कंकर कहने वाला मूर्ख गिना जाता है। यद्यपि रत्न और कंकर दोनों जड़ हैं, फिर भी रत्न और कंकर को एक मानने वाला मूर्ख समझा जाता है, तो फिर चेतन को जड़ और जड़ को चेतन समझने वाले को समचित्तवान् कैसे कहा जा सकता है? अज्ञान के कारण लोग चेतन को जड़ और जड़ को चेतन मानते हैं, परंतु किसी के कहने या मानने से जड़ चेतन और चेतन जड़ नहीं बन सकता। इसी प्रकार किसी के कहने से जड़ या चेतन अपना स्वभाव नहीं त्यागते। जो लोग जड़ को चेतन एवं चेतन को जड़ मानते हैं, वह उनका अज्ञान ही है तथा इस अज्ञान के कारण ही लोग समझते हैं कि यह मेरा है और यह तेरा है।

आशय है कि जो ऐसी उपाधियों में उलझा हुआ है, वह महान् नहीं जड़ का गुलाम है। महान् पुरुष तो वह है जो अपने शरीर को भी अपना नहीं मानता। ऐसा पुरुष संसार की अन्यान्य वस्तुओं को अपनी न

माने, इसमें आश्चर्य ही क्या है?

महान् पुरुषों की सेवा किस उद्देश्य से करनी चाहिए? महान् पुरुष की सेवा करेंगे तो मस्तक पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दे देंगे तो हम ऋद्धि-समृद्धि से संपन्न बन जाएँगे, इस उद्देश्य से महान पुरुषों की सेवा करना महात्माओं की सेवा नहीं, माया की सेवा करना है। किंतु यदि इस विचार से सेवा की जाए कि मैं संसार की उपाधि में फँसा हूँ और जड़ को अपना मान बैठा हूँ। महान् पुरुषों की सेवा-संगति करने से मैं उपाधि से मुक्त हो जाऊँगा, तो यह सच्ची सेवा है और ऐसी ही सेवा मोक्ष का द्वार है।

जिनके मन में समताभाव विद्यमान है, उन्हें कोई लाखों गालियाँ दे, तो भी उनके मन में रोष या विकार का भाव उत्पन्न नहीं होता। अपनी प्रशंसा सुनकर उनका मन फूल नहीं उठता। इस प्रकार जो प्रशंसा से फूलते नहीं और निंदा से क्रुद्ध नहीं होते, वे ही सच्चे महान् हैं।

एक बार पूज्य श्री उदयसागर जी महाराज रतलाम में विराजमान थे। पूज्यश्री की प्रशंसा सुनकर एक मुसलमान ने उनकी परीक्षा लेने का विचार किया। वह पूज्यश्री के पास पहुँचा और मनचाही कर्णकटु गालियाँ देने लगा। पूज्यश्री उस समय धर्म-ध्यान कर रहे थे। मुसलमान तो अत्यंत गंदी और चुभने वाली गालियाँ दे रहा था और पूज्यश्री मानो गालियाँ सुन ही न रहे हों। इस प्रकार शांत बैठे मन ही मन मुस्कुरा रहे थे। उनके मन में जरा भी क्रोध न आया। जब मुसलमान को लगा कि पूज्यश्री मेरी परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुके हैं, तब वह उनके पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा- ''मैंने आपकी प्रशंसा सुनी थी, आप वैसे ही शांत हैं। वास्तव में आप सच्चे फकीर हैं।''

व्याख्यान में शांत रहने का उपदेश देना तो सरल है, पर क्रोध के प्रसंग पर शांत रहना बड़ा ही कठिन है। किंतु महान् तो वही है जो क्रोध का कारण उपस्थित होने पर भी शांत रहे।

कहा जा सकता है कि कोई गालियाँ दे तो क्या चुपचाप सहन कर लेना चाहिए? लेकिन महापुरुष तो गालियों को गालियाँ ही नहीं मानते। वे उन गालियों में से भी अपने लिए सारतत्त्व खींच लेते हैं। कोई उन्हें दुष्ट कहे तो वे यही विचार करते हैं कि यह मुझे बोध दे रहा है। अगर मुझमें दुष्टता घुस गई है तो बिना विलंब उसे दूर कर देना उचित है। अगर अपने में दुष्टता नहीं है तो हँसता रहे और विचार करे कि यह किसी दूसरे को दुष्ट कहता होगा।

अगर क्रोधी के प्रति प्रेम करने के सिद्धांत को लोग जीवन में उतारें तो संसार में शांति स्थापित हो और किसी प्रकार की अशांति न रहे। सास-बहू और पिता-पुत्र के बीच लड़ाई होने का कारण यही भावना है कि मैं ऐसी/ऐसा नहीं, फिर मुझे ऐसा क्यों कह दिया? इसके बदले अगर यह भावना आ जाए कि जब मैं ऐसी/ऐसा नहीं हूँ तो मुझे नाराज होने की आवश्यकता

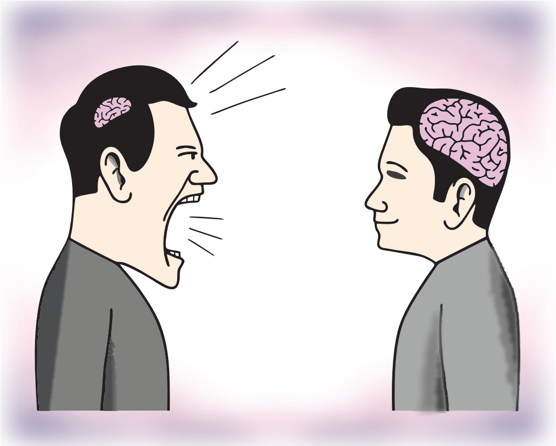

ही क्या है, तो अशांति का कारण ही न रह जाए।

आप निर्ग्रंथ गुरु की सेवा करने वाले हैं, अतएव आपको शांति का यह गुण अवश्य अपनाना चाहिए। सच तो यह है कि संसार में कोई किसी का अपमान नहीं कर सकता। अपनी आत्मा ही अपना अपमान करती है।

कहने का आशय यह है कि जो क्रोध के प्रसंग पर भी शांत-प्रशांत रह सकता है, ऐसा समचित्त वाला ही महान् कहलाता है। महान् पुरुष कदापि जड़ के वशीभूत नहीं होते। वे यही सोचते हैं -

जीव नवि पुग्गली नैव पुग्गल,
कदा पुग्गलाधार नहीं तास रंगी।
पर तणो ईश नहीं अपर ए ऐश्वर्यता,
वस्तुधर्मे कदा न परसंगी।।

-श्रीदेवचंद चौबीसी

परमात्मा के साथ जिनकी लगन लगी है, वे यही विचार करते हैं कि मैं पुद्गल नहीं हूँ, मैं पुद्गल का मालिक भी रहना नहीं चाहता, तो फिर उसका गुलाम बनकर कैसे रह सकता हूँ?

लोग पुद्गल के गुलाम बन रहे हैं। अगर वे थोड़ा धैर्य धारण करें तो पुद्गल उनके गुलाम बन जाएँ। मगर लोगों में इतना धैर्य कहाँ है! अतएव जितने दुःख हैं, वे सब उनके अज्ञान के ही फल हैं। कहा है –

कहे एक सखी सयानी सुन री सुबुद्धि रानी,
तेरो पति दुःखी लाग्यो और यार है महा अपराधी।
छांहि, मांहि एक नर सोई,
दुःख देत लाल दीसे नाना परकार है।
कहे आली सुमति कहा दोष पुद्गल को,
आपनी ही भूल लाल, होता आपा वार है।
खोटो नाणो आपको सराफ कहा लागे वीर,
काहू को न दोष मेरो भौंदू भरतार है।।

–श्री समयसार नाटक

महान् का अर्थ

पूर्वाचार्यों ने महान् शब्द का अर्थ बतलाते हुए भिन्न-भिन्न अर्थ किए हैं, अनेक बातें समझाई हैं।

आठ प्रकार के महान् निम्न प्रकार से बतलाए हैं –

(1) नाम महान् – जिसमें महत्ता का एक भी गुण नहीं है, परंतु जो केवल नाम से ही महान् है, वह नाम महान् कहलाता है।

जैन शास्त्रों ने प्रारंभ और अंत समझाने का बहुत प्रयत्न किया है। साधारणतया प्रत्येक वस्तु को नाम से ही जाना जा सकता है, किंतु नाम के साथ उसके स्वरूप को भी समझना चाहिए।

(2) स्थापना महान् – किसी वस्तु में महानता का आरोपण कर लेना स्थापना महान् है।

(3) द्रव्य महान् – जब केवलज्ञानी अंत समय में केवली समुद्घात करते हैं, तब उनके कर्मप्रदेश चौदह राजू लोक में फैल जाते हैं और उनके शरीर में निकला महास्कंध समस्त लोक में समा जाता है। वह द्रव्य से महान् है।

(4) क्षेत्र महान् – समस्त क्षेत्रों में आकाश ही महान् है, क्योंकि आकाश समस्त लोक और अलोक में व्याप्त है।

(5) काल महान् – कालों में भविष्यकाल महान् है। जिनका भविष्य सुधरा, उनका सभी-कुछ सुधरा। भूतकाल कैसा ही उज्ज्वल क्यों न रहा हो, पर वह बीत चुका है। अतएव भविष्यकाल ही महान् है।

(6) प्रधान महान् – जो प्रधान माना जाता है, उसके सचित्त, अचित्त और मिश्र के भेद से तीन भेद हैं। सचित्त में भी चतुष्पद, द्विपद और अपद, ये तीन भेद हैं। द्विपदों में तीर्थंकर महान् हैं, चतुष्पदों में अष्टापद महान् गिना जाता है और वृक्ष आदि अपदों में पुंडरीक कमल महान् माना जाता है। अचित्त में चिंतामणि रत्न महान् है और मिश्र में तीर्थंकरों का राज्य संपदा-युक्त शरीर महान् है। तीर्थंकर का शरीर तो दिव्य होता ही है, किंतु राज्याभिषेक के समय वे जो वस्त्राभूषण पहनकर बैठते हैं, वे भी महान् होते हैं। स्थान के कारण वस्तु का भी महत्व बढ़ जाता है। इस कारण मिश्र में तीर्थंकर का वस्त्राभूषण से युक्त शरीर महान् है।

(7) अपेक्षा महान् – एक वस्तु की अपेक्षा दूसरी वस्तु का महान् होना अपेक्षा महान् है। जैसे- सरसों या राई की अपेक्षा चने का दाना महान् है और चने के दाने से बोर महान् है।

(8) भाव महान् – टीकाकार का कथन है कि प्रधानता की अपेक्षा से क्षायिक भाव महान् है और आश्रय की अपेक्षा पारिणामिक भाव महान् है क्योंकि जीव व अजीव, दोनों ही पारिणामिक भाव के अधीन हैं। किसी-किसी आचार्य के मत से औदयिक भाव महान् है, क्योंकि अनंत संसारी जीव औदयिक भाव के आश्रित हैं। इस प्रकार विभिन्न मत होने पर भी आश्रय की अपेक्षा से पारिणामिक भाव ही महान् है क्योंकि पारिणामिक भाव में सिद्ध और संसारी दोनों प्रकार के जीवों का समावेश हो जाता है। इसी प्रकार प्रधानता की अपेक्षा क्षायिक भाव महान् है।

यहाँ महान् निर्ग्रंथ का प्रकरण है। जो महापुरुष पारिणामिक भाव से क्षायिक भाव में प्रवर्त्तते हैं, उन्हें महान् कहा है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-20 (अनाथ भगवान)

धर्मदेशना

आंतरिक जाग्रति

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी ऐसे दावानल में जला हूँ, क्योंकि उस समय क्रियाओं की विपरीतता मेरे व्यक्तित्व की अंग रूप बन गई थी। हिंसा से मेरा व्यक्तित्व विकृत हो गया था तथा मेरे जीवन का दु:खात्मक आधार बन गया था। मेरे जीवन की ऊर्जा ऊर्ध्वगामी होने की बजाय अधोगामी बन गई थी। मुझे प्रतीत हुआ कि हिंसापूर्ण आचरण से ऐसी पतनकारक दशा बनती ही है, फलस्वरूप मेरी चेतना सिकुड़कर अनुभूतिशून्य ही बनने लगी थी।

मिथ्यात्व-सम्यक्त्व संघर्ष

मैं जब आत्म-नियंत्रण, आत्मालोचना, आत्म-समीक्षण, आत्म-चिंतन, आत्म-दमन तथा परिमार्जन-संशोधन एवं संशुद्धि की प्रक्रिया में से प्रतिदिन गुजरता रहूँगा, तब मेरे भीतर मिथ्यात्व एवं सम्यक्त्व का तुमुल संघर्ष आरंभ हो जाएगा। एक ओर विषय, कषाय, काम, भोग, मोह, प्रमाद आदि के रूप में विकृत वृत्तियाँ मेरी इंद्रियों को, मेरे मन को तथा मेरे 'मैं' को भी मिथ्यात्व की अंधकारपूर्ण मोहदशा की ओर खींचेगी, तो दूसरी ओर मेरी जितनी साधी हुई जाग्रति होगी, उसके अनुसार मेरा 'मैं' अपने आपको स्थिर रखेगा और अपनी इंद्रियों तथा मन को विदिशा में जाने से रोकेगा। जब तक मैं विकारों का पूरी तरह से विनाश नहीं कर लूँगा, तब तक अपने भीतर में यह कठिन संघर्ष चलता ही रहेगा। कभी दो पग इधर, तो कभी दो पग उधर का दृश्य पैदा होता रहेगा। कभी पाँव जमेगा, तो कभी उखड़ भी जाएगा। कभी पाँव जमाकर सम्यक्त्व की दिशा में कदम बढ़ेंगे, तो कभी पाँव फिसलकर मिथ्यात्व की ओर झुक जाएँगे। कभी-कभी तो सम्यक्त्व की दिशा में बहुत आगे तक बढ़ जाने यानी कि व्रती आदि हो जाने के बाद भी ऐसी फिसलन आ सकती है कि मैं लुढ़कता हुआ फिर से मिथ्यात्व के गड्ढे में गिर पड़ूँ। यह भीतर का द्वंद्व बहुविध बहुरूपी बनकर चलता रहता है, किंतु यह द्वंद्व अवश्य ही इस तथ्य का प्रमाण होता है कि मेरे अंत:करण में आत्म-विकास की जाग्रति का सूत्रपात हो चुका है।

मिथ्यात्व-सम्यक्त्व संघर्ष की वेला में मेरा 'मैं' द्विरूपी हो जाता है अथवा यों कहें कि वह दो भागों में बँट जाता है। पहला 'मैं' दूसरे से कहता है- ''ऐ मूर्ख! क्या संयम और साधना की बात करता है? देख, यह मनुष्य तन मिला है, सशक्त इंद्रियाँ और मस्त मन मिला है। इनको पूरी तरह काम में ले और संसार के काम-भोगों का आनंद उठा। ऐसा तन और जीवन बार-बार नहीं मिलेगा। जवानी दो दिन में बीत जाएगी और फिर दूसरे लोगों को ये आनंद उठाते हुए देखकर पछताएगा। तेरे तन की आज जवानी है, सुगठित स्वास्थ्य है, धन और सारी सुख-सामग्री सामने है। देखता क्या है - मस्त बन और मौज उड़ा। जिनेश्वरों के सिद्धांतों का आज कोई औचित्य नहीं है।'' दूसरा 'मैं' इसे सुनता है और एकदम कोई उत्तर नहीं दे पाता है, बल्कि विचार में पड़ जाता है।

तब पहला 'मैं' अधिक जोश से कहने लगता है- ''अरे! सोच में क्या पड़ गया है? यह आयु सोच करने की नहीं है, बैठने और चलने की भी नहीं है। यह आयु तो हजार-हजार उमंगों के साथ उड़ने की है। सुन! कितना कर्णप्रिय संगीत आ रहा है। सुनकर तबीयत बाग-बाग हो उठती है। देख! कितनी रूपवती कन्याएँ तुझे रिझाने के लिए सामने खड़ी हैं। क्या इनकी अनुपम सुंदरता तुझे मुग्ध नहीं बना रही है? सूँघ! कितनी मस्त बना देने वाली इत्रों और सेंटों की सुगंध है। सूँघकर ही तन-मन में मस्ती छा जाती है। तेरे सामने कितने प्रकार के सुमधुर तथा सुस्वादु व्यंजन रखे हुए हैं, एक कौर चखकर तो देख, फिर कहीं उँगलियाँ ही न काट खाए! और इस शयनगृह में प्रवेश तो कर, इसकी हर सजावट का स्पर्शसुख महसूस कर, तेरा रोम-रोम सुख के हिंडोले में झूलने लगेगा। कुछ भी सोच मत, रंग, तरंग और उमंग के इस सरोवर में आँखें नहीं है।'' इसका 'मैं' और अधिक चिंताग्रस्त हो गया, जब तक वह चिंतनमग्न नहीं हो पाया था, वह किंकर्तव्यमूढ़ता में पड़ा हुआ था। यह देखकर तो पहले 'मैं' का हौसला बहुत ज्यादा बढ़ गया। उसने अपनी दासियों और दासों को आदेश दिया कि वे इस दूसरे 'मैं' को पकड़कर मेरे पास ले आवें, हम दोनों आलिंगनबद्ध होकर एक हो जाएँ और संसार के भोग-परिभोग मस्त होकर भोगें।

तब दूसरा 'मैं' कुछ जागा, क्योंकि उसे अपने स्थान से डिगाए जाने का खतरा पैदा हो गया था। जागा तो उसकी चिंतन-धारा भी सक्रिय हुई। अपने भीतर ही उसने विचार शुरू किया कि क्या उस 'मैं' के कहने में कोई सच्चाई है? क्या मनुष्य तन संसार के कामभोग भोगने के लिए ही मिला है अथवा चार गति चौरासी लाख योनियों की यह दुर्लभ प्राप्ति, धर्म का साधन बनने के लिए बड़े पुण्योदय से मिली है? यह पुकारने वाला 'मैं' क्या अलग है और क्या मैं अलग हूँ? यदि हम दोनों एक हैं तो वह मेरे से बहककर अलग क्यों रह गया है? क्या मेरा यह कर्तव्य नहीं है कि पहले तो मैं ही स्थिर बना रहूँ और फिर उस 'मैं' को भी अपने में मिला लूँ? हम दोनों एक ही तो हैं, वह बहका हुआ भाग और मैं सधा हुआ भाग। ज्यों-ज्यों ये प्रश्न दूसरे 'मैं' को मथने लगे, उसका चिंतन पुष्ट होता गया। तब उसने अपनी चुप्पी तोड़ी। वह स्नेह भाव से मधुर स्वर में बोला- ''भाई! तुम मुझे पुकार रहे हो, यह दोहरी भूल कर रहे हो। एक तो तुम खुद पदार्थ-मोह और कामभोगों में पागल बन गए हो, तो मुझे भी पतित बनने का आह्वान कर रहे हो! तुम सोचो कि क्या तुम सही जगह पर खड़े हो? क्या तुम्हें अपनी जगह से कुछ भी दिखाई दे रहा है? जब घटाटोप अंधकार में खड़े हो तो भला तुम्हें कुछ भी दिखाई थोड़े ही दे रहा होगा? देखते नहीं, मैं प्रकाश में खड़ा हूँ, मेरी सम्यक्त्व की पवित्र जगह है और तुम मिथ्यात्व के अँधेरे में अपने आपसे विस्मृत हो। यों मानो कि तुम अँधे हो और मैं दृष्टि वाला। इसलिए अच्छा होगा कि तुम ही मेरे पास चले आओ। तुमको और कुछ भी नहीं होगा, किंतु मैं अवश्य दिखाई दे रहा होऊँगा क्योंकि मैं सम्यक्त्व के प्रकाश से आवृत्त हूँ। नजर उठाओ मेरी तरफ और चलना शुरू कर दो। तुम जिनवाणी से विपरीत होने से अंधकार में हो और मैं जिनवाणी के अनुकूल श्रद्धा आदि वाला होने से मैं प्रकाश में हूँ।''

अब पहले 'मैं' के चुप हो जाने की बारी आ गई थी। वह सोच में पड़ गया कि क्या वह सही है या दूसरा 'मैं' सही कह रहा है? उसने महसूस किया कि वह अँधेरे में खड़ा है। हकीकत में उसको कुछ भी नहीं

दिखाई दे रहा है, लेकिन वह इस दूसरे 'मैं' को देख पा रहा है, ऐसा क्यों है? क्या प्रकाश उसके पास है और वह सिर्फ अँधेरा भोग रहा है? उसने महसूस किया कि उसके पाँव लड़खड़ाने लगे हैं और उसका सारा शरीर काँपने लगा है। वह लज्जा के मारे जमीन में गड़ने लगा, लेकिन यह सोचकर कुछ राहत पाने लगा कि अँधेरे के कारण उसकी लज्जा दूसरे 'मैं' से छिपी हुई है। उसका मुँह खुल नहीं पाया और वह चुपचाप ही खड़ा रहा।

तब दूसरे 'मैं' ने उत्साहित होकर कहा- ''इसमें लज्जा की कोई बात नहीं है, यदि तुम अंधकारपूर्ण मिथ्यात्व को पहचान लो। देखो! मेरी आवाज सुनो और जाग्रति की अँगड़ाई लो। तुम अपने चेतन स्वरूप को भूल गए हो और जड़ तत्त्व को अपना मान बैठे हो, इसी कारण संसार के झूठे सुखों की खोखली पैरवी कर रहे हो। तुम नहीं देख रहे हो कि पदार्थ-मोह से जड़ग्रस्त होकर पापों के पंक में गहराई तक डूब जाने की तुम तैयारी कर रहे हो। सुनो! मैं तुम्हें तुम्हारी विकृति का भान कराता हूँ, जिससे तुम अपने निज सुख तथा जड़ पदार्थों के सुख में भेद कर सको और पापों के क्षेत्र से बाहर निकलकर बहुमुखी शुभता से अपने स्वरूप को उज्ज्वल बना सको।''

पहला 'मैं' स्तब्ध और हतप्रभ था। वह बोला कुछ नहीं, मगर उसने आँखों ही आँखों संकेत दिया कि वह पापों को त्यागकर मिथ्यात्व के अँधेरे से वाकई बाहर निकल जाना चाहता है और सम्यक्त्व का प्रकाश आत्मसात् कर लेने को उत्सुक है। दूसरे 'मैं' ने तब घोर गंभीर वाणी में उद्बोधन दिया- ''मेरे भाई! ये पापपूर्ण क्रियाएँ पाप-कर्मों का बंध कराती हैं और फल, बंध व उदय के चक्र में पाप से पाप बढ़ता जाता है। इस कारण पापों के क्षेत्र को छोड़ो, अठारह पापों से क्रमश: कठिन संघर्ष करो और अपने मूल गुणों को अपनाकर अपना वास्तविक विकास साधो।''

दूसरे 'मैं' का उद्बोधन प्रेरणा के प्रवाह में बहने लगा- ''अपने झूठे सांसारिक सुखों के लोभ में अथवा उनकी प्राप्ति या रखवाली में जब भी तुम्हारी वृत्ति हिंसा की तरफ आगे बढ़े तो तुम अपने आपको रोको, प्रमादवश किसी भी प्राणी के प्राणों को कष्टित बनाने के लिए आगे मत बढ़ो और हिंसा का सामना अपनी अहिंसा वृत्ति से करो। अहिंसा का अस्त्र तब हिंसा को दूर भगा देगा और तुम अन्य प्राणियों के प्रति करुणा, सहानुभूति एवं सहयोगिता से भर उठोगे। जब झूठ किसी भी स्वार्थ या कारण से तुम्हारे मन में उतरने लगे और जीवन पर चढ़ने लगे, तो उसको दूर धक्का दे दो। उस समय सत्य का स्मरण करो और सत्य को अपनी वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों में रमा लो। मृषावाद दूर भाग जाएगा। जब तुम अपनी अनंत इच्छाओं के कुप्रभाव से दूसरों की प्राप्तियों को चुराना या छीनना चाहो, तो अचौर्य की भावना से अभिभूत बन जाओ ओर विचारो कि मुझे किसी भी दूसरे प्राणी को गुलाम नहीं बनाना है, किसी के भव्य हितों को आघात नहीं पहुँचाना है, बल्कि दूसरों की पीड़ाओं को दूर करने के लिए मुझे कार्यरत होना है। तब तुम शोषण या अकार्य नहीं करोगे। जब तुम्हारे सामने सुंदर कामातुर रमणियाँ आएँ और कामभोगों का न्यौता देने लगें, तब तुम फिसलो मत, ब्रह्मचर्य का ध्यान करो और अपने को कुशील सेवन से बचा लो। सब रमणियाँ तुम्हें अपनी माता और बहिनों के समान दिखाई देंगी। जब तुम्हें परिग्रह की मूर्छा सताने लगे और सोने-चाँदी या सत्ता-संपत्ति की विपुलता ललचाने लगे, तो तुम मूर्छा को त्याग दो, अपनी आवश्यकताओं की न्यूनतम मर्यादाएँ बाँध लो और परिग्रह को मिट्टी के ढेले की तरह मान लो, तब मूर्छा और मोह तुम्हारा साथ छोड़ देंगे। तुम निस्पृह बन जाओगे।''

दूसरा 'मैं' कहता जा रहा था और पहला 'मैं' भावाभिभूत बना उस प्रबोधन को तन्मयतापूर्वक सुन रहा था- ''जब तुम्हें क्रोध आए, शांत हो जाओ और उसे बाहर प्रकट मत होने दो, क्षमा के शीतल जल से क्रोध की अग्नि को तत्क्षण बुझा दो। जब मान तुम्हारी गर्दन और तुम्हारे तन को तनाव दे, तो तुम विनम्र बन जाओ और नम्रता से मान को जीत लो। माया जब तुम्हें

प्रपंच रचने की कुटिल सलाह दे, तब तुम उसे ठुकरा दो और अपने हितों को सरलता से सुलझा लो। लोभ को तो तुम पास में भी मत फटकने दो और लोभ के जंजाल में मत पड़ो, अपनी संतोष वृत्ति से इस जंजाल का एक-एक ताना-बाना तोड़ दो। अपने संबंधों या पदार्थों पर जब राग वृत्ति उमड़ने लगे, तो वैराग्य भाव लाकर सोचो कि यह राग मेरा नहीं है, मेरा तो वैराग्य और वीतराग भाव है, जिसकी आराधना से ही मेरे विकास का मार्ग निष्कंटक बन सकेगा। द्वेष को भी तुरंत दबा दो, क्योंकि द्वेष प्रतिशोध के लिए उतारू बनाता है। द्वेष की जगह सब पर अपने स्नेह की छाया तान दो। किसी भी कारण से किसी के भी साथ कलह मत करो, उसके स्थान पर संप और एकता बनाओ। तब सबके स्नेह से तुम आप्लावित हो जाओगे। किसी पर झूठा कलंक मत लगाओ, किसी की चुगली मत करो और किसी की निंदा मत करो। अंदर-बाहर को दोगला मत रखो। एक वृत्ति बना लो, ताकि कपट सहित झूठ बोलना भी छोड़ दो। और सबसे बड़ी बात है कि कुदेव पर श्रद्धा मत करो, कुगुरु के कहने पर मत चलो एवं कुधर्म की प्रवृत्तियाँ मत अपनाओ। देव के गुणों को समझो, परीक्षा करो और सुदेव को अपनी श्रद्धा का केंद्र बनाओ। गुरु के आत्म-विकास को परखो और सुगुरु की आज्ञा में चलो। धर्म के लक्षणों का अध्ययन करो, सुधर्म के सिद्धांतों के मर्म को हृदयंगम करो तथा उसके निर्देशों का पालन करो। इस प्रकार सुदेव, सुगुरु एवं सुधर्म पर श्रद्धा करते हुए मिथ्यात्व के अंधकार से बाहर निकलो तथा सम्यक्त्व के प्रकाश में पग धरो, मेरे भाई!''

इतना कहकर दूसरा 'मैं' चुप हो गया और पहले 'मैं' पर अपने कहने की प्रतिक्रिया देखने लगा। तब तक पहले 'मैं' का कदम आगे उठ चुका था और उसने दूसरे 'मैं' की तरफ चलना शुरू कर दिया था। थोड़ी ही देर में दोनों 'मैं' गले मिल गए और सम्यक्त्व के प्रकाश में एकमेक बन गए।

यह 'मैं' एकीभूत हो गया था, विचारों के द्वंद्व से उबरकर समझ गया था कि मिथ्या श्रद्धा, मिथ्या ज्ञान तथा मिथ्या आचरण मेरा नहीं है। ये तो पर पदार्थों के प्रति मोह के कारण और पाप कार्यों के आचरण के कारण मेरे स्वरूप के साथ लिपट गए थे। अब मैंने अलग हो जाने के लिए कदम बढ़ा लिया है, तो मैं मिथ्यात्व को पूरी तरह त्यागकर सम्यक्त्व के आलोक में आगे बढ़ूँगा।

मेरे मन का एक तथ्य और बता दूँ कि एक ही संघर्ष में मैं मिथ्यात्व पर पूर्ण विजय नहीं पा सका था। बार-बार यह द्वंद्व मेरे भीतर उठता है, किंतु मेरा दूसरा 'मैं' बल पकड़ता जा रहा है, इस कारण पहले 'मैं' के बहक जाने पर वह पुन:-पुन: उसे समझाता है और अपने में मिलाकर साधना के पथ पर प्रगति करता रहता है।

मिथ्यात्व-सम्यक्त्व का ऐसा संघर्ष मेरे भीतर निरंतर चल रहा है, प्रत्येक क्रिया पर चलता है, कभी उग्र होता है, तो कभी मंद, किंतु संतोष का विषय यही है कि मैं प्रबुद्ध हूँ, सदा जाग्रत हूँ।

आंतरिक रूपांतरण का पुरुषार्थ

आत्म-स्वभाव एवं विभाव तथा धर्म एवं नीति संबंधी विस्तृत विवरण को दृष्टिगत रखते हुए मैं सोचता हूँ कि मुझे सबसे पहले अपने पुरुषार्थ को अपने ही आंतरिक रूपांतरण के लिए लगाना चाहिए। क्या होगा यह आंतरिक रूपांतरण? अपने भीतर के रूप को बदलना। जब किसी रूप को बदला है तो यह जानना जरूरी है कि अभी वह रूप कैसा है और उसे बदलकर कैसा बनाना है? यह रूप है आंतरिक रूप मन-मानस की भीतरी विचारणा का रूप अर्थात् सामान्य रूप से सोच-विचार का रूप। जब सोच-विचार के रूप को भली प्रकार जानना चाहूँगा तो उसे बाहर के अपने क्रिया-कलापों से जानना आसान रहेगा।

इस दृष्टि से मुझे सोचना है कि मैं क्या कर रहा हूँ और मुझे क्या करना चाहिए। इस सोच में दो बिंदु हैं - एक तो आंतरिकता का वर्तमान रूप तथा दूसरा है रूपांतरण क्या होना चाहिए।

साभार- नानेशवाणी-2 (आह्वान अपनी चेतना का)

धर्मदेशना

जीवन में स्वस्थ व्यवहार

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

देवाधिदेव चरम तीर्थेश प्रभु महावीर की दिव्य देशना हमारे मंगल का मार्ग प्रशस्त करने वाली है। यदि उसका अनुसरण किया जाए तो वह अंधकार-परिपूर्ण में प्रकाश की एक तमिस्र किरण बनकर व्यक्ति को सन्मार्ग पर आरूढ़ करा सकती है। अज्ञान और मिथ्यात्व की तमिस्र में यदि कोई प्रकाश है, किसी के निर्देश से यदि कोई मार्ग प्राप्त हो सकता है तो वह जिनेश्वर देवों की वाणी ही है। इस वाणी में ज्ञान के अनमोल तत्त्व छिपे हैं। तत्त्व इस प्रकार कि हमारा जीवन कई तत्त्वों से निर्मित है और वह उन सारे तत्त्वों की सम्यक् अवस्थाओं के साथ ही गतिशील बना रहता है। जीवन का व्यवहार स्वस्थ कैसे हो, हम किस प्रकार से जीएँ, यह समझना आज की पहली आवश्यकता है।

जीना तो सदा से हो रहा है। लोग साँसें लेते हैं और क्रियाएँ करते हैं। परंतु क्या यह सही जीना है? जीवन क्या इसीलिए होता है? जीवन का अथवा जीने का कोई ऊँचा उद्देश्य होना चाहिए। ऐसे जीवन का स्वरूप कैसा हो, यह समझ लेना सबसे आवश्यक है। क्योंकि जब तक यह समझकर सम्यक् रीति से जीवन को आगे नहीं बढ़ाया जाएगा, जीवन तथा जीवन की सभी क्रियाएँ घाणी के बैल के जीवन एवं क्रियाओं के समान ही निरर्थक होंगी। कहने को तो घाणी का बैल खूब घूमता है, लगातार चलता है, उसमें गति होती है, परंतु इतनी गति तथा इतना चलने के बाद भी वह जहाँ का तहाँ ही बना रहता है। जीवन की ऐसी ही निरर्थकता को लक्ष्य कर प्रभु ने कहा था –

''जा जा वच्चई रयणी, न सा पडिनियत्तई।''

भाई! जो रात्रियाँ व्यतीत हो रही हैं, तू कितना भी पुरुषार्थ कर वे वापस नहीं आएँगी। कोई अरबपति, खरबपति सोचे करोड़ रुपए दूँ, बीती रात आ जाए। रात को बीता हुआ एक क्षण भी वापस लाने की क्षमता किसी में नहीं है। यही कारण है कि प्रभु महावीर साधकों से कहते हैं – **''समयं गोयम! मा पमायए।''** समय मात्र का प्रमाद मत करो। हम समय का मूल्य नहीं करते। समय कितना बारीक है, सूक्ष्म है, न जाने हमारा कितना समय बर्बाद हो जाता है, हम यह नहीं सोचते। इसीलिए प्रभु ने कहा है –

''अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ।''

अधर्म में व्यतीत रात्रियाँ निष्फल होती हैं। यदि हमने जीवन को नहीं सजाया, कुछ प्राप्त नहीं किया तो हमें विचार करना चाहिए कि हमारा कितना समय धर्म में, कितना अधर्म में व्यतीत हुआ है। धर्म-अधर्म की चर्चा में कभी उलझन भी सामने आती है। हम सोचें कि आज हम धर्म को या धर्म के स्वरूप को किस रूप में समझ पाए हैं? धर्म क्या है? धर्म की बात पर उलझन में मत पड़िए। धर्म सुलझा हुआ तत्त्व है। धर्म में उलझन नहीं है, पर जब हमारी मानसिकता या विचार उलझे हुए होते हैं तो हम धर्म की समझ को भी उलझा देते हैं। इतना उलझा

देते हैं कि धर्म का सही स्वरूप ही खो जाता है। पर धर्म में उलझन है कहाँ? वह सुलझा हुआ है। फिर भी हम धर्म को प्राप्त क्यों नहीं कर पा रहे है? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। एक क्षण के लिए भी कभी धर्म हमारे जीवन में आता है या नहीं? इसका हमने अनुभव किया है या नहीं? अनुभव किया होता तो फिर अधर्म में जाने का मन नहीं होता। आज मन की दौड़ विपरीत दिशा में, भौतिकता की दिशा में हो रही है। धर्म यह भी नहीं है कि धर्मस्थान में आए, संतों के दर्शन किए, प्रवचन सुना तो धर्म हो गया। परंतु यदि वहाँ पहुँचकर भी विचार शुद्ध नहीं हुए तो वह चाहे चर्च हो, मस्जिद हो, मंदिर हो, कहीं भी चले जाएँ धर्म लाभ नहीं होगा। धर्मस्थलों पर कोई धर्म का ढेर नहीं लगा होता कि जाते ही उसमें से धर्म प्राप्त कर लिया जाए। धर्मस्थान इसलिए है कि वहाँ पहुँचकर लोग प्रयत्न करें कि उनके विचार पवित्र बनें, स्वस्थ बनें, यदि कोई उलझन हो तो सुलझे। मन, बुद्धि, विचार, भावना आदि में पैठी समस्याओं को सुलझाने के स्थान होने से ही ये स्थान धर्मस्थान कहे जाते हैं। यथार्थ में धर्म हमारे भीतर है। जीवन में है उसे हम बाहर प्राप्त नहीं कर सकते, न बाहर वह प्राप्त हो सकता है। हाँ, उस धर्म को प्रकट करने के लिए निमित्त की आवश्यकता होती है। निमित्त जब मिल जाता है तब हमारा जीवन दीपक के समान आलोकित हो उठता है। अन्यथा दीपक में तेल भरा हो, बाती हो, किंतु जलती लौ का स्पर्श नहीं मिले तो उसमें प्रकाश विकीर्ण करने की शक्ति होने पर भी उसका प्रकटीकरण कैसे हो? उसे प्रकट करने के लिए जलती लौ का मिलना आवश्यक होता है। लौ का स्पर्श मिले तो भीतर की शक्ति प्रकट हो।

शांतिनाथ भगवान की स्तुति का तात्पर्य यह नहीं कि स्तुति से प्रसन्न होकर शांति का खजाना वे हमारे सुपुर्द कर देंगे। भगवान महावीर या शांतिनाथ भगवान की स्तुति करते हुए कवि ने कहा कि शांति का स्वरूप प्राप्त करना है तो

आगमधर गुरु समकिती, किया संवर सार रे।
संप्रदायी अवंचक सदा, शुचि अनुभव धार रे।

शांति के लिए कहाँ भटक रहा है, कहाँ खोज कर रहा है? वह ऐसे स्थान पर नहीं है। उसके लिए साधन बताए गए हैं और कहा गया है- **'आगमधर गुरु समकिती'** गुरु की आवश्यकता है। मेवाड़ में कहते हैं- **'जिसके गुरु नहीं वह नगुरा है।'** आप उतनी गहराई में नहीं जाते पर समझिए गुरु नहीं, गुरु का सान्निध्य नहीं तो दीपक है, तेल है, बाती है पर लौ का स्पर्श नहीं होगा और जीवन में प्रकाश प्राप्त नहीं होगा। पर गुरु कैसा हो इसका चिंतन भी आवश्यक है। गुरु होना चाहिए आगमधर। आज हम अर्थ लेते हैं- आगम को धारण करने वाला होना चाहिए। बड़े रूप में कह दें- जिसने सभी आगमों का अध्ययन कर लिया हो ऐसा। पर यहाँ कवि का दूसरा ही भाव है, इतना ओछा भाव नहीं रखते। आज तो कंप्यूटर में और जगह-जगह लाइब्रेरियों में हजारों पुस्तकें एकत्र कर ली जाती हैं। एक कंप्यूटर में यदि लाइब्रेरी के सारे आगम भर दिए जाएँ तो क्या वह आगमधर हो जाएगा? टेप की भाँति कंठस्थ कर लिया तो इतने से भी कुछ प्राप्त होना नहीं है। यदि ऐसी व्याख्या करेंगे तो अभवी भी आगमधर हो जाएगा, क्योंकि वह भी आठ पूर्व से ऊपर का ज्ञान कर लेता है। आगमधर की व्याख्या है- **'आ समन्तात् गम्यते इति आगमः'** अर्थात् जिसने ज्ञान को चारों ओर से आत्मा के निकट कर लिया, चारों ओर से ज्ञान का प्रकटीकरण कर लिया, उसे जो धारण करने वाला है वह है- **'आगमधर'**। साथ में कहा गया है- **'समकिती'** अर्थात् सम्यक्त्व वाला होना चाहिए, उसका दीप जला हुआ होना चाहिए। स्वयं का दीप जला नहीं है, अज्ञान की तमिस्रा है तो वह अवस्था भी दूसरे को प्रकाश देने वाली नहीं होगी। **'किरिया संवर सार रे....।'** स्तुति का एक-एक पद महत्त्वपूर्ण है। बोलचाल में कहते हैं- **'पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के'**। क्या जानते हो गुरु के बारे में? गुरु-गुरु कहते रहे, गुरु ने कान में मंत्र फूँक दिया- **'कानिया मानिया कुर, तू चेला में गुर'**। क्या यही गुरु की पहचान है?

क्या इतने से ही कोई गुरु और कोई चेला बन

जाता है? कवि ने आगे की पंक्ति में कहा है- **'संप्रदायी अवंचक सदा, शुचि अनुभव धार रे'**। इसकी व्याख्या के साथ गुरु के स्वरूप को जानें और देखें कि हमारे आदर्श गुरु कौन होने चाहिए? हम जब साधना में आगे बढ़ते हैं, तब हमारे सामने एक आदर्श, एक दर्पण होना चाहिए। आप जब काँच में देखते हैं तब उसमें जो कुछ देखें वह दृश्य प्रकट होता है। इस प्रकार दर्पण तो ऊपरी छवि को दिखाता है, पर जब भावात्मक दृष्टि से विचार करें तो भावों को देखने के लिए भाव रूप दर्पण की आवश्यकता होगी। भावों में शुद्धता है, इसका सम्यक् परीक्षण करने के लिए भाव दर्पण होता है। उसके माध्यम से ही शुद्धता-अशुद्धता की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। सामायिक लेने से पूर्व लोगस्स का पाठ बोलते हैं, यह परंपरा है। पर क्यों है? इस पर भी विचार करना चाहिए।

सामायिक क्या है? सामायिक है - समभाव की आराधना, धर्म में प्रवेश, जीवन में प्रवेश। वह मंगलकारी हो इसलिए उसके पहले आदर्श को जीवन के सामने रखते हैं। 24 तीर्थंकर हमारे आदर्श हैं। उन्हें सामने रखकर हम प्रवेश करते हैं। कहीं रुकावट होती है तो उसका निराकरण उनके माध्यम से करते हैं। वे आदर्श के रूप में हमारे सामने होते हैं तो उस माध्यम से जीवन के शुद्धिकरण का मार्गदर्शन तथा प्रेरणा प्राप्त होती है। इसलिए 24 तीर्थंकर के आदर्श के साथ ही हम गुरु का आदर्श भी स्वीकार करते हैं। तीर्थंकर जब दीक्षा लेते हैं, उस समय वे तीन ज्ञान के धारक होते हैं। पर वे यह नहीं सोचते हैं कि मैं तीन ज्ञान से संपन्न हूँ, बहुत कुछ जान रहा हूँ। नहीं, वे साधना में प्रवेश के लिए आदर्श उपस्थित करते हैं। **'नमो सिद्धाणं'** पाठ द्वारा वे साधना में प्रविष्ट होते हैं क्योंकि उन्हें सिद्ध बनना होता है। जब वे अरिहंत पद पर आते हैं तो जनता को बोध देते हैं, इसलिए उन्हें नमस्कार किया जाता है। जिन्हें हमने देव के रूप में स्वीकार किया वे अरिहंत तो देव हैं, पर वे गुरु हैं या नहीं, वे सुसाधु हैं या नहीं? शास्त्रों में जगह-जगह पर उल्लेख प्राप्त होते हैं कि गणधर गौतम स्वामी भगवान महावीर स्वामी के लिए **'धर्मगुरु धर्माचार्य'** शब्द का प्रयोग करते हैं। भगवान महावीर तीर्थंकर थे, पर धर्मगुरु भी थे। कहा गया है -

'सिद्धाणं णमो किच्चा, संजयाण य भावओ'

सिद्धों को नमस्कार करके संयतियों को भावपूर्वक नमन करता हूँ। संयति कौन हैं - अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय, साधु। संयति का तात्पर्य है - जिन्होंने जीवन संयमित कर लिया है। वे संयति पद पर आ गए। अरिहंत उस सीढ़ी पर हैं, जो देव और गुरु दोनों का पार्ट अदा करते हैं। वे कैवल्य ज्योति से आलोकित हैं इसलिए वे देव हैं। दूसरों को आलोकित करने में तत्पर हैं, इस कर्तव्य का निर्वाह करने से वे गुरु हैं। गुरु मानकर ही उन्हें पहले नमस्कार किया है, क्योंकि उन्होंने ही ज्ञान मार्ग का स्वरूप बताया। इसीलिए उनका आदर्श हमारे सामने आता है कि गुरु कैसा होना चाहिए? कवि आनंदघन जी कह रहे हैं- **'किरिया संवर सार रे'** अर्थात् उनकी क्रिया में संवर होना चाहिए। संवर का अर्थ भी समझ लेना आवश्यक है। संवर अर्थात् जिनकी क्रिया में आस्रव का स्रोत जुड़ा न हो। मोटे तौर पर बहुत से भाई यह जानते हैं। अभवी आत्मा, साधु जीवन की आराधना कई बार कर लेता है, पोशाक ग्रहण कर लेने मात्र से उसकी क्रिया संवर नहीं हो जाती। **'जे आसवा ते परिसवा।'**

एक व्यक्ति सिनेमा हॉल में धर्म क्रिया कर सकता है तो स्थानक में भी आस्रव कर सकता है। कभी-कभी हम धर्मस्थान में भी आस्रव कर लेते हैं। संवर भी हमारे भावों में है। हमारी प्रत्येक क्रिया संयम से ओत-प्रोत हो उसके साथ ही गुरु परंपरा जो प्राप्त है उसका भी अवंचक हो। *यदि कोई गुरु संप्रदाय के नाम से ठगाई करता है तो वह गुरु नहीं है। गुरुगम ज्ञान दुनिया को ठगने या रिझाने के लिए नहीं है। यदि वह ठग रहा है तो वह गुरु नहीं है।*

कवि ने गुरु के संबंध में आगे कहा है - **'शुचि अनुभव धार रे'** अर्थात् जिसकी सारी सोच शुचि अर्थात् अनुभव से गुजरी हो। अनुभव से गुजरे हुए ज्ञान में जो जी रहा है वही गुरु पद का अधिकारी हो सकता है,

उसे ही गुरु कह सकते हैं। वही मार्गदाता हो सकता है और वही हमारे बुझे दीप को जलाने में, ज्ञान को उर्वरित करने में सक्षम है। गुरु के अनेक लक्षण एवं क्षमताएँ बताई गई हैं, परंतु सभी की विवेचना संभव नहीं है। इसके लिए व्यक्ति को अपने विवेक, अनुभव और ज्ञान का सहारा लेना चाहिए। परंतु एक बात निश्चित कर लें कि यदि धर्म में प्रवेश करना है, दीप जलाना है तो गुरु के माध्यम से ही प्रवेश करें। उस आदर्श को सामने रखें, फिर जो शक्ति हम में प्रकट होगी वह जीवन के सभी तनावों, हलचलों आदि को दूर करेगी। जीवन शांत-प्रशांत बनेगा और अपने लक्ष्य की ओर गतिवान बनेगा। गुरु की इतनी महिमा होने के कारण ही श्री आचारांग सूत्र (1-5-4) में एक चर्या का निषेध करके गुरु-निश्रित रहने का उपदेश दिया गया है। आचार्य की आराधना किस प्रकार करनी चाहिए तथा सद्गुरु की सेवा, भक्ति और सत्संग कब और कैसे फलित होती है, इसकी विवेचना भी सूत्रकार ने की है। गुरु के दृष्टिकोण और अभिप्राय को समझकर जो साधक गुरु की आज्ञा का पालन करता है, वह इष्ट फल प्राप्त कर सकता है। परंतु ऐसा वही कर सकता है जिसकी गुरु में पूर्ण आस्था हो। शास्त्रों में यह भी स्पष्ट कथन है कि जितने अंश में गुरुदेव पर श्रद्धा होगी उतने ही अंश में गुरु का संग और गुरु प्रदत्त ज्ञान फलीभूत होगा।

कवि ने '**आगमधर**' गुरु को बात कही है, परंतु बात इतनी ही नहीं है। श्री आचारांग सूत्र में गुरु अथवा आचार्य अथवा महर्षि के गुणों की विस्तृत विवेचना की गई है। श्री आचारांग सूत्र के प्रथम उद्देशक के लोकसार नामक पंचम अध्ययन के प्रारंभ में ही आचार्य की जलाशय से तुलना की गई है। जैसे किसी समतल भूभाग पर निर्मल जल से भरा हुआ सरोवर होता है, जो प्राणियों की रक्षा करता है। उसी प्रकार आचार्यादि महर्षि ज्ञान रूपी जल से भरे हुए होते हैं तथा निर्दोष क्षेत्रों में रहकर कषायादि को उपशांत करके जीवों की रक्षा करते हुए ज्ञानरूपी प्रवाह को बहाते हैं। जिस प्रकार सरोवर में कमल शोभा देते हैं, उसी तरह आचार्य में पाँच प्रकार का आचार, आठ प्रकार की संपदा और छत्तीस गुण शोभा देते हैं। जिस प्रकार सरोवर स्वयं पवित्र होता है और दूसरों को भी पवित्र करता है, उसी प्रकार आचार्य स्वयं तो दोष रहित होते ही हैं, अपने संपर्क से अपवित्र आत्माओं को भी पवित्र बनाते हैं। आचार्य के लिए '**सोयमज्झगए**' विशेषण का प्रयोग किया गया है। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार सरोवर में जल आता है और निकलता रहता है, उसी प्रकार आचार्य श्रुत (आगम) ज्ञान का आदान-प्रदान करते रहते हैं।

गुरु और सरोवर के इस रूपक को बहुत लंबा खींचा जा सकता है, परंतु उसकी आवश्यकता नहीं है। इस तुलना का आशय केवल इतना ही है कि साधक अथवा शिष्य इनका लक्ष्य सामने रखकर अपने जीवन का विकास करे। '**सम्ममेयंति पासह**' कहकर ये भी सूचित किया गया है कि अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग कर प्रत्येक कार्य का अवलोकन भी करना चाहिए। श्रद्धा रखनी चाहिए, परंतु वह श्रद्धा अंध न हो। इस श्रद्धा में अपनी विवेक बुद्धि, आगम के वचन और सत्पुरुषों के अनुभवों का समन्वय होना चाहिए। गुरु और शिष्य, आचार्य और साधक का संबंध इस प्रकार एक माध्यम से नहीं, अनेक माध्यमों से जुड़ता है। परंतु मुख्य बात जीवन में स्वस्थ व्यवहार की है। यह आवश्यक है कि हमारा जीवन जिन तत्त्वों से निर्मित है उन सभी की सम्यक् अवस्थाओं के साथ जीवन में गतिशील बना रहना चाहिए। इस कार्य में समय मात्र का प्रमाद नहीं करना चाहिए। यदि जीवन की सीमित अवधि अधर्म अथवा असंयत व्यवहार में व्यतीत हो गई तो पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रह जाएगा और दुर्लभ जीवन नष्ट हो जाएगा। इसलिए अज्ञान और मिथ्यात्व की तमिस्रा में जिनेश्वर देवों की दिव्य वाणी से मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने इस भव को सार्थक करें।

साभार- श्री राम उवाच-4

(दो कदम सूर्योदय की ओर)

ज्ञान सार

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् **'मधुर वचन'** प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

आप उग्र कषायी हैं या मंद कषायी

	उग्र कषायी	मंद कषायी
1	कोई दूसरा कह दे, तो गलती स्वीकार नहीं करते।	गलती स्वीकार कर लेते हैं।
2	जो खुद को सही लगे, उसी को सही मानते हैं। चाहे वो गलत ही क्यों न हो।	सही क्या है? यह जानने-समझने की सदैव इच्छा रखते हैं।
3	थोड़ा-सा कोई कुछ कह दे, तो सफाई देना शुरू कर देते हैं।	ज्यादा सफाई नहीं देते, आवश्यक हो तो थोड़ा बोलकर मौन हो जाते हैं।
4	दूसरों को अथवा परिस्थिति को दोष देते हैं।	मेरी गलती कहाँ थी, यह ढूँढ़ते हैं।
5	छोटी-छोटी बात में झुंझलाते हैं, नाक-मुँह बिगाड़ते हैं, क्रोध की आग में जलते रहते हैं।	प्रसन्न रहते हैं, शांत रहते हैं, छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं देते।
6	सालों पुरानी बातों को मन में पकड़कर रखते हैं।	निरर्थक बातों को कचरा समझकर अपने दिमाग में जगह नहीं देते, साफ-सुथरा रहते हैं।
7	मतलब हो तो बहुत मीठा बोलते हैं।	सबसे मधुर बोलते हैं।
8	बोलचाल बंद कर दी, तो पुनः चालू नहीं करते।	किसी से बोलचाल बंद नहीं करते।
9	झगड़ा करने में माहिर होते हैं।	झगड़े से डरते हैं (दूर ही रहते हैं)।
10	अपना बुरा करने वाले का हरगिज भला नहीं करते।	जो भी जरूरतमंद हो, उसके सहयोग के लिए तैयार रहते हैं।
11	अपने पापों को छुपा-छुपाकर रखते हैं।	अपने पापों को खोज-खोजकर निकालते हैं और उसकी आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त करते हैं।

12 अपनी गलती को छोटा करके कहते हैं, दूसरों की गलती को बड़ा करके कहते हैं।	अपनी जो गलती है, वो बताते हैं। दूसरों की गलती बताना आवश्यक हो जाए तो सहज भाव से उसका कथन करते हैं।
13 बड़ों का भी तिरस्कार कर देते हैं। उनकी हँसी उड़ाते हैं।	किसी का भी तिरस्कार नहीं करते व किसी की भी हँसी नहीं उड़ाते।

आप दोनों में से कौनसे हैं - ____________

आगे के लिए क्या लक्ष्य है - ____________

"हम सद्गुणों की प्राप्ति चाहते हैं, पर वैसी भूमि हमारे पास है या नहीं? उबड़-खाबड़ भूमि में फसल नहीं आएगी। जब तक हमारी भूमि कषाय से लिप्त रहेगी, तब तक उसमें फसल नहीं लगेगी।" (आचार्य श्री रामेश)

मुख्य बातें

वचन व्यवहार को श्रेष्ठ बनाने के लिए कुछ और मुख्य बिंदु हैं, जिनका ध्यान रखना भी आवश्यक है।

(i) मन के भाव (Feelings) :

यह वचन व्यवहार का मूल है। मूल सही, तो सब सही। क्योंकि जैसे भाव होते हैं, वैसे ही शब्द निकलते हैं। किसी के प्रति मन में द्वेष है, तो बहुत मुश्किल है कि हम अच्छा बोल पाएँ। यदि हम बनावटी रूप से अच्छा बोल भी लें, तो भी वह वचन असत्य की श्रेणी में ही होंगे। अत: वचन को अच्छा बनाने के लिए पहले मन को अच्छा बनाना आवश्यक है। लोगों के प्रति मन में अच्छे भाव लाने के लिए उनकी दशा को समझना आवश्यक है।

(ii) शारीरिक हावभाव (Body Language) :

- कम्युनिकेशन स्पेशलिस्ट के अनुसार हमारे द्वारा बोले जाने वाले शब्दों के माध्यम से केवल 10% संप्रेषण होता है, 30% संप्रेषण हमारी ध्वनि के माध्यम से होता है और 60% संप्रेषण हमारी बॉडी लैंग्वेज के माध्यम से होता है।
- हमारे हावभाव को देखकर व्यक्ति को तुरंत पता लग जाता है कि उसके साथ अच्छा (+) व्यवहार हो रहा है या बुरा (–)।
- चेहरा बिगाड़कर, मस्तक पर सल डालकर, आँखें निकालकर, हाथ उठाकर, फायदे की बात भी कही जाए, तो उसका बहुत खराब असर होता है। चेहरा देखकर व्यक्ति पहले ही नाराज हो जाता है। नाराज होने के बाद कोई हमारी बात से सहमत हो जाए, इसकी संभावना ही कम है।
- अत: बातचीत करते समय हमारे हावभाव का पॉजिटिव (श्रेष्ठ) रहना आवश्यक है।
- यह भी हमारे भाव पर ही निर्भर करता है। मन में प्रसन्नता हो, सहजता हो, सरलता हो तो हावभाव अपने आप अच्छे ही होंगे।

(iii) मूड (Mood) :

- बात करने से पहले मूड (Mood) को भी चेक कर लेना चाहिए। हमारा Mood खराब हुआ तो हम अच्छे से कह नहीं पाएँगे। हो सकता है, हम कुछ उलटा ही कह दें और सामने वाले का Mood खराब हो तो वह अच्छे से सुन नहीं पाएगा। हो सकता है, वह भड़क जाए।

- ✶ मानसिक प्रसन्नता का भी बहुत बड़ा महत्व है। प्रसन्न व्यक्ति एकाग्र होकर बात सुन सकता है, समस्या का समाधान कर सकता है। दु:खी व्यक्ति तो समाधान को भी समस्या बना सकता है। अत: जब किसी का मूड खराब हो, तब सोच-समझकर ही बोलें।
- ✶ बातचीत के समय 4 Conditions हो सकती हैं –

  (A) हमारा मूड अच्छा, दूसरे का खराब
  (B) दूसरे का मूड अच्छा, हमारा खराब
  (C) दूसरे का मूड खराब, हमारा भी खराब
  (D) दूसरे का भी अच्छा, हमारा भी अच्छा
- ✶ पहली 3 कंडीशंस में मौन रहना ही ठीक है, बोलना पड़े तो एक-दूसरे के अनुकूल बात करना ही उचित है। क्योंकि मानसिक सामर्थ्य कम होने से व्यक्ति में गंभीर विषयों को झेलने की ताकत नहीं होती।
- ✶ 4^{th} कंडीशन में गंभीर विषय पर चर्चा की जा सकती है। परंतु तरीका तो (+) पॉजिटिव ही होना चाहिए, वरना कंडीशन 4, कंडीशन 1,2,3 में बदल सकती है।
- ✶ मूड चेक (Check) करने के लिए सामने वाले व्यक्ति के हावभाव बिगड़ते ही बात को पॉजिटिव दिशा में मोड़ दें या छोड़ दें।

(iv) अवसर :

व्यवहारकुशल व्यक्ति के लिए अवसर का ज्ञाता होना भी आवश्यक है। कब क्या बोलना और कब क्या नहीं बोलना, इसका ध्यान नहीं रखने पर बहुत-सी समस्या खड़ी हो जाती है। जैसे –

(A) जहाँ सभी धर्म के लोग बैठे हैं, वहाँ किसी भी धर्म पर टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए, इससे झगड़ा हो सकता है।

(B) 4 लोगों के सामने किसी व्यक्ति की मुँह पर आलोचना नहीं करनी चाहिए। इससे वह विशेष रूप से अपमानित महसूस करता है, ऐसी बात अकेले में होनी चाहिए।

(C) समुदाय के बीच कानाफूसी करना बहुत अव्यावहारिक लगता है। लोग इसे अच्छा नहीं समझते।

(D) समुदाय (लोगों) के बीच ऊँची आवाज में बड़बड़ाना बहुत ही अभद्र व्यवहार है। इससे माहौल तो खराब होता ही है, साथ ही छवि भी हमेशा के लिए खराब हो जाती है।

(E) जिसमें सहनशीलता कम है और क्रोध ज्यादा, उस व्यक्ति को किसी बाहर वाले के सामने कोई ऐसी बात न कहें, जो उसे पसंद न हो। वरना वह लोगों के सामने ही बहस कर लेगा।

(F) किसी का बहुत खराब समय चल रहा हो अथवा कोई खुशी के माहौल में, घर पर मेहमानों की भीड़ हो, उस समय कर्जा चुकता करने के लिए दबाव नहीं देना, वह बहुत परेशान हो जाएगा।

(G) कोई अपने प्रति गलत धारणा रखता हो। यदि उसने कोई सहयोग मांग लिया, तो मना नहीं करना। उसका द्वेष और पक्का हो जाएगा। ऐसे समय में सहयोगी बन गए, तो द्वेष मिट भी सकता है।

(H) बच्चा रिजल्ट लेकर आया है। उस समय कोई शिकायत नहीं करना, कोई शिक्षा नहीं देना सहज रहना। वह शिक्षा देने का उचित समय नहीं है।

(I) किसी से कितना भी प्रेमभाव हो, पर उसे कभी भी ये नहीं बताना कि अमुक व्यक्ति आपके बारे में ये बुराई कर रहा था। इससे बहुत राग-द्वेष होता है। ऐसी बातें पचा लेना उचित है।

(J) इस बात का ध्यान रखना भी आवश्यक है कि सामने वाले के पास समय की अनुकूलता है या नहीं? कई बार हम कहते ही गलत समय में है और जब हमारी बात Neglect कर दी जाती है, तब हम नाराज हो जाते हैं।

हम यह नहीं समझ पाते कि सामने वाला किसी अन्य काम में व्यस्त होगा या उस समय उसके आराम करने का समय होगा। हम तो बिना उसकी अनुकूलता पूछे चालू हो जाते हैं।

सही तरीका – हमें सामने वाले से पूछ लेना चाहिए – 'मुझे जरूरी बात करनी है, आपकी अनुकूलता है?' अथवा 'आपको कब अनुकूलता रहेगी?'

(K) जिस समय किसी को गुस्सा आया हुआ हो, किसी के दिमाग में गलत धारणा बैठी हुई हो, उस समय उसे समझाना उचित नहीं है। वह और भड़क सकता है।

गोशालक का वर्णन

भगवान महावीर ने अपने शिष्यों को चेतावनी दी थी कि वे गोशालक के साथ उसके धर्म मत के प्रतिकूल कोई भी चर्चा न करें तथा धर्म के संबंध में कोई तिरस्कार न करें। क्योंकि गोशालक ने श्रमण निर्ग्रंथों के प्रति विशेष रूप से मिथ्याभाव धारण कर लिया है, यानी गलत धारणा बना ली है, अत: वह समझेगा नहीं।

परंतु जब गोशालक ने भगवान को उलटे-सीधे वचन कहे, तब सर्वानुभूति अणगार से रहा नहीं गया और वे गोशालक को समझाने लगे – ''भगवान ने तुम्हें दीक्षित किया.... भगवान ने तुम्हें साधना सिखाई.... भगवान ने तुम्हें तेजोलेश्या विषयक शिक्षा दी.... भगवान ने तुम्हें बहुश्रुत बनाया, फिर भी तुम भगवान के प्रति (मिथ्यापन) गलत व्यवहार कर रहे हो। हे गोशालक! तुम ऐसा मत करो, ऐसा उचित नहीं है।''

सर्वानुभूति अणगार ने सत्य ही कहा था पर गोशालक की मति विपरीत थी, अत: वह उसे समझाने का सही समय नहीं था। उसका क्रोध और तीव्र हो गया और उसने तेजोलेश्या छोड़कर सर्वानुभूति अणगार को भस्म कर दिया।

(विस्तार से जानने के लिए देखें – श्रीमद् भगवती सूत्र, 15वाँ शतक)

''इस प्रकार अवसर देखकर ही कुछ बोलना उचित है, वरना मौन रहना श्रेष्ठ है।''

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम व्यक्तित्व : • व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर • हमारा व्यक्तित्व कैसा हो • दिखावे का चक्रव्यूह'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 मार्च 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 33. परंपर सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तर जिनको सिद्ध हुए दो, तीन यावत् अनंत समय हो गए, वे परंपर सिद्ध हैं।

प्रश्न 34. अपढम समय सिद्ध, द्वितीय समय सिद्ध आदि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर 1) सिद्धत्व प्राप्ति का प्रथम समय विग्रहगति में होता है इसलिए विग्रहगति वाले सिद्ध प्रथम समय सिद्ध होते हैं।

2) सिद्धि गति में पहुँचने का प्रथम समय, किंतु सिद्धत्व प्राप्ति के दूसरे समय वाला जीव अपढम सिद्ध कहलाता है। सिद्धत्व प्राप्ति के तीसरे समय वाला जीव परंपर सिद्ध के द्वितीय समय वाला होता है।

3) परंपर सिद्ध के प्रथम समय को अपढम समय सिद्ध कहते हैं।

इसी प्रकार शेष समयवर्ती परंपर सिद्धों का उपयोगपूर्वक कथन करें।

प्रश्न 35. संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना 5 प्रकार की है - 1) एकेंद्रिय, 2) द्वींद्रिय, 3) त्रींद्रिय, 4) चतुरिंद्रिय और 5) पंचेंद्रिय संसार-समापन्न जीव प्रज्ञापना।

ध्यातव्य बिंदु - संसार समापन्नता स्वयं की उच्चकोटि की ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना से ही मिटाई जा सकती है।

एकेंद्रिय जीवों की प्रज्ञापना - पद 1

प्रश्न 36. एकेंद्रिय संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर यह 5 प्रकार की है। यथा- 1) पृथ्वीकायिक, 2) अप्कायिक, 3) तेजस्कायिक, 4) वायुकायिक और 5) वनस्पतिकायिक।

प्रश्न 37. एकेंद्रिय जीवों के कथन का यह क्रम क्यों है?

उत्तर श्री नंदीसूत्र की चूर्णि के अनुसार, सबसे कम चेतना पृथ्वीकायिक जीवों में होती है तथा क्रमशः विकसित होती हुई सबसे अधिक चेतना वनस्पतिकायिक में होती है - इस अपेक्षा से यह क्रम है।

प्रश्न 38. पृथ्वीकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर पृथ्वीकायिक जीव 2 प्रकार के हैं। यथा - सूक्ष्म और बादर पृथ्वीकायिक।

प्रश्न 39. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव 2 प्रकार के हैं – पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसी प्रकार शेष सूक्ष्म एकेंद्रिय जीव का भी कहना चाहिए।

नोट – सूक्ष्म जीव समग्र लोक में ऐसे भरे हुए हैं जैसे किसी पेटी में सुगंधित पदार्थ डाल देने पर उसकी महक पेटी में सर्वत्र व्याप्त हो जाती है। सूक्ष्म जीव चक्षुरिंद्रिय से दिखाई नहीं देते हैं, किंतु तीर्थंकर भगवान के वचनों द्वारा ही जाने जाते हैं।

प्रश्न 40. बादर पृथ्वीकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर बादर पृथ्वीकायिक जीव 2 प्रकार के हैं – श्लक्ष्ण (चिकने) और खर बादर पृथ्वीकायिक।

प्रश्न 41. श्लक्ष्ण पृथ्वीकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर श्लक्ष्ण पृथ्वीकायिक जीव 7 प्रकार के हैं। यथा – 1-5) पाँच वर्ण की मिट्टी, 6) पांडु मिट्टी-मटमैले रंग की मिट्टी और 7) पनक मिट्टी (काई के समान हरे रंग की मिट्टी)।

प्रश्न 42. खर पृथ्वीकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर इस शास्त्र में खर पृथ्वीकायिक जीव 40 प्रकार के कहे गए हैं – 1) पृथ्वी, 2) शर्करा (कंकर), 3) बालू रेत, 4) पाषाण-पत्थर, 5) चट्टान, 6) लवण, 7) ऊषर-बंजर भूमि, 8) लोहा, 9) ताँबा, 10) रांगा, 11) सीसा, 12) चाँदी, 13) सोना, 14) हीरा, 15) हड़ताल, 16) हींगलू यावत् अनेक प्रकार की मणियाँ-गोमेद रत्न, रूचकरत्न, अंकरत्न, स्फटिकरत्न, यावत् 40) सूर्यकांतमणि। इनके अतिरिक्त भी अनेक प्रकार के बादर पृथ्वीकायिक जीव हैं। (सभी नाम आगम में देखें)

प्रश्न 43. पूर्वोक्त बादर पृथ्वीकायिक जीव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर पूर्वोक्त बादर पृथ्वीकायिक जीव 2 प्रकार के हैं। यथा- पर्याप्तक और अपर्याप्तक।

प्रश्न 44. प्रत्येक भव में जीव अपर्याप्त होकर फिर पर्याप्त होता है तो पर्याप्त का कथन पहले क्यों किया गया है?

उत्तर पर्याप्त नाम कर्म शुभप्रकृति है, अत: संभावना है कि शुभ का कथन पहले किया गया है।

प्रश्न 45. पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर आहार, शरीर आदि के पुद्गलों को ग्रहण करने और उसे रस, शरीर आदि रूप में परिणमाने के आत्म-सामर्थ्य को पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 46. पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक जीवों के विषय में आगम में क्या कहा गया है?

उत्तर वर्ण, गंध, रस, स्पर्श की अपेक्षा से प्रत्येक के हजारों भेद हैं। संख्येय लाख योनि प्रमुख है तथा पर्याप्त की नेश्राय में ही अपर्याप्त नाम कर्म वाले उत्पन्न होते हैं। जहाँ एक पर्याप्त जीव होता है, वहाँ नियमा असंख्येय अपर्याप्त जीव होते हैं। जैसे- घड़े पर फूलन आए तो पहले पर्याप्त नाम कर्म वाले जीव उत्पन्न होते हैं, फिर अपर्याप्त नाम कर्म वाले जीव उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 47. बादर अप्कायिक जीव किस प्रकार के हैं?

उत्तर बादर अप्कायिक जीव अनेक प्रकार के हैं। यथा- ओस, बर्फ, कोहरा, ओले, बादलों से उत्पन्न होने वाला पानी, नदी आदि का शीतल जल, झरनों का उष्ण जल, खारा पानी, खट्टा पानी, इक्षु रस जैसा मीठा पानी, मदिरा के स्वाद जैसा पानी आदि अनेक प्रकार के अप्कायिक जीव हैं।

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-क्रमश:

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

एकादश अध्ययन : बहुस्सुयपुज्जं

15-16 मार्च 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

श्रुत को धारण करने वाले बहुश्रुत मुनि की तेजस्विता एवं श्रेष्ठता को व्यक्त करने के लिए शंख एवं अश्व की उपमा का कथन किया गया है।

भगवान महावीर स्वामी बहुश्रुत मुनि की विशेषताओं को बलिष्ठ हाथी, वृषभ, चक्रवर्ती, देवराज इंद्र एवं सूर्य की उपमा से उपमित करते हुए इस प्रकार फरमाते हैं -

जहा करेणु-परिकिन्ने, कुंजरे सट्ठिहायणे।
बलवंते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए।।18।।

भावार्थ – जिस प्रकार हथिनियों से घिरा हुआ साठ वर्ष का बलिष्ठ हाथी किसी से पराजित नहीं होता है वैसे ही बहुश्रुत भी होते हैं।

कुंजरे सट्ठिहायणे – साठ वर्ष का हाथी।

इसका भाव इस प्रकार है – साठ वर्ष की आयु तक हाथी का बल प्रतिवर्ष उत्तरोतर बढ़ता जाता है। उसके पश्चात् कम होने लगता है। यहाँ हाथी की पूर्ण बलवता बताने के लिए साठ वर्ष का उल्लेख किया गया है। साठ वर्ष की अवस्था का बलवान हाथी दूसरे हाथियों से पराभूत नहीं हो सकता है। इसी प्रकार द्वादशांगी रूपी श्रुतज्ञान से ओत-प्रोत एवं परिपक्व बुद्धि वाले बहुश्रुत मुनि अन्यतीर्थिकों के संशय को दूर करने में समर्थ तथा नय एवं प्रमाणों से बलवान होते हैं, जिससे वे किसी से भी पराभूत नहीं होते हैं।

जहा से तिक्खसिंगे, जायक्खंधे विरायई।
वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए।।19।।

भावार्थ – जिस प्रकार तीखे सिंगों वाला एवं बलिष्ठ कंधों वाला वृषभ-बैल अपने यूथ (समुदाय-झुंड) के अधिपति के रूप में सुशोभित होता है, वैसे ही बहुश्रुत अपने गच्छ में सुशोभित होते हैं।

जायक्खंधे – पुष्ट-स्कंध - जिसका कंधा पुष्ट होता है, उसके दूसरे अंगोपांग पुष्ट ही होते हैं।

इसका भाव इस प्रकार है – बलिष्ठ वृषभ अपने यूथ में अधिपति होता है। इसी प्रकार ज्ञान व क्रियाओं से युक्त बहुश्रुत अपने गच्छ आदि के कार्य की धुरा को धारण करने में समर्थ होते हैं तथा वे चतुर्विध संघ रूपी यूथ के दायित्व का भली-भाँति निर्वाह करते हैं तथा सदा शोभित होते हैं।

जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी महिड्ढिए।
चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए।।22।।

भावार्थ – जिस प्रकार चारों दिशाओं में राज्य करने वाले महान ऋद्धिमान चक्रवर्ती चौदह रत्नों के स्वामी होते हैं, वैसे ही बहुश्रुत भी होते हैं।

चाउरंते – चतुरंत - भारत क्षेत्र की उत्तर दिशा में हिमवान पर्वत और शेष तीन दिशाओं में समुद्र है।

चक्कवट्टी – 6 खंड के अधिपति 'चक्रवर्ती' कहलाते हैं।

चोद्दसरयणाहिवई – चक्रवर्ती के 14 रत्न इस प्रकार हैं –

1. सेनापति	2. गाथापति	3. पुरोहित	4. गज	5. अश्व	6. बढ़ई	7. स्त्री
8. चक्र	9. छत्र	10. चर्म	11. मणि	12. कांकिणी	13. खड़ग	14. दंड

इसका भाव इस प्रकार है – चक्रवर्ती ऋद्धिसंपन्न होते हैं। चक्रवर्ती चारों दिशाओं के अंत तक राज्य करने वाले तथा 14 रत्नों के स्वामी होते हैं। इसी प्रकार बहुश्रुत की कीर्ति चारों दिशाओं में अंत तक व्याप्त होती है। बहुश्रुत अनेक विभूतियों से संपन्न होते हैं तथा पूर्वों के ज्ञान के स्वामी होते हैं। इसलिए बहुश्रुत भी चक्रवर्ती जैसे ही शोभित होते हैं।

जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए।।23।।

भावार्थ – जिस प्रकार हजार नेत्रों वाले शकेंद्र (देव) शत्रुओं के नगरों को विध्वंस करने वाले एवं वज्र नामक आयुध को धारण करने वाले होते हैं, इसी के कारण देवों के अधिपति माने जाते हैं। इसी तरह बहुश्रुत भी होते हैं।

सहस्सक्खे – हजार नेत्र वाले।

इसका भाव इस प्रकार है – इंद्र के 500 देव मंत्री होते हैं। देव मंत्री की आँखों से देखकर इंद्र अपनी नीति निर्धारित करते हैं। इसके अतिरिक्त मंत्रियों की हजार आँखों से भी अधिक इंद्र अपनी दो आँखों से देख लेते हैं, इसलिए वे सहस्राक्ष कहलाते हैं। इसी प्रकार बहुश्रुत भी विशिष्ट श्रुतज्ञान के प्रभाव से सहस्र नेत्रों वाले होते हैं। इसके अतिरिक्त शरीर को तपस्या आदि द्वारा कृश करने वाले और उत्कृष्ट क्रियाओं की आराधना में दिव्य शक्तियों से युक्त होने से शकेंद्र से उपमित किए गए हैं।

-क्रमशः

काका जी का कुचक्र

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 मार्च 2024 अंक से आगे....

संसार में लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि 'हारा हुआ जुआरी दोगुना दाँव लगाता है।' आनंद कुमारी जी के काका जी गणेशमल जी ने सारे दाँव-पेच लगा दिए थे। उन्होंने दाँव लगाने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी थी। फिर भी वे आशा बाँध कर बैठे थे कि अबकी बार तो मेरा दाव सफल होगा ही। **'आशा बलवती राजन्, शल्यो जेष्यतिं पाण्डवान्।'** सुनते हैं - जब भीष्म पितामह और कर्ण जैसे महारथी महाभारत युद्ध में काम आ चुके तो भी कौरवों की आशा नहीं टूटी। उन्होंने पांडवों को जीतने की आशा से शल्य को अपना सेनापति बनाया। कौरवों की आशा तो सफल नहीं हुई, पर आनंद कुमारी जी के काका जी अपनी आशा की डोरी का अवलंबन लेकर भगीरथ कार्य में बाधा पहुँचाने के लिए प्रेरित हो रहे थे।

आनंद कुमारी जी के काका जी के यहाँ प्रवेश करने से पहले ही काका जी ने अपने षड्यंत्र का मसौदा बनाकर प्रस्ताव पास कर दिया था। उन्होंने एक व्यक्ति को कहा कि ''तुम आनंद कुमारी के यहाँ आने के बाद साधु का वेश पहनकर आना और उसे फुसलाने की कोशिश करना और उसके सामने साधुओं के आचरण को विपरीत रूप में चित्रित करना ताकि वह बहक जाए और अपने दीक्षा लेने के विचार को पलट दे। अगर इस काम में तुम सफल हो गए तो मैं तुम्हें उचित पुरस्कार दूँगा।''

पैसा क्या नहीं करा सकता? धन का लालच देकर बड़े-बडे सत्यवादियों और न्यायप्रिय व्यक्तियों को अपने मार्ग से डिगाया जा सकता है। फिर वह तो साधारण व्यक्ति था। उसे उसके पथ से विचलित करना कौनसी बड़ी बात थी? वह व्यक्ति गणेशमल जी के कहने में आ गया। एक रोज वह व्यक्ति साधु के वेश में काकाजी के घर आया तो काकाजी ने आपकी ओर इशारा करके उसे आपके पास भेज दिया और स्वयं एक कोने में छिपकर सब बातें सुनने लगे।

नकली साधु ने आनंद कुमारी जी के पास आकर पूछा- ''क्या दीक्षा लेने वाली बाई तू ही है?''

आनंद कुमारी जी– ''हाँ, मेरा ही दीक्षा लेने का विचार है।''

नकली साधु– ''दीक्षा तो ले रही हो, पर सोच-समझकर लेना। कहीं बाद में पछताना न पड़े। तुमने सुना है, साधु अवस्था में कितने कष्ट हैं? पैदल चलना, रोटी माँगकर लाना, केशलोच करना इत्यादि कष्टों का वर्णन तो तुमने सुना ही होगा! ये कष्ट कम नहीं हैं। गृहस्थावस्था में तुम सब साधनों से संपन्न हो। तुम्हें घर बैठे रोटी मिल जाया करती है। किसी के सामने दीनता नहीं करनी पड़ती। तुम बीमार भी पड़ जाओ तो तुम्हारे लिए डॉक्टर पर डॉक्टर बुलाकर घर वाले चिकित्सा करा सकते हैं, पर साधुपने में तो ये सब बातें हो नहीं सकती। वहाँ तो रोग में पड़े सड़ते रहो, कोई पूछने

वाला नहीं है। साधुपने में तो कोई किसी का संबंधी हो तो भले ही सेवा कर देता है, नहीं तो सेवा का काम बड़ा कठिन है। मैं तो खुद इन बातों के कारण तंग आ गया हूँ, फिर तुम इस जाल में क्यों फँस रही हो?

आजकल की साध्वियों में परस्पर कलह बहुत होता है। एक-दूसरी से लड़ती हैं और ईर्ष्या का तो पूछना ही क्या! उसमें तो वे नाक तक डूबी हुई हैं। यहाँ तो तुम चाहो जितने एवं चाहे जैसे कपड़े रख सकती हो, पहन सकती हो, पर साधुपने में तुम्हारी मनमानी नहीं चल सकेगी। वहाँ तो परिमित और सादे वस्त्र रखने पड़ेंगे। मैं देखता हूँ- तुम्हारा शरीर बहुत ही कमजोर और सुकोमल है। यह इस भयंकर यातना को सह नहीं सकेगा। फिर वेष छोड़ने पर तुम्हें मजबूर होना पड़ेगा। मैं तुम्हारा हितैषी होकर तुम्हें कह रहा हूँ। साधु-साध्वी, वैरागी और वैरागिनों को पहले ये सब हाल बताते नहीं हैं! वे सोचते हैं कि पहले बता देंगे तो यह दीक्षा लेगा नहीं। इसके वैराग्य का जोश ठंडा पड़ जाएगा। अभी तो तुम्हारे हाथ में लगाम है। तुम्हारी आज्ञा नहीं हुई है इसलिए बात जहाँ की तहाँ दब जाएगी, पर बाद में तो तुम्हें दीक्षा पालनी ही पड़ेगी।''

आनंद कुमारी जी- ''आप मुझे दीक्षा लेने से मना कर रहे हैं और कठिनाइयों को समझा रहे हैं। इन कठिनाइयों से घबराकर मैं अपने निश्चय से कभी हट नहीं सकती। इससे भयंकर यातनाएँ तो हमने देख ली हैं। आप कहते हैं कि वहाँ कोई किसी की सेवा नहीं करता, पर मुझे सेवा करानी ही क्यों है? मैं कर्म रोगों को मिटाने के लिए ही जब दीक्षा ले रही हूँ तो इन बाह्य रोगों से क्यों घबराऊँगी? जंगल में विचरण करने वाले हिरण की सेवा कौन करता है? रही ईर्ष्या की बात, वह भी मेरे साथ में कोई साध्वी करेंगी तो मैं अपनी प्रकृति को शांत रखूँगी। इससे दूसरा मेरा क्या बिगाड़ सकेगा?''

नकली मुनि ने देखा कि यहाँ दाल गलने वाली नहीं है। यह तो सब कुछ समझकर बैठी है, तो वह लज्जित होकर अपना-सा मुँह लेकर चला गया। वास्तव में वह आपकी युक्तियों और प्रभावशाली तर्कों को सुनकर मन ही मन घबरा गया था कि कहीं यह मुझे डाँट-फटकारकर निकाल न दे। पर आपने बड़े ही मीठे शब्दों में स्नेह के साथ उसे विदा किया।

आनंद कुमारी जी के काका जी रहस्य अनुसंधान करने में लगे थे और छिपकर आपकी बातें सुन रहे थे। वे बड़े प्रभावित हुए। थोड़ी देर पहले उनका पारा आसमान पर चढ़ा हुआ था, अब एकदम उतर गया। वे आपकी बातों को सुनकर गद्‌गद्‌ हो उठे। उनका हृदय एकदम पलट गया। वे आपके पास आए और बच्चों की तरह आँखों से आँसू बहाते हुए कहने लगे- ''बेटी! तू तो महान्‌ सती है। मैं इतने दिन भूल में था। मैंने तेरे स्वरूप को नहीं पहचाना और तुझे अमर्यादित यातनाएँ दीं व पीड़ित किया। मैं क्या जानता था कि तू अपने विचारों पर अडिग रहेगी! पर तूने तो जैसा उस दिन कहा था वैसा कर दिखाया। मैं महान्‌ अपराधी हूँ। मेरे सब अपराध माफ करना।'' ऐसा कहते हुए अपनी पगड़ी उतारकर आनंद कुमारी जी के पैरों पर रखने लगे। आनंद कुमारी जी ने बीच में ही हाथ रोककर कहा- ''काका साहब! यह क्या कर रहे हैं? आपका क्या अपराध था? दीक्षा लेने वाले की कसौटी करना तो आपका फर्ज था और आपने मेरी जो कसौटी की है, उसके लिए मैं तो आपको और अच्छा समझती हूँ। मैं तो आपकी बच्ची हूँ। मेरे सामने इस तरह पश्चात्ताप क्यों कर रहे हैं? मेरी तरफ से आपको सदैव माफी है। आपको ही मेरे बदले भला-बुरा सुनना पड़ा और इतना कष्ट उठाना पड़ा, उसके लिए मुझे माफी माँगनी चाहिए थी। खैर, आप मन में किसी प्रकार का दुःख न करें।''

इसी तरह काका जी और भतीजी के बीच प्रेम का आदान-प्रदान हो रहा था। सारा वातावरण बदल चुका था। सारे अनिष्ट-परमाणु उड़ गए। काकाजी ने आपको आश्वासन दिया- ''आनंद! तूने अपना नाम सार्थक कर लिया है। तू सचमुच ही आनंद की मूर्ति है। तू अब पहले जैसी नहीं है। तेरा मार्ग तुमने स्वयं प्रशस्त बना डाला है। अब तेरे मार्ग को रोकने की शक्ति किसी में नहीं है। तू सच्चे दिल से अपने धर्म और नियमों का पालन करेगी, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। अब मैं तुम्हें किसी तरह का कष्ट नहीं दूँगा और आज्ञा दिलाने के लिए भी प्रयत्न कर

तुझे शीघ्रातिशीघ्र संयम रथ में बिठाऊँगा।''

सच है, दैवीय शक्ति के सामने आसुरी शक्तियाँ परास्त हो जाती हैं, झुक जाती हैं। जगत् में हमेशा से यह सिद्धांत चलता आया है। भगवान महावीर के सामने गोशालक, कृष्ण के सामने कंस, राम के सामने रावण इत्यादि इसके उदाहरण हैं। आसुरी प्रकृति के अंग्रेज भारत के अहिंसावादी महात्मा गाँधी के सामने टिक नहीं पाए। इसी प्रकार आनंद कुमारी जी की शांत प्रकृति के सामने काका जी की क्रूर-प्रकृति खड़ी नहीं रह सकी। क्रूर प्रकृति को शांत प्रकृति में परिणत होना ही पड़ा। यह है सच्ची अहिंसा का अकाट्य प्रमाण! अहिंसक व्यक्ति के सामने हिंसक पशु भी अपना वैरभाव भूल जाते हैं।

महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में कहा है –

''अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः''

जहाँ अहिंसा की प्रतिष्ठा होती है, वहाँ उसकी सन्निधि में आने वाले अपना वैर छोड़ देते हैं।

साभार- धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

-क्रमशः

ज्ञान से खिलता जीवन

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. 21 अप्रैल को भगवान महावीर का कौनसा जन्मकल्याणक है?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 2. श्रमणोपासक में बच्चों के लिए प्रस्तुत ज्ञानवर्धक धारावाहिक का नाम?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 3. आचार्यश्री का जोर सदैव किस पर रहा है?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 4. भगवान के पाँच प्रमुख सिद्धांत लिखो।
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 5. भगवान महावीर ने क्या सहन किए?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 6. बालमन में उपजे ज्ञान धारावाहिक के सभी पात्रों के नाम लिखो।
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 7. भगवान महावीर जैन धर्म के कौनसे तीर्थंकर हैं?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 8. भगवान महावीर ने कितने वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की थी?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 9. जैन अनुयायी किसका अनुसरण करते हैं?
उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 10. सभी बच्चे सौरभ के घर से मन में क्या भरकर ले गए?
उत्तर .... पेज सं.: ....

नोट :-
1. सभी प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखने हैं।
2. उत्तर इसी अंक में से लिखने हैं।
3. उत्तर के साथ कोष्ठक में पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।

अपने प्रत्युत्तर 15 मई 2024 से पूर्व WhatsApp 9314055390 पर भेज सकते हैं।

बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

यह धारावाहिक विगत एक वर्ष से अधिक समय से गतिमान है और सैकड़ों बच्चे इससे जुड़कर प्रतिज्ञाएँ एवं ज्ञानार्जन कर अच्छी व जीवन परिवर्तनकारी बातें सीख रहे हैं। बच्चे संस्कारवान बनें, इस पर आचार्यश्री का सदैव ही जोर रहा है। अत: अपने बच्चों को प्रतिमाह बालमन की सीरिज पढ़ाएँ और अंत में दी गई छोटी-छोटी प्रतिज्ञाओं से उनका जीवन सँवारें।

आइए! देखते हैं कि इस बार बालमन में क्या जिज्ञासा जगी है और सौरभ की माता जी ने उनका कैसे समाधान किया है।

सौरभ की माता जी- सौरभ! 21 अप्रैल को महावीर जयंती है, तुम्हें याद है या नहीं?

सौरभ- हाँ मम्मी! बिलकुल याद है। मैं सुबह प्रभात फेरी में जाऊँगा, फिर प्रवचन में भी। (सभी बच्चे घर के अंदर प्रवेश करते हुए सौरभ क्या तुम अकेले जाओगे?)

सौरभ- अरे, मैं तो.... कह रहा था.... मेरा मतलब.... मैं अकेला नहीं....

नितिन- हम सब साथ में ज्ञान सीख रहे हैं और तुम महावीर जयंती पर हमें नहीं लेकर जाओगे?

सौरभ की माता जी- जय जिनेंद्र बच्चो! अरे तुम सब सौरभ से नाराज मत हों। उसका यह मतलब नहीं था।

नीलिमा- जय जिनेंद्र आंटी! आज गलती सौरभ की है, वो हमको भूल गया।

सौरभ- मेरा वो मतलब नहीं था दोस्तो! मुझे लगा कि तुम लोग चलोगे या नहीं। पर ये बताओ तुम्हें महावीर जयंती के बारे में कैसे पता है?

पंकज- सौरभ! तुम्हारा ये सवाल सही है। हम महावीर जयंती के बारे में ज्यादा तो नहीं जानते हैं, पर इतना जरूर पता है कि भगवान महावीर जैन धर्म के अंतिम अर्थात् 24वें तीर्थंकर हैं, जिनका अनुसरण समस्त जैन अनुयायी करते हैं।

सौरभ की माता जी- बिलकुल सही। आओ आज हम सभी भगवान महावीर के बारे में थोड़ी और जानकारी लेते हैं। (सभी बच्चे सौरभ की माता जी को घेरकर बैठ गए) यह भगवान महावीर का 2623वाँ जन्मकल्याणक है। कुण्डलपुर (बिहार) में उनका जन्म हुआ। उनकी माता का नाम त्रिशला और पिता का नाम सिद्धार्थ था। उन्हें बचपन में 'वर्धमान' के नाम से पुकारा जाता था। 30 वर्ष की आयु में भगवान महावीर ने घर का त्याग कर दीक्षा ग्रहण कर ली और आत्मकल्याण की राह पर चल पड़े। भगवान महावीर ने अनेक परीषह सहन किए, परंतु कभी भी उन परीषहों से विचलित नहीं हुए। उनकी उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उन्नति आज सैकड़ों साधु-साध्वियों को गतिमान कर रही है।

नीलिमा- क्या सब साधु-साध्वी भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चलते हैं?

सौरभ की माता जी- हाँ, उसी मार्ग पर चलते हैं। चाहे कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों ना करना पड़े।

(सभी बच्चे भगवान महावीर के बारे में जानकर खुश थे)

पंकज- हम सभी 21 अप्रैल को भगवान महावीर का जन्मदिवस एक साथ मनाएँगे।

सौरभ- मम्मी, आज का पाठ तो रह ही गया।

सौरभ की माता जी- कोई बात नहीं। आज हमने और भी अच्छी-अच्छी बातें सीखी। अगली बार सभी बच्चे तस्स उत्तरी तक सभी पाठ कंठस्थ करके आएँगे, साथ ही साथ भगवान महावीर के पाँच प्रमुख सिद्धांत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) पर स्लोगन बनाकर लाएँगे।

नितिन- पर हम तो चार ही हैं!

नीलिमा- (जोर से हँसते हुए) एक स्लोगन आंटी बनाएँगी।

सभी बच्चों ने एक नई ऊर्जा के साथ सौरभ के घर से विदाई ली और भगवान महावीर जन्मकल्याणक का उत्साह मन में भरकर ले गए।

प्रतिज्ञा

1. **भगवान महावीर स्वामी के जीवन से संबंधित किसी भी पुस्तक के कुछ पृष्ठ पढ़ना।**
2. **भगवान महावीर जन्मकल्याणक के दिन अहिंसात्मक प्रवृत्ति का परिचय देते हुए मोबाइल चलाने का त्याग रखना।**

भगवान महावीर के पाँच मूल सिद्धांतों पर आधारित 5 से 15 वर्ष तक के बच्चों के श्रेष्ठ 10 स्लोगन श्रमणोपासक में प्रकाशित किए जाएँगे एवं उन पर पुरस्कार भी प्रदान किया जाएगा। आप अपने द्वारा बनाए गए स्लोगन आपके नाम, आयु, पते सहित WhatsApp No. 9314055390 पर 15 मई 2024 तक भिजवा सकते हैं।

संस्कार सौरभ

मुक्ति के मार्ग में बाधक है मोह

-गौतम पारख, राजनांदगाँव

मुक्ति, सुक्ति, युक्ति इन तीनों शब्दों के बीच मैं चिंतन की गहराइयों में खो गया। सोचने लगा कि आखिर मुक्ति कौन-कौनसी सुक्तियों, कौन-कौनसी युक्तियों को अपनाकर प्राप्त की जा सकती है? युक्तियाँ और सुक्तियाँ, मुक्ति के करीब जाकर क्यों मौन हो जाती हैं? मुक्ति मिले या न मिले, लेकिन शव को पंचतत्त्व में विलीन अवश्य कर दिया जाता है। प्रश्न उठने लगा कि आखिर मुक्ति किन-किन तत्त्वों, प्रवृत्तियों, साधनों तथा विकार भावों से मुक्त होने पर प्राप्त होती है? ब्याज मुक्त ऋण सांसारिक जीवन में डूबने से बचा लेता है। मुक्त होना ही मुक्ति की प्रथम शर्त है। मुक्तिधाम में व्यक्ति चिरनिद्रा में विलीन अवश्य हो जाता है, लेकिन कर्मों के भार से मुक्त नहीं होता। यही तो जन्म-मरण के चक्र का कारण है। चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण करने का प्रमुख कारण है कि व्यक्ति कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) एवं कर्मों के भार से शून्य नहीं होता। व्यवहार जगत् में प्रश्न उठता है कि व्यक्ति का निधन कब होता है? निधन होने के पूर्व उसे मुक्तिधाम नहीं ले जाया जा सकता। निधन अर्थात् धन रहित होने पर निधन होता है। धन शून्य हुआ निधन हो गया। दूसरे शब्दों में अंतिम साँस ही तो धन, संपत्ति, मकान, खलिहान, झोपड़ी को शून्य बना देती है, उसे ही निधन कहते है। जब व्यक्ति का शरीर शव बन जाता है तो दुनिया के वश कुछ नहीं रहता। केवल और केवल दाह-संस्कार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहता।

मुक्ति पाने वाला जन्म-मरण की प्रक्रिया से मुक्त हो जाता है। उसका वह जन्म भी अंतिम होता है और मरण भी अंतिम। मेरे स्मृतिपटल पर धन्ना जी व शालिभद्र जी का जीवन उभरकर आ गया। प्रसंग बना तो निमित्त बने धन्ना जी। वे शालिभद्र जी को लेकर भगवान महावीर के श्रीचरणों में पहुँच गए। भगवान महावीर के श्रीचरणों में वे दोनों दीक्षित, मुंडित हो कठिन साधना में लीन हो गए। अंतिम समय जानकर दोनों पर्वत पर संथारा-संलेखना के साथ ध्यान साधना में लीन हो गए। इस खबर को सुनने के बाद धन्ना और शालिभद्र की माताएँ उन दोनों ध्यानस्थ मुनियों (सांसारिक पुत्रों) के दर्शन हेतु पहुँच गईं। दोनों माताओं ने अपने पुत्रों के दर्शन-वंदन किए। उन्हें निहारने लगीं। मातृ-ममता के वशीभूत दोनों माताएँ ध्यानस्थ मुनियों से आँखें खोलकर दर्शन देने हेतु अनुनय-विनय करने लगीं। मेरे लाल! एक बार तो आँखें खोलकर मुझे देख ले। माता के अनुरोध पर शालिभद्र जी ने तो आँखें खोलकर अपनी माँ को निहारा और तत्काल पुन: आँखें बंद कर साधना में लीन हो गए, किंतु धन्ना जी ने अंत तक आँखें नहीं खोली और वे साधना में समाहित रहे।

जैन दर्शन कहता है कि धन्ना जी माँ की ममता से विचलित नहीं हुए। वे सिद्ध होकर मोक्षगामी बन गए, लेकिन शालिभद्र जी ने माँ के अनुरोध पर आँखों की पलकें खोल दीं और वे माँ की ममता, मोह पर विजय प्राप्त नहीं कर पाए। केवल इतना छोटा-सा मोह उनकी मुक्ति में बाधक बन गया। उन्हें देवलोक में जन्म लेना पड़ा। चाहे क्रोध की बूँद हो, मान की बूँद हो, माया की बूँद हो अथवा लोभ की बूँद हो, सभी मोक्षमार्ग में प्रवेश को रोक देती है।

मैं सोचने लगा कि शालिभद्र जी आँखों की पलकें खोलकर पुन: साधना में लीन होने के बावजूद भी अप्रत्यक्ष मोह मोक्षगामी बनने में दीवार बनकर खड़ा हो गया। कैसा बारीक दर्शन है!

सूक्ष्ममोह के बाद मान (अभिमान) पर मेरा ध्यान आकर टिक गया। आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जी के पारिवारिक जीवन की प्रारंभिक कहानी मानो कल्पित होकर आँखों के सामने तैरने लगी। भगवान ऋषभदेव जी के 100 पुत्र और 2 पुत्रियाँ थीं। भगवान ऋषभदेव जी के दीक्षित होने के बहुत समय बाद उनके 98 पुत्रों ने भी उनके श्रीचरणों में ही दीक्षा ले ली। भरत और बाहुबली ने दीक्षा नहीं ली। भरत चक्रवर्ती थे। भरत अपने भाई बाहुबली के राज्य पर भी अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे। दोनों भाइयों के बीच 12 वर्ष तक महासंग्राम हुआ। अंत में शकेंद्र स्वयं युद्ध स्थल पर आए और दोनों भाइयों से कहा कि अब युद्ध बंद करो। अंत में मुष्टियुद्ध होने लगा। मुष्टियुद्ध के लिए बाहुबली, भरत के पीछे दौड़ने लगा। इससे शकेंद्र घबराए, क्योंकि भरत तो चक्रवर्ती थे। वे हार जाते तो अनर्थ हो जाता। लेकिन बाहुबली ने जिन हाथों को मुष्टियुद्ध के लिए उठाया था उनसे भरत पर प्रहार न कर अपने केशों का लोच कर लिया और वे भी दीक्षित हो वन में कठोर साधना में लीन हो गए। वे सोचने लगे कि यदि मैं पिता जी भगवान ऋषभदेव के दर्शन करने जाता हूँ तो मुझे वहाँ पूर्व में दीक्षित मेरे 98 छोटे भाइयों को वंदन करना पड़ेगा। छोटे भाइयों को मैं कैसे वंदन करूँगा? वे ऋषभदेव जी के दर्शन हेतु जाने को तैयार नहीं हुए। वर्षों साधना करते-करते शरीर पर मिट्टी की परतें जम गईं। पेड़ों की बेलें पूरी तरह शरीर में लिपटने लगीं।

इधर भगवान ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को बाहुबली को बोध देने हेतु भेजा। दोनों बहनें बाहुबली के पास पहुँचकर कहने लगीं- ***'वीरा म्हारा गज थकी उतरो, गज चढ़ियाँ मुक्ति नहीं होसी।'*** बाहुबली के कानों में जब ये आवाज पहुँची तो वे सोचने लगे कि मैं कहाँ हाथी पर सवार हूँ? मैं तो साधना कर रहा हूँ। उनके ज्ञानचक्षु खुल गए और अंतरात्मा से आवाज आने लगी कि हाँ, हाँ मैं तो अभिमान के हाथी में चढ़ा हुआ हूँ। मैं बड़ा हूँ यह सोचकर 98 लघुभ्राताओं के दर्शन करने नहीं जा रहा हूँ, क्योंकि झुककर उनको वंदन करना पड़ेगा। इसी अभिमान के हाथी में चढ़ा हुआ हूँ। वे स्वयं को धिक्कारने लगे और जैसे ही 98 भाइयों को वंदन करने के लिए उन्होंने कदम उठाया तो देवदुंदुभि बजने लगी। बाहुबली को केवलज्ञान व केवलदर्शन प्राप्त हो गया और मोक्ष के पट खुल गए।

मैं सोचने लगा कि बाहुबली की कठोरतम साधना के बावजूद छोटी-सी मान की बूँद ने उनके मोक्ष के दरवाजे बंद कर रखे थे। क्रोध, मान, माया, लोभ का एक छोटा-सा कण भी जीवन में रह गया तो साधना के बावजूद मुक्ति के दरवाजे नहीं खुलेंगे। मान शब्द में 'स' जुड़ जाता है तो वह सम्मान बन जाता है। मान, सम्मान, स्तुति का अतिरेक सदैव घातक रहा है। सम्मान शब्द का प्रथम शब्द 'स' सत्य को उद्घाटित करे और सम्मान का मध्यम शब्द 'म' मर्यादा की लक्ष्मणरेखा खींचकर रखे तब ही सम्मान होना चाहिए, ताकि उनके ललाट से सत्य और मर्यादा की किरणें सदैव प्रवाहित होती रहें।

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो! मुक्ति पाने के लिए हम क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, विकार को शून्य करने की कला सदैव सीखते रहें, ताकि कम से कम समभावी व संतोषी बनकर तो जीवन जीना सीख जाएँ।

संस्कार सौरभ

सहजता, सरलता की प्रतिमूर्ति आचार्य प्रवर

-सुरेश बोरदिया, मुंबई

हर व्यक्ति की नाम, रंग, रूप, कार्य आदि द्वारा अपनी पहचान होती है तो विशिष्ट पहचान उनके गुणों द्वारा होती है। उन गुणों, विशिष्टताओं से अन्य व्यक्ति स्वत: प्रभावित हो जाता है। ऐसे गुणों को व्यक्तित्व कहा जाता है। व्यक्तित्व के कई प्रकार हैं जैसे- सरल, शांत, गंभीर, अनुशासनप्रिय एवं इनके अलावा भी अन्य अनेक प्रकार हैं। कुछ विरले महापुरुष असाधारण व्यक्तित्व से युक्त होते हैं। ऐसे महापुरुषों के संपर्क में, सान्निध्य में आने वाले व्यक्तियों पर उनका गहरा प्रभाव पड़ता है।

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा., आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के दर्शन का सौभाग्य अधिकांश पाठकों को मिला ही है। दोनों महापुरुषों के जीवन चारित्र से हम सभी सुपरिचित हैं। इनके विराट व्यक्तित्व को हमने बहुत नजदीक से देखा है। आचार्य भगवन् के मुखमंडल पर झलकते हुए असाधारण विराट व्यक्तित्व को शब्दों द्वारा परिभाषित नहीं किया जा सकता। अगर शब्दों से परिभाषित करना ही है तो सिर्फ एक ही परिभाषा हो सकती है- महत्तम व्यक्तित्व। ऐसा महत्तम व्यक्तित्व जिससे अधिक या आगे कुछ मिल पाना या ढूँढ़ पाना दुष्कर होगा।

महापुरुषों के मुखमंडल से, उनके शब्दों से उनका व्यक्तित्व झलकता है। उनके फरमाए हुए एक-एक वचन में, एक-एक शब्द में व्यक्तित्व प्रकट होता है। उनके हर शब्द अपने आप में व्यक्तित्व को लिए हुए होते हैं। आपश्री जी के पावन श्रीमुख से एक शब्द सुनकर ही श्रोता प्रभावित हो जाते हैं। यहाँ तक कि प्रवचन में भगवन् के पावन वचन सुनकर श्रोता इतने प्रभावित हो जाते हैं कि उसी चलते प्रवचन में दीक्षित भी हो जाते हैं। यह प्रभाव है उनके महत्तम व्यक्तित्व का।

हिंदी शब्दकोष में दो छोटे से शब्द हैं - **'ही'** और **'भी'**। मात्र एक अक्षर से बने इन छोटे से शब्दों से वाक्य या कथन में कितना सार छिपा रहता है, यह एक प्रेरक प्रसंग से समझ सकते हैं।

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के जीवन चारित्र से एक प्रसंग संकलित है। बदनावर-कानवन के बीच विहार हो रहा था। लगभग 7 कि.मी. विहार करने के पश्चात् कुछ समय के विश्राम हेतु आचार्य भगवन् मार्ग में एक चबूतरे पर विराजे। श्री अमरचंद जी म.सा. को सहसा कुछ याद आया और भगवन् से निवेदन किया- ''भगवन्! मुझसे एक भूल हो गई। कल एक गृहस्थ के घर से कार्यवश सुई लाया था, लेकिन कार्य हो जाने के पश्चात् सुई लौटाना भूल गया। सुई स्थानक भवन में ताक में ही रख दी थी। आप कृपा करके फरमाएँ कि मैं क्या करूँ?''

आचार्य भगवन् ने फरमाया- "इसमें सोचना क्या है? किसी श्रावक को साथ लेकर आप वहाँ पधारो, सुई ढूँढ़कर लौटाकर वापस विहार करके पधार जाना।"

पास ही खड़े एक श्रावक ने निवेदन किया- "भगवन्! एक छोटी-सी सुई के लिए 14 किमी. का विहार का चक्कर नहीं देवें। सुई कहाँ रखी है, किसको देनी है, बता दीजिए। हम में से कोई भी लौटा देगा।"

आचार्य भगवन् ने फरमाया- "आपकी भावना प्रशस्त है, लेकिन हम साधुओं का कार्य हम स्वयं ही करते हैं, श्रावकों से नहीं करवा सकते हैं। सुई तो अमरचंद जी म.सा. को खुद ही लौटानी है।"

सुनते ही श्री अमरचंद जी म.सा. ने भगवन् को वंदन करके सुई लौटाने हेतु विहार कर दिया। एक सुई के लिए 7 किमी. जाना और इतना ही वापस आना यानी 14 किमी. का विहार। यह था आचार्य भगवन् का अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व, जिसमें प्रमाद को कोई नामोनिशान तक नहीं।

अब इस प्रसंग में प्रयुक्त हुए **'ही'** और **'भी'** शब्द पर ध्यान देना होगा। श्रावक ने कहा था- सुई हम में से कोई **'भी'** लौटा देगा। यहाँ इस 'भी' में कई व्यक्तियों का समावेश था। वहाँ उपस्थित या अनुपस्थित कई व्यक्तियों के लिए था यह 'भी' शब्द। एक नहीं, अनेक व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होने से यह स्पष्ट नहीं हो सका कि सुई कौन लौटाएगा। लेकिन जब आचार्य भगवन् ने फरमाया कि सुई तो अमरचंद जी म.सा. को खुद **'ही'** लौटानी है तो इस वाक्य में प्रयुक्त 'ही' शब्द सिर्फ अमरचंद जी म.सा. के लिए ही था।

शब्द से अधिक प्रभाव तो आचार्य भगवन् के व्यक्तित्व का था। यूँ भी कह सकते हैं कि आचार्य भगवन् के शब्द ही अपने आप में व्यक्तित्व थे, क्योंकि उन शब्दों का प्रभाव तो श्री अमरचंद जी म.सा. पर पड़ ही चुका था।

शब्दों से व्यक्त हुआ व्यक्तित्व एक प्रेरक प्रसंग बन गया। महापुरुषों के जीवन से संबंधित हर प्रसंग प्रेरक ही होता है। कुछ प्रसंग तो प्रेरक होने के साथ-साथ अविस्मरणीय बन जाते हैं।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के विलक्षण व्यक्तित्व को हम प्रत्यक्ष देख ही रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं, लेकिन आपश्री जी के विलक्षण व्यक्तित्व का वर्णन शब्दों में संभव नहीं है।

गूँगा व्यक्ति गुड़ खाता है तो वह उसके स्वाद को ग्रहण कर रहा है, गुड़ की मिठास का अनुभव कर रहा है, लेकिन अगर उससे गुड़ के स्वाद के बारे में पूछा जाए तो वह कैसे व्यक्त करेगा? गुड़ के स्वाद, मिठास को वह स्वयं अनुभव करने के बावजूद भी शब्दों से उसे व्यक्त नहीं कर सकता। लेकिन क्या गुड़ की मिठास कहीं छिपी रह सकती है? गूँगा शब्दों से न सही, इशारों से या हाव-भाव से तो गुड़ की मिठास को व्यक्त कर ही देता है। आचार्य भगवन् का विराट व्यक्तित्व अवर्णनीय है। महत्तम व्यक्तित्व को शब्दों द्वारा पूर्ण रूप से वर्णित नहीं किया जा सकता है। व्यक्तित्व महत्तम है और हमारी क्षमता-अल्पतम है, लघुत्तम है। बस, हम अपनी अल्पतम क्षमतानुसार कुछ अंश तो व्यक्त करने का प्रयास कर ही सकते हैं।

2017 में आचार्य भगवन् का विहार ठाणे-नासिक के बीच प्रात: आटगाँव से खर्डी हुआ। खर्डी में मात्र एक जैन घर एवं अन्य शाकाहारी घर भी गिने-चुने। एक समय की गोचरी की भी पूरी अनुकूलता नहीं थी। उसी दिन सायं विहार की संभावना थी। मैं और गुमान जी आगे गए तो चार-पाँच कि.मी. आगे एक मंदिर का बरामदा मिल गया। मंदिर के व्यवस्थापक से मिलकर हमने निवेदन किया कि अगर सायं हमारे गुरु महाराज यहाँ पधारते हैं तो आप ठहरने की अनुमति देंगे? उसने तुरंत रूखे स्वर में मना कर दिया। हमने फिर निवेदन किया कि सूर्यास्त से कुछ पहले यहाँ पधारेंगे और सुबह सूर्योदय होते ही विहार कर देंगे। उन महापुरुष को किसी और वस्तु की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ ठहरने के लिए स्थान की ही जरूरत है। अगर आप अनुमति दें तो यह स्थान काम आ सकता है। उसने फिर मना कर दिया। उसके शब्द सुनकर फिर से निवेदन करने के बजाय हम निराश होकर लौट गए और खर्डी में विराजित आचार्य भगवन् की सेवा में पहुँचे और दर्शन-वंदन कर बैठ गए।

आचार्य भगवन् के सरल व्यक्तित्व से मैं अच्छी तरह परिचित था, लेकिन इतनी सरलता का मुझे जरा-सा भी ज्ञान नहीं था। वही सरलता मुझे प्रत्यक्ष देखने को मिल रही

है। आचार्य भगवन् ने मुझे अत्यंत सरल शब्दों में फरमाया– ''काँई बोरदिया जी, सुबह रा आयोड़ा कठै चल्या ग्या?''

मेरे जैसा सामान्य भक्त, जो गुरु दर्शन भी कभी-कभार ही किया करता था उसके लिए इतने वात्सल्यतापूर्ण शब्द सुनकर मैं उन दिव्य, अलौकिक महापुरुष के समक्ष नतमस्तक बैठा विचार करने लगा– ''जो कुछ मैंने सुना है वह वास्तविकता है या कोई सपना?''

विचार चल रहा था, लेकिन वह वास्तविकता थी या सपना, यह निर्णय तो आज तक भी नहीं कर पाया। लेकिन मेरे निर्णय लेने या नहीं लेने से वास्तविकता छिपी तो नहीं रह सकती थी। वास्तविकता तो वास्तविकता ही थी। सपना होता तो क्या सात वर्षों से आज तक याद रह सकता था?

वात्सल्यता के स्वयंभूरमण समुद्र से मैं अपने आपको तृप्त करता गया। एक नया अहसास, एक नई तृप्ति, एक नए आनंद की अनुभूति अंदर ही अंदर समाहित हो रही थी। अब उसी आनंद की तरंगों के बीच मैंने निवेदन किया कि भगवन्! यहाँ से चार-पाँच किमी. दूर स्थान उपलब्ध है और इसके पश्चात् व्यवस्थापक के साथ हुई सारी बात मैंने निवेदित कर दी।

भगवन् की जिस सरलता, जिसका वर्णन किया जा चुका है, उससे कई गुणा बड़ी सरलता तो मुझे अब देखने को मिली। भगवन् ने हाईवे के किनारे बने बस स्टॉप के छप्पर की तरफ इशारा करते हुए फरमाया– ''अगर चार-पाँच किमी. आगे ऐसा ही कोई छप्पर मिल जाए तो भी हमारे लिए पर्याप्त होगा। हम उसी के नीचे रात्रि विश्राम कर सकते हैं।''

यह सुनकर आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का छत्तीसगढ़ विचरण का एक प्रसंग सहज ही स्मृति में उभर आया। रायपुर के आसपास सायं विहार में मार्ग में कोई स्थान न होने पर आचार्यश्री एवं संतों ने हाईवे के किनारे खड़े एक बंद ट्रक के नीचे रात्रि व्यतीत की थी। यह प्रसंग मैंने कई बार पढ़ा था, लेकिन आज जो प्रसंग बनने जा रहा था वह बनने के पहले ही मैं प्रत्यक्ष देखने के लिए उपस्थित था।

अंतर न तो दोनों प्रसंगों में था, न दोनों महापुरुषों में और न ही उनके व्यक्तित्व में। एक महापुरुष ट्रक के नीचे रात्रि व्यतीत कर चुके थे तो दूसरे महापुरुष एक छप्पर के नीचे रात्रि व्यतीत करने को तैयार थे। दोनों महापुरुष एक जैसे सरल, एक जैसे सहनशील और परीषहों की परवाह न करने वाले।

मैं सोच रहा था कि आज का सूर्योदय मेरे लिए कितने आनंद के पल लाया है। उन आनंद के पलों के बीच सिर्फ मैं ही नहीं, समग्र जैन समाज के लिए गर्व जैसा ही प्रसंग था। ऐसे महापुरुष अपने सुख की कल्पना तक नहीं करके, परीषहों की परवाह न करके किसी भी तरह रात्रि व्यतीत करने को सहज तैयार थे।

अब गर्व का स्थान निवेदन ने ले लिया और मैं निवेदन करने लगा– ''भगवन्! इतने छोटे से छप्पर के नीचे आप सहित छह संत म.सा. का रात्रि विश्राम कैसे संभव होगा? शयन तो नहीं, लेकिन विराजने जितनी अनुकूलता भी नहीं हो सकती। आप तो आगे उसी मंदिर की तरफ विहार करने की कृपा कीजिए, भगवन्।''

लगभग 4:30 बजे आपश्री जी ने शिष्य संपदा सहित वहाँ से विहार कर दिया। गंतव्य तक पहुँचते-पहुँचते एक बार फिर आश्चर्य हुआ कि उस मंदिर का व्यवस्थापक भगवन् को देखते ही अहोभाव सहित सामने आया और पास आकर हाथ जोड़कर निवेदन करने लगा– ''आप मंदिर में ही पधारिए, वहीं विराजिए।'' और भगवन् कृपा करके वहाँ पधारे व रात्रि विश्राम किया।

जो व्यक्ति मेरे और गुमान जी के हाथ जोड़कर निवेदन करने के बावजूद हमें मना करता रहा, वही व्यक्ति भगवन् को दूर से देखकर ही अगवानी के लिए सामने आया और मंदिर के बरामदे में विराजने का निवेदन करते हुए आज्ञा भी दे दी। यह था भगवन् के दुर्लभ एवं अनुपम व्यक्तित्व का प्रभाव, जिससे सामने वाला व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

ऐसे विरले महापुरुष, महत्तम व्यक्तित्व के धनी आचार्य भगवन् के महत्तम महोत्सव का महत्तम शिखर वर्ष प्रवाहमान है। उनके दिव्य महत्तम व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर हम अपना जीवन धन्य बना सकते हैं।

संस्कार सौरभ

व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

व्य - वही व्यक्ति अपनी मंजिल को
क्ति - तीव्र गति से प्राप्त करता है, जो
त्व - त्वमऽसि के महावाक्य को आत्मसात् करता है
से - सेतु बनता है मोक्ष पथ का
कृ - कर्ता भाव मिटाकर
ति - तिरने की अभिलाषा से
त्व - तत्त्वज्ञान को प्राप्त करता
की - कीर्ति की लालसा मिटाकर
ओ - और अभिमुख होता स्व की ओर
र - रमण करता आत्मभावों में

साधक का व्यक्तित्व अनंत संभावनाओं से भरा हुआ है। वटवृक्ष का बीज छोटा-सा होता है। उस बीज में असंख्य पत्ते, टहनियाँ, फूल, फल छिपे होते हैं। वैसे ही हर मानव में अनंत संभावनाएँ भरी हुई हैं। वह अनंत शक्तियों का स्वामी है। उन शक्तियों को जगाने की आवश्यकता है। जागता वही है जिसमें अपने लक्ष्य के प्रति लगन (तड़प) हो। व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के विराट रूप को जाग्रत करके ही कृतित्व की ओर प्रस्थान करता है। उसका कृतित्व अनेक साधकों का प्रेरणापुंज बन जाता है। व्यक्तित्व की अपेक्षा कृतित्व ज्यादा क्रियाशील बनाता है व आगे बढ़ने, अप्रमत्त बनने की प्रेरणा देता है।

श्रद्धा के सुमन, अंतर कर स्मरण,
देव, गुरु, धर्म के प्रति हो प्राणों का अर्पण।
पापास्रवों का हो विस्मरण,
प्रेम, भक्ति, सेवा भाव का हो जागरण।।

जब अलौकिक का प्रकटीकरण होता है तो आत्मा में प्रखर पुरुषार्थ जाग्रत होता है। जिस प्रकार अग्नि की छोटी-सी चिनगारी रूई के बड़े से बड़े ढेर को जला सकती है, उसी प्रकार व्यक्ति का कृतित्व अनेक संयोगों से हटाकर नि:संग तत्त्व में अनुभूति कराने के साथ-साथ अनंत पाप कर्मों को क्षणभर में क्षय कर देता है। जैसे सूर्य की एक किरण घोर अंधकार को नष्ट कर देती है, उसी प्रकार महापुरुषों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमारे लिए प्रकाशपुंज बनकर हम में नवचेतना का संचार करते हैं।

जिंदगी मिला करती है कुछ कर गुजरने के लिए,
मुस्कान मिला करती है बनकर निखरने के लिए।
ओढ़कर चादर क्यों पड़ा है तू उदास,
जिंदगी मिलती है जागकर जीने के लिए।।

अनंत संपदाओं के मालिक बनकर उस संपदा का समुचित उपयोग करना चाहिए। जीवन का जितना उपयोग विराटता में किया जाए उतना ही जीवन अर्थपूर्ण बन जाता है। जीवन नदी की वह धारा है, जो किनारों को छूकर बहा करती है। ऐसी नदी किनारों से कुछ न कुछ लिया करती है तो कुछ न कुछ दिया भी करती है। जीवन के जो निकटवर्ती हैं, वे जीवन-नदी के किनारों की भाँति ही हैं। जीवन उन्हें ही कुछ देता है और उन्हीं से कुछ लेता है। जीवन के निकटस्थ जो है, वह पवित्र, उदात्त और श्रेष्ठतम है।

जीवन एक ऐसा प्रवाह है, जिसकी धारा सदा एक रूप नहीं बहती। जीवन आदि से अंत तक एक जैसा बना रहे, जीवनधारा सम बहती रहे, यह लगभग असंभव है। जीवन में उतार-चढ़ाव, धूप-छाँव, सुख-दु:ख और सघनता-विरलता आती रहती है। यदि जीवन को सरिता की उपमा दी जाए तो सुख और दु:ख उसके

दो तट हैं। जीवन की लहरें इन दोनों तटों को स्पर्श करती हैं। इन लहरों में स्थिरता नहीं होती। इसी का नाम जिंदगी है। जहाँ सुख भी हैं और दु:ख भी हैं। जिंदगी सुख-दु:ख के मिश्रण से ज्यादा कुछ भी नहीं है। साधना के रास्ते पर वही व्यक्ति आगे बढ़ सकता है जो अपने जीवन के प्रति ईमानदार, वफादार हो। मुक्ति तो उसके लिए होती है, जो अपने जीवन के प्रति ईमानदार है। नदी में बहने वाले जल के समान जीवन निरंतर प्रवाहित हो रहा है। एक क्षण के लिए भी बहता हुआ जल रुकना नहीं जानता। आयुष्य भी इसी प्रकार बिना रुके व्यतीत होता जा रहा है। अपने कर्तव्य के बोध से बोधित होकर मानवता प्रेम, मैत्री, भाईचारा, विश्वास और नैतिकता को भी दाँव पर लगाने में अपने जीवन की सफलता है। सूरज का उदय हो और फूल न खिले तो समझना कि वह फूल नहीं पत्थर है। जीवन का कृतित्व यह है कि प्रभु ने जिस मार्ग पर चलकर प्रभुता प्राप्त की है, हम भी उसी मार्ग को स्वीकार करें और उस पर चलें। जिसने भी जीवन को जाना, समझा और परखा है, उसने अपने जीवन को मंदिर बना लिया। मंदिर वह है जहाँ मनुष्य अपने अंतस् के पवित्र भावों को अर्चना के रूप में अभिव्यक्त करता है और आत्मशांति को प्राप्त करता है। जैसे पत्थर को तराश कर प्रतिमा का निर्माण किया जा सकता है वैसे ही जीवन को भी सद्गुणों से सजाकर भीतर रही हुई परमात्मा की मूरत को प्राप्त किया जा सकता है।

बात अंधेरों की नहीं, उजालों की करनी होगी,
चर्चा काँटों की नहीं, गुलाबों की करनी होगी।
मोड़ दिया है जिंदगी को जिसने भी,
दृष्टि चील की नहीं, हँस की करनी होगी।।

भक्ति रस

नवम् पट्टधर

-धर्मेंद्र पारख, रायपुर

गुरु हुक्मी के पदचिह्नों को, गुरुवर शिखर तक पहुँचा रहे।
जहाँ दिव्यता ही जीवन है, स्वयं को वो तपा रहे।।
विपदाएँ कितनी आईं, कितने ही आघात सहे।
मन में ध्येय अरिहंत प्रभु का, अविचल ही खड़े रहे।।
तप-तपस्या, ध्यान-साधना की, अलख वो नित्य जगा रहे।
कर्मों की फुलवारी से, संघ को सुगंधित बना रहे।।
अनार्य क्षेत्रों में भी विचरण कर, जिनशासन की प्रभावना कर रहे।
नित्य नए आयामों से, संघ को सिंचित् कर रहे।।
कर रहा हर संत पुरुषार्थ, संकल्पों में अडिग रहे।
आगम के शब्दों का मूलार्थ, अंतस् सागर में ढूँढ़ रहे।।
सत्य धर्म का परचम लहराए, जिनवाणी घर-घर तक पहुँचा रहे।
पंचम आरे के कष्टों को सहज सहकर, जन-जन का जीवन निखार रहे।।
दुष्प्रवृत्तियों से हर संभव बचाकर, संघ को संयम की ओर बढ़ा रहे।
नवम् पट्टधर के पद से, अष्टम आचार्यों के धर्मरथ को आगे बढ़ा रहे।।
संघनायक ऐसे हमारे, जो सबके अंतर्हृदय में बसे हुए।
संघ के हम सब भाग्यशाली सदस्य, पर सामर्थ्य अनुरूप कुछ ना कर पाए।।
गुरुवर से एक अर्ज मेरी....
शुद्ध भाव हो, शुद्ध हो मेरा आचरण।
गुरुकृपा निरंतर मिलती रहे, ऐसा हो पावन जीवन।।

मार्गदर्शक महावीर

-संकलित

भगवान महावीर जयंती का शुभ अवसर जीवन में कई बार आया फिर भी हम जहाँ के तहाँ ही हैं। इसका क्या कारण है? प्रत्येक जीव महावीर बनने की योग्यता रखता है, ऐसा उपदेश सुनकर भी हम जस के तस ही बने हुए हैं। इसका क्या कारण है? कारण एक ही है कि हमारी अपनी इच्छा उन्नत होने की नहीं हुई। बड़ा बनना अच्छा लगता है, किंतु उसके लिए प्रयत्न का उत्साह नहीं। उत्साह के बिना कार्यसिद्धि नहीं होती। यही कारण है कि हम जहाँ के तहाँ हैं। जैन धर्म का रास्ता भक्ति मार्ग का है भी और नहीं भी। इस अर्थ में तो वह भक्ति मार्ग है कि अपनी निष्ठा एक आत्मा के प्रति ही हो और वह भी दूसरा कोई बाहरी आत्मा नहीं, किंतु अपनी अंतरात्मा। अंतरात्मा के प्रति हमारी दृढ़निष्ठा हो जाए तो हमारी उन्नति सुनिश्चित है। दूसरे आत्मा के प्रति यह मानकर भक्ति हो कि वही सब कुछ है, वही हमारा उद्धार करेगा, ऐसा भक्ति मार्ग जैन धर्म का रास्ता नहीं है। हमने भगवान महावीर की भक्ति इसी दूसरे रास्ते से की है। अतएव हमारा उद्धार नहीं हुआ।

इस जयंती के अवसर पर हमें भगवान महावीर को एक उद्धारक के रूप में नहीं, किंतु सही रास्ता दिखाने वाले मार्गदर्शक के रूप में देखना है। उद्धारक के रूप में देखने पर भाव यह होता है कि वे ही ईश्वर हैं और हम सब ठहरे पामर प्राणी। इस भावना से निराशा तब तक बनी रहती है जब तक हम यह न मान लें कि वह हमारा कभी न कभी उद्धार करेगा। ऐसी मान्यता से निराशा तो निर्मूल हो जाती है, पर उचित प्रयत्न नहीं होता। भगवान महावीर ने जो तत्त्वज्ञान सिखाया है उसके साथ उक्त भावना का मूल नहीं। अतएव सही बात यही है कि हम उनके उद्धारक रूप को भूल जाएँ और अपने को ही अपना उद्धारक मानें। भगवान महावीर को तो सिर्फ एक मार्गदर्शक के रूप में देखें।

प्रश्न यह होता है कि उन्होंने किस प्रकार का मार्गदर्शन किया? एक शब्द में कहना हो तो उनका उपदेश है कि तुम स्वयं समर्थ बनो, दूसरे के हाथ में अपना हाथ मत दो। स्वयं भगवान महावीर अपने परमप्रिय शिष्य इंद्रभूति का उद्धार नहीं कर सके, वे हमारा उद्धार क्या करेंगे? इंद्रभूति ने भगवान का भरोसा किया, किंतु जब तक अपना हाथ उनके हाथ में रखा इंद्रभूति वीतरागी नहीं हुए। जब उन्होंने अपना सामर्थ्य पहचाना तब ही वे वीतरागी होकर मुक्त बने। इसी सामर्थ्य की पहचान देकर भगवान महावीर ने मार्गदर्शन किया है। उनका कार्य वहीं समाप्त हो गया। अब जो कुछ करना है, हमें ही करना है। जब तक हम स्वयं कुछ नहीं करते हमारी सहायता कोई नहीं कर सकता। भगवान के गुणगान करने से ही हमारा उद्धार नहीं होगा। उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने पर हमारा उद्धार हो

सकता है। भक्ति के गान से गाने का आनंद तो मिल सकता है, किंतु गुण का नहीं। उसके लिए तो गुणी बनना पड़ेगा। गायक बनने से काम नहीं चलेगा।

सहकार के इस युग में यह उपदेश असहकार के लिए तो प्रेरित नहीं करता? यह एक प्रश्न है। सब अपनी-अपनी डफली बजाने लगें तो क्या अव्यवस्था का साम्राज्य नहीं होगा? इसका उत्तर हमें सोचना है। बराबरी की हैसियत वालों में सहकार होता है। गुलाम और मालिक में सहकार नहीं हो सकता। गुलाम में भी वही सामर्थ्य हो जो उसके मालिक में है तभी उन दोनों में सहकार संभव है अन्यथा तो सेव्य-सेवक भाव ही रहेगा। यह बात सिर्फ व्यक्तियों के विषय में ही नहीं, छोटे-बड़े देशों के विषय में भी लागू होती है। बड़े देश यह समझें कि छोटों में तो कुछ ताकत नहीं, वे सदा हमारे मोहताज ही बने रहें और वे हमारी सहायता पर ही निर्भर रहें तो ऐसे असमर्थ छोटे-छोटे पराधीन देशों को अपने साथ रखकर भी वह बड़ा देश अपना सामर्थ्य घटाता ही है, बढ़ाता नहीं। अतएव सामर्थ्य तो सब में होना ही चाहिए और सभी को अपना सामर्थ्य बढ़ाना भी चाहिए।

देखना है यह सामर्थ्य एटम बम का है या आत्मा का? भगवान महावीर का कहना है कि एटम बम का सामर्थ्य आत्म बम के सामने कुछ भी नहीं। अमेरिका ने एटम बम का आविष्कार करके समझा था कि अब वो सर्वोपरि हो गया, किंतु जैसे ही पता लगा कि रूस ने भी आविष्कार कर लिया है तो उसकी निर्भयता समाप्त हुई। आत्मबल पर विश्वास करने वाले व्यक्ति या राष्ट्र की निर्भयता कभी इस प्रकार समाप्त नहीं होती। अपने जैसा सामर्थ्य दूसरों में देखकर वे भयभीत नहीं होते, किंतु समझते हैं कि निर्भयता का साम्राज्य बढ़ रहा है। भय भाग रहा है। संसार के लिए इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि भय निर्मूल होता जा रहा है। भगवान महावीर के उपदेशों से यही तथ्य हमें जानने को मिलता है। उनकी जयंती के अवसर पर इसी तथ्य को अपने जीवन में उतारने की प्रतिज्ञा करके हम भी एक दिन महावीर बनें और उनके उपदेशों को सार्थक सिद्ध करें।

आत्मदर्शन की भूमिका तैयार करनी है तो इस भूमिका को बिगाड़ने वाले प्रतिपक्षी अरियों (शत्रुओं) को समझ लेना चाहिए, क्योंकि इन अरियों का हनन करने पर ही अरिहंत पद के रूप में आत्मदर्शन की भूमिका सुदृढ़ बन जाती है। इन शत्रुओं को समझ लें तो इनसे युद्ध करने की रणनीति भी समझ लेनी होगी, तभी उनके आक्रमणों से आत्मा का बचाव और उन पर सफल आक्रमण किया जा सकेगा। इस दृष्टिकोण से जो आत्मा के अरि हैं, वे हैं आठ प्रकार के कर्म। वे आत्मा के साथ संलग्न होकर इसके विकास के बाधक बने हुए हैं।

आत्मा की शक्ति बहुत विशाल होती है। आत्मा संसार के सारे पदार्थों का ज्ञान कर सकती है। इतनी व्यापक क्षमता और योग्यता इस आत्मा में होती है। वह क्षमता और योग्यता सभी आत्माओं में है और आपकी आत्मा में भी है, लेकिन क्या आप उस क्षमता और योग्यता को प्रकट कर पा रहे हैं? यदि नहीं कर पा रहे हैं तो क्यों नहीं कर पा रहे हैं? इसलिए कि आपकी आत्मा के पीछे भी दुश्मन पड़े हुए हैं। वे दुश्मन आठ तरह के कर्म हैं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

संस्कार सौरभ

Discovering Goodness : Nurturing a Well-rounded Personality

-Urja Mehta, Indore

In the symphony of life, our personalities are composed of a harmonious blend of virtues that shape our character and define our essence. Among these virtuous melodies, humility, loyalty, compassion, integrity, and gratitude resonate as timeless classics, guiding us on a journey of self-discovery and growth.

But sometimes, in today's busy world, these good qualities can be hard to see. We might get too caught up in trying to impress others or focusing on ourselves. But deep down, these qualities are still there, waiting to be found.

We can find kindness by thinking about others and being humble about ourselves. Loyalty means sticking by the people we care about, even when times get tough. Being compassionate means helping others and showing we care. Integrity means doing the right thing, even when no one is watching. And gratitude means being thankful for the good things in our lives.

So, even though it might be hard sometimes, we can uncover these good qualities by being thoughtful, sticking by our friends, helping others, doing what's right, and saying thank you.

In the tapestry of our lives, virtues weave a rich and vibrant pattern, illuminating our path with wisdom, compassion, and grace. As we journey forward, let us embrace these timeless virtues, nurturing a well-rounded personality rooted in humility, loyalty, compassion, integrity, and gratitude. Let us uncover the hidden treasures within us and share their radiant light with the world.

When we do that, we'll discover the best parts of ourselves and make the world a better place.

प्रश्नोत्तरी

ज्ञान का खजाना, इसी में है पाना

प्रश्न 1. प्रभु महावीर ने साधकों से क्या कहा है?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 2. व्यवहार कुशल व्यक्ति के लिए किसका ज्ञाता होना आवश्यक है?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 3. अपदों में महान् किसे कहा गया है?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 4. सुई लौटाने के लिए विहार किन्होंने किया था?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 5. प्रस्तुत अंक से एक वैरागन और उनके काका जी का नाम लिखिए।

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 6. बहुश्रुत मुनि की विशेषताओं को किससे उपमित किया गया है? पाँच उपमाएँ लिखें।

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 7. एकेंद्रिय जीवों में सबसे कम एवं सबसे अधिक चेतना किसमें होती है?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 8. कौनसा काल महान् बताया गया है?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 9. जो देव भी हों और गुरु भी हों, बताइए कौन?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 10. गोशालक ने तेजोलेश्या से किसको भस्म किया था?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 11. लोकसार अध्ययन में आचार्य की तुलना किससे की गई है?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 12. जिसने ज्ञान को चारों ओर से निकट कर लिया, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 13. एक संथारा साधिका महासती जी?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 14. मनुष्य जीवन में भटकन किसमें है और बोध किसमें?

उत्तर .... पेज सं.: ....

प्रश्न 15. ऐसा व्यक्तित्व जिससे अधिक या आगे कुछ न हो?

उत्तर .... पेज सं.: ....

नोट :-
1. सभी प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखने हैं।
2. उत्तर इसी अंक में से लिखने हैं।
3. उत्तर के साथ कोष्ठक में पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।

आप अपने प्रत्युत्तर 15 मई 2024 से पूर्व WhatsApp No. 9314055390 पर भिजवा सकते हैं।

भक्ति रस

बरगद जैसे आचार्य हमारे

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

आत्मा के भीतर दबी गहरी अभिलाषा ही,
देती है श्रद्धा को वेग।
और यह मोक्ष की गहरी अभिलाषा ही,
कहलाती है संवेग।।

बरगद का छोटा सा बीज भी,
असीम विस्तार को पाने के चिंतन से।
भीतर रही अनंत संभावनाओं के,
सतत् सिंचन से
दिनकर से लेता है उम्मीदों की किरणें।
तपता है रात-दिन,
वसुंधरा की अंधेरी कोख में।।

उम्मीदों की मिट्टी में,
मिटा देता है स्वयं को।
टूटकर भी नहीं खोता है,
जीने की संभावनाओं को।।

हौसलों की हवाएँ पुकारती हैं,
निकल जरा! निराशाओं के गर्त से।
आशाओं के चरण चूमकर,
आत्मविश्वास का सवेरा तो देख जरा!

गगन छूने की संभावनाओं को जी जरा,
पंख लगा ले उम्मीदों के।
श्रद्धा से भर ले घट को,
अभिलाषाओं के घूँट पीकर।।

सुन! बीज ने ली अंगड़ाई।
चटक उठी धरती,
और दर्द भी में भी मुस्कुराई।

कहा, जागो सुत!
अनंत-अनंत संभावनाएँ हैं इस जहाँ में।

तुम्हें विस्तार को पाना है,
अपनी बाँहों को चहुँओर फैलाना है।
निराशा की तपती धूप से,
जलते हुए लोगों को सुकून पहुँचाना है।

बैठ सके वह तुम्हारी शीतल छाया में,
चुन सके संभावनाओं के बीज।
और पा सके तुमसा विस्तार।।

हुँकार भरी बीज ने,
उम्मीद की जुस्तजू के साथ।
असीम विस्तार को पाने पर भी,
नहीं आया उसे कभी अहंकार।

संवेग के वेग से चलित,
छूता रहा सदा निर्वेद के भाव।
हरदम झुक-झुककर नम्र भाव से,
पखारता रहा अपनी जननी के पाँव।

कुछ ऐसे ही बरगद जैसे आचार्य हमारे,
आसमां को छूते पर जमीन को पकड़े।
जिनशासन की जड़ों से जुड़े,
शाखाओं का विस्तार ज्यों
गुरुवर राम खड़े हों अपनी शाखाएँ फैलाए,
मन के भाव कुछ यूँ दर्शाए,
कुछ देर तो बैठो धर्म की छाँव में,
पूरी हो जाएँगी मोक्ष की अभिलाषाएँ।।

भक्ति रस

हे मेरे आराध्य! हे मेरे भगवन्!

-संकलित

मन थोड़ा तो निखर,
अभी तो चढ़ना है विरक्ति का शिखर।

हे मेरे आराध्य! हे मेरे भगवन्!
कितने ही मना लूँ मैं पर्व पर्युषण त्यौहार,
कितने ही कर लूँ व्रत-पच्चखान,
पर निकले ना मेरे मन से,
क्रोध और ईर्ष्या की गठान
तो मेरा तप करना है बेकार।।

जाऊँ स्थानक मैं, रोज करूँ दर्शन-वंदन।
पर निकले ना मेरे चित्त से,
स्वार्थ लोभ और मोह की गठान,
तो मेरा दर्शन-वंदन करना है बेकार।।

करूँ भक्ति तेरी, हर पल तेरा ध्यान धरूँ।
पर निकले ना मेरे मन से,
मैं और मेरेपन का भाव,
तो मेरी यह उपासना भी है बेकार।।

चाहे मैं ले लूँ वैराग्य या रख लूँ मौन,
पर मेरी इच्छाओं-वासनाओं का शमन ना हो।
देह के प्रति ममत्व कम ना हो,
तो वह साधना भी मेरी है बेकार।।

हे मेरे आराध्य! हे मेरे भगवन्!
चाहे करूँ मैं प्रार्थना कितनी ही,
हर पल तेरा नाम रटूँ।
पर मेरे जीवन में गुरुवर,
करुणा, मैत्री, आनंद प्रगट ना हो,
तो आपश्री के साथ भी मेरा संबंध है,
झूठा, मिथ्या, और बेकार।।

हे मेरे आराध्य! हे मेरे भगवन्!
मैं फाल्गुनी पर्व के उज्ज्वल प्रभात में,
आपश्री के पवित्र चरणों में करती हूँ वंदना।
नीरव एकांत में बैठकर हजारों विषयों में रत,
इच्छाओं को वश में कर
आपश्री के ध्यान में स्थिर होती हूँ।।

आपकी दिव्य ऊर्जा अपने भीतर लेती हूँ
और अपनी मलीनता बाहर करती हूँ।
आपकी पवित्रता ग्रहण करती हूँ और
अपनी निम्न वासनाओं को बाहर फेंकती हूँ।।

आपकी करुणा व कृपा को भीतर लेती हूँ
अपने अहंकार व लोभ को तिलांजलि देती हूँ।
आप में रहे आनंद व शांति को
ग्रहण करती हूँ और अपने
रोग, शोक, अभिमान को, मुझ में रही
सारी दुर्बलताओं को निकाल फेंकती हूँ।।

हे मेरे आराध्य! हे मेरे प्रभु!
आपकी शाश्वत ज्योति को ग्रहण करती हूँ।
और अपने भीतर के मैं को विदाई देती हूँ।
प्रत्येक श्वास के साथ आपका गुण स्मरण कर
पवित्र भाव में आनंदित हो रही हूँ
और वैराग्य के शिखर पर,
धीरे-धीरे चढ़ रही हूँ,
थोड़ा-थोड़ा निखर रही हूँ।।

भक्ति रस

देशनोक का सिंह गजब

-मोहन बाफना, रायपुर

ऊपर बैठा देख रहा सूरज,
अनाचार धरा पर खूब हुआ।
खौल उठा रक्त उसका भी,
क्रोध से अंबर लाल हुआ।।
काँप उठी मासूम किरणें भी,
जिगर उनका भी हलाल हुआ।
रश्मियों ने पंख समेटे अपने,
हाल उनका भी बेहाल हुआ।।
फड़कने लगी कलम कवियों की,
नील रक्तस्राव हुआ।
कुछ छींटे पड़े रक्तिम अंबर पर,
जैसे तारिकाओं का छिड़काव हुआ।।
बाँचकर नील रक्त से सनी पाती,
हृदय चंद्र का भी विह्वल हुआ।
प्रत्युत्तर में भेजा शीतल किरणों को,
मन कवियों का प्रशांत हुआ।।
किरणों को लेकर अपने साथ,
चाँद चला सूरज का करने उपचार।
लगाया चाँदनी ने शीतल लेप,
शांत हो गया सूरज का तेज।।

दोनों ने अपनी किरणों को मिलाया,
उसे एक इनसान बनाया।
चाँद सूरज का तेज जिसमें समाया,
वह धरती पर सद्गुरु कहलाया।।
चाँद से ली उम्मीदें,
घट-बढ़ में भी तटस्थ व शांत रहूँ।
सूरज से लिया हौंसला,
जलूँ व जग को प्रकाश दूँ।।
हौंसलों व उम्मीदों के लेकर चिराग,
राम पग-पग करने लगे विहार।
अपने तक ही ना रखूँ प्रकाश,
चलूँ और जग को बाँट दूँ उजास।।
तब गूँजने लगी धीर गंभीर वाणी,
संभलने लगे धरती पर नर-नारी।
पुचकारा धरा को लगाया मरहम,
देशनोक का सिंह यह गजब।।
दहाड़ उनकी शौर्य जगाती मन में,
शांति उतर आती जीवन में।
धरती अंबर चाँद सितारे,
मोहन कहे सद्गुरु राम तुम तारणहारे।।

प्रभु ने स्वाध्याय के पाँच भेद कहे हैं- वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। अनुप्रेक्षा करेंगे तब ही धर्मकथा के अधिकारी बनेंगे अन्यथा नहीं। वाचना गुरु-मुख से हो, परंतु क्या ऐसा होता है? छापेखानों के कारण आगम सर्वसुलभ हो गए हैं और गाँव-गाँव, घर-घर में आगम उपलब्ध हैं। इसे लोग अपना सौभाग्य मान सकते हैं। पर मैं कहता हूँ- यह हमारा दुर्भाग्य है। प्रकाशन जितना बढ़ा है, उतना ज्ञान नहीं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

भीलवाड़ा का भाग्य खिला। गुरु राम का चातुर्मास मिला।।

"धर्म से ही शांति और समाधि की प्राप्ति - आचार्य श्री रामेश

सद्गुरु सच्ची राह दिखाते हैं - उपाध्याय प्रवर

युग निर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के सान्निध्य में मंगलवाड़ में होली चातुर्मास पर लगा चतुर्विध संघ का ठाठ, आपश्री जी द्वारा वर्ष 2024 के लिए चातुर्मासिक घोषणा से सर्वत्र खुशी की लहर, आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का आगामी चातुर्मास सभी आगारों सहित भीलवाड़ा संघ के लिए घोषित, 9 जून का जैन भागवती दीक्षा प्रसंग बेगूँ संघ के सौभाग्य में

मुमुक्षु सौरभ जी भूरा की दीक्षा 9 जून के लिए स्वीकृत, मंगलवाड़ बना तीर्थधाम

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा।

जन-जन के मुख पर गुरु राम का नाम है,
लाखों के जीवन का आधार आपका पैगाम है।
किन-किन गुणों का वर्णन करूँ गुरु रामेश आपके,
इसी कलिकाल में आप ही हमारे सच्चे भगवान हैं।।

स्व-पर कल्याण की साधना में अहर्निश गतिमान वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रान्ति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा अध्यात्म की अमृत वर्षा कर जन-जन को सन्मार्ग का बोध करा रहे हैं। मंगलवाड़ में ऐतिहासिक होली चातुर्मास के पावन प्रसंग एवं चातुर्मासिक उद्घोषणा दिवस पर समवसरण-सा अद्भुत दृश्य परिलक्षित हुआ। देश-विदेश से श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ पड़ा। आतुर-उत्साहित जनता भीलवाड़ा चातुर्मास 2024 एवं अन्य चातुर्मासिक उद्घोषणाओं तथा 09 जून को बेगूँ में जैन भागवती दीक्षाओं की स्वीकृति से हर्षविभोर हो उठी।

भीलवाड़ा में प्रथम बार साधुमार्गी संघ के आचार्य का चातुर्मास होने से श्रद्धालु खुशी से झूम उठे। **18 वर्षीय मुमुक्षु सौरभ जी भूरा, देशनोक** के परिजनों ने गुरुचरणों में दीक्षा अनुज्ञा-पत्र समर्पित कर अपनी आस्था का परिचय दिया। आचार्य भगवन् के श्रीमुख से जैसे ही **09 जून** के लिए सौरभ जी भूरा की दीक्षा की घोषणा हुई सर्वत्र हर्ष की लहर छा गई। मंगलवाड़ चौराहा में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ व जैनेतर जनों ने एकासन, आयंबिल, उपवास, बेला, तेला की लड़ी के साथ प्रतिदिन सामूहिक दया, संवर, पौषध आदि में बढ़-चढ़कर भाग लेकर नवइतिहास का सृजन कर दिया।

16 मार्च 2024

धर्म ही है प्राणियों को विश्राम देने वाला

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रात:कालीन प्रार्थना में मन की असीम गहराइयों से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने उपस्थित अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की अमृतवाणी से पावन करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''पाँच इंद्रियों के सेवन से संसार के विषय प्रसन्नता देने वाले नहीं है। प्रमाद के प्रवाह में मति विपरीत हो जाती है और मन कमजोर हो जाता है। मंगल ही पापों का नाश करने वाला है। पुण्य के कार्य अल्पकालीन लाभ देने वाले होते है, जिन्हें अल्पकालीन विश्राम कहा जा सकता है। धर्म ही प्राणियों को विश्राम देने वाला है। अपनी आत्मा के लिए कार्य करके भावों की समाधि में रमण करते हुए आठों कर्मों का क्षय कर आत्मा को सिद्ध अवस्था में पहुँचाने का लक्ष्य बनाएँ। आग को ईंधन के तत्त्व से नहीं बुझाया जा सकता। प्रतिरोधी तत्त्व पानी, बालू का उपयोग करके आग को सीमित किया जाता है। धर्म से ही शांति और समाधि मिलेगी। धर्म में एकमेक हो जाएँ, अणगार बनें तो सर्वश्रेष्ठ नहीं तो व्रतधारी श्रावक अवश्य बनें।''**

कुछ भाई-बहनों ने माह में एक दया करने का प्रत्याख्यान लिया। श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने गीत **'मेरे प्राणों के आधार वंदन है बारंबार'** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमारी गुरुभक्ति निष्काम होनी चाहिए। तेले में अठाई का प्रत्याख्यान भूपाल सिंह जी मांडावत ने लिया। घर में प्रतिदिन 10 मिनट नवकार महामंत्र जाप करने का नियम कई जनों ने लिया। आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु निकुंभ संघ ने पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रवचन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें एवं अन्य ज्ञानवर्द्धक ज्ञानार्जन करवाया। समता युवा संघ, भीलवाड़ा ने आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

17 मार्च 2024

विनय की आराधना से ही सरलता

समता भवन, मंगलवाड़। प्रात:कालीन शुभ बेला में रविवारीय समता शाखा का विशाल आयोजन समता भवन में हुआ। आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम से अपना जीवन धन्य बनाने हेतु गुरुभक्तों की उपस्थिति गुरु समर्पणा की द्योतक थी।

प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं को पावन अमृतधारा से आत्मतृप्त करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''मन की कोमलता एवं भद्रता से ही धर्म में प्रीत बनी रहती है। भगवान व धर्म में प्रीत लगते ही हमारा मन कोमल बन जाता है। द्विजातीय संयोग से दिल कठोर हो जाता है।**

प्रवचन कठोर मन को कोमल बनाता है। अहंकार व छिपाने का भाव दिल को संकुचित करता है। विनय धर्म का मूल है। विनय से ही आठों कर्मों की कठोरता दूर हो मन में सरलता आती है। सरलता से ही प्रसन्नता मिलती है। जीवन में सरलता आने से प्रसन्नता मिलती है तथा जीवन सुधरता है। हमारे जीवन व्यवहार से दूसरे प्रभावित होने चाहिए। जम्बू स्वामी के व्यवहार से खूँखार डाकू प्रभव का जीवन भी बदल गया। संतों के सान्निध्य में मनोभूमि सही बनती है, विनय की आराधना होती है, अहंकार नष्ट होता है और जीवन बदलने का लक्ष्य बनता है।''

संथारा साधिका नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का आज 9वाँ दिन था। प्रतिदिन एक विगय का त्याग करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। युवाओं का बौद्धिक शिविर आयोजित किया गया।

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने **'अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बने'** भाव गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हम बच्चों को कार दें या न दें, पर संस्कार अवश्य दें। आज बाल-युवा पीढ़ी गलत संगत में पड़कर व्यसन, फैशन में अपना जीवन बर्बाद कर रही है। गलत कार्य करने से पूर्व माता-पिता, गुरु व प्रभु को याद कर लें और तत्पश्चात् यह विचार करें कि यह कार्य करने योग्य है या नहीं है।

साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. ने **'गुरुवर का आशीष हमें मिल जाए'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर निरंतर करुणा का झरना बहाते हुए पंचम आरे में चौथे आरे की झलक दिखा रहे हैं। मंदसौर एवं निकुंभ संघ ने आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

18 मार्च 2024

शब्द, रूप के आकर्षण से बनें मुक्त

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रात: प्रार्थना में **'शुभ मंगल हो, हर दिन मंगल हो'** द्वारा धर्म लाभ लिया गया। धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''मनुष्य जीवन के अंधकार में भटकन और प्रकाश में बोध है। आँखें खोलकर हम बोध प्राप्त करते हैं। श्री आचारांग सूत्र में प्रभु महावीर ने फरमाया है कि कौन ज्ञानवान है? जो शब्द, रूप, रस, गंध, स्वाद, स्पर्श को जानता है, वह ज्ञानी है। जो वस्तु के गुणधर्म को जानता है, उसे अनुभव में उतारता है और उसके प्रभाव का सही उपयोग करता है, वह ज्ञानवान है। उपदेशों को जीवन में उतारना दुनिया का सबसे कठिन कार्य है। शब्द का अज्ञान व्यक्ति को परेशान करता है। रूप को देखकर अपनी आँखें चंचल बन जाती हैं। रूप की अज्ञानता में आँखें होश खो देती हैं। ज्ञान व आचरण का एकमेक हो जाना ही आत्मज्ञान है। शब्द, रूप के आकर्षण से मुक्त होकर ही हम आत्मकल्याण के मार्ग पर कदम बढ़ा सकते हैं। हरिजन कुल में उत्पन्न काले-कलुटे हरिकेश मुनि अत्यंत तपस्वी थे, अत: देवता भी उनको नमस्कार करते थे। आचरण में बदला ज्ञान जीवन बदल देता है। शब्द, रूप की पहचान में फर्क ही हमारी अज्ञानता है। तप, संयम, साधना के प्रभाव से देवता भी नमस्कार करते हैं। साधना सिर्फ साधुओं के लिए नहीं होती है अपितु जो सुखी बनना चाहता है उसके लिए भी है।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने **'जन्म-जन्म का दास हूँ, गुरुदेव तुम्हारा'** भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि झूठ नीति एवं पाप क्रिया को छोड़कर न्याय नीति व ईमानदारी पूर्वक जीवन जीने का प्रयास करें। मृत्यु से पहले सावधान हो जाएँ। सावधानी हटी दुर्घटना घटी।

सुश्राविका भंवरी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री धूड़मल जी डागा, गंगाशहर के निधन पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में उपस्थिति होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। कई जनों ने पक्खी प्रतिक्रमण करने का संकल्प लिया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्मस्थानक में ध्यान रखने योग्य बातें विस्तार से समझाई। कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। तेले में अठाई के प्रत्याख्यान मार्शल नलवाया, मंदसौर ने लिया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित अनेक श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

19 मार्च 2024

सही दिशा में ले जाता है सही ज्ञान

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् धार्मिक तत्त्वज्ञान कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. द्वारा ज्ञानार्जन करवाया गया।

प्रात:काल की पावन बेला में धर्मसभा में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति आचार्य प्रवर के प्रति नतमस्तक हो धर्म तत्त्व से जीवन सार्थक बनाने की दिशा में अग्रसर हो रही थी। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी में सभी को धर्म के मार्ग पर प्रशस्त करते हुए फरमाया कि **"ज्ञान में परिवर्तन होते ही व्यक्ति के आचरण में तुरंत बदलाव आने लग जाता है। ज्ञान का जीवन में बड़ा महत्त्व है। सही ज्ञान सही दिशा में एवं गलत ज्ञान गलत दिशा में ले जाता है। ज्ञान से ही जीवन में बदलाव आता है। बदलाव लाने वाला तत्त्वबोध है, जो वस्तु तत्त्व की वास्तविकता को पहचान लेता है। बदलाव के तत्त्वबोध का प्रभाव सबसे अधिक सरल हृदय पर पड़ता है। उदाहरणार्थ- आर्य सुधर्मा स्वामी का एक प्रवचन सुनते ही जम्बू स्वामी का जीवन परिवर्तित हो गया। जम्बू के भीतर सोया शेर जाग गया। जम्बू की बुद्धि विकसित व विस्तृत हो गई। जिस ज्ञान पर श्रद्धा नहीं वह ज्ञान, ज्ञान नहीं अज्ञान है। असली-नकली का वास्तविक मूल्यांकन आधुनिक समय की मुख्य आवश्यकता बनता जा रहा है। पुराने जमाने में जौहरी सोना, चाँदी, हीरे, मोती, जवाहरात की सत्यता की पहचान अपनी आँखों से कर लेता था। वर्तमान में इनकी सत्यता की पहचान दुष्कर कार्य हो गया है। इसके लिए प्रयोगशालाओं का उपयोग किया जाता है। यदि हमारा श्रम हमारी पहचान व ज्ञान को सही दिशा में ले जाने वाला है तो निश्चित रूप से हमारा जीवन परिवर्तित होगा।"**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आसक्ति पतन की ओर ले जाने वाली है। धन, परिवार, मोबाइल आदि से आसक्ति दूर कर अनासक्ति की दिशा में अपना कदम आगे बढ़ाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री समता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'उपाध्याय प्रवर बहुश्रुत पूज्यवर घट-घट में तेरा वास है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

माह में एक दिन मोबाइल उपयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। आदर्श विद्या निकेतन स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री पल्लव श्री जी म.सा., साध्वी श्री वाचना श्री जी म.सा. का महाराष्ट्र से लंबा विहार कर गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने गोचरी व धोवन पानी की विधि पर गहराई से प्रकाश डाला। बानसेन से 22 किमी. का उग्र विहार कर श्री लाघव मुनि जी म.सा. एवं श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। सायंकालीन प्रतिक्रमण पश्चात् ज्ञानचर्चा में श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने चोकड़ी के 33 बोल की व्याख्या की। विभिन्न संघों ने क्षेत्र स्पर्शने तथा 2024 के चातुर्मास हेतु विनतियाँ गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

20 मार्च 2024

वर्तमान बदलने पर बदलता है भविष्य

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। **'म्हारे नैणां में आओ बस जाओ महावीर'** भजन के माध्यम से प्रात:कालीन

प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। प्रार्थना पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने युवाबोध शिविर में पाँच अभिगम, धर्म स्थान में प्रवेश के लिए नियम, गोचरी-धोवन के करणीय-अकरणीय क्रियाओं का ज्ञान करवाया गया।

धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी सिंहगर्जना के साथ फरमाया कि "**अतीत व भविष्य के बीच में चमत्कारी तत्त्व वर्तमान विद्यमान है। वर्तमान प्रत्येक तत्त्व के लिए महत्त्वपूर्ण है। पूरी ताकत वर्तमान के पास है। यही महापुरुषों के उत्कर्ष का निष्कर्ष है। वर्तमान में सावधानीपूर्वक धर्म मार्ग पर अग्रसर व्यक्ति ही सफलता की चरम ऊँचाइयों को छूता है। वर्तमान बदलने पर भविष्य बदलता है। एक शंका का भाव उत्पन्न होने से वर्तमान बिगड़ जाता है। उदाहरणार्थ- प्रभु महावीर का दामाद श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, आचरणवान होने पर भी धर्म विराधक बन गया। उसने अपना भविष्य बिगाड़ लिया। हमारे पास रहा अतीत भविष्य नहीं है। अतीत के स्मरण को संचित रखने से वर्तमान बिगड़ जाता है। तनाव, चिंता, भय, मान, अभिमान, भोजन पर आसक्ति सभी बीमारियों की जड़ है। हमारे साता वेदनीय व असाता वेदनीय कर्मों का उदय व क्षय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पर निर्भर करता है। सनत् कुमार चक्रवर्ती सम्राट ने 16 गंभीर बीमारियों से ग्रसित होते हुए संयम अंगीकार किया। भोजन पर अनासक्ति भाव से रोगों को उभरने नहीं दिया। समय की सार्थकता को समझते हुए, वर्तमान में मस्त रहते हुए, मैत्रीपूर्ण प्रसन्नचित्त, आनंदित मन में रमण करते हुए अपने जीवन को उन्नत बनाने एवं जीवन सफल बनाने का लक्ष्य रखने से ही हमारा कल्याण संभव है।**"

आज के पावन दिवस पर 101 सामूहिक दया में 21 घंटे की दया का आयोजन किया गया। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने टी.वी., मोबाइल से जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला।

रिलाइएबल पब्लिक स्कूल में व्यनसमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। दोपहर में श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने प्रव्रज्या के प्रकारों की विस्तृत व्याख्या की। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने पृथ्वीकाय आदि जीवों की व्याख्या की। बालक-बालिकाओं में सुंदर संस्कार निर्माण की जानकारी श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दी।

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारा भदेसर में 12वें दिन भी जारी रहा। इस उपलक्ष्य में 12 नवकार महामंत्र गिनने, 12 लोगस्स आदि अनेक प्रत्याख्यान हुए। शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का उदयपुर से गुरुचरणों में पधारना हुआ। एकासन, आयंबिल, उपवास, तेला, बेला आदि के प्रत्याख्यान हुए।

21 मार्च 2024

भयग्रस्त रहता है गलत व्यक्ति

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना के आयोजन में **'धर्म ध्यान का हो उजियाला, हे प्रभो पंच परमेष्ठी दयाला'** के माध्यम से आत्मभावों से प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने उपस्थित सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं को अपने प्रेरणादायी प्रवचन के माध्यम से संबोधित करते हुए फरमाया कि "**आत्मा में अनंत शक्तियाँ छुपी हुई हैं, जो 18 पापों को त्याग कर इस लोक से उठाकर परलोक में ले जाती हैं, परंतु हमारी शक्तियों को रोकने वाला मोहनीय भय है। भय ही हमारे विकास एवं सफलता को रोकने वाला है। अच्छे विचारों के सामने भय आकर खड़ा हो जाता है। हर घटना में भय के विचारों की तरंगें हमारे मन को आशंकित करती रहती हैं। निर्भय होकर ही हम सब कुछ कर सकते हैं। अभय का भाव पैदा होने पर व्यक्ति अपना चहुँमुखी विकास कर सकता है। शास्त्रकारों के 7 प्रकार के भय बताए हैं, जिनमें अंतिम भय 'अपमान का भय' सबसे बड़ा भय है। इसमें व्यक्ति सोचता है कि कहीं मेरा नाम खराब नहीं हो जाए। गलत व्यक्ति ही भयग्रस्त रहता है और उसी कारण उसका मन आशंकित रहता है। सुभद्रा का सत्य पर अटूट विश्वास**

था, वह निर्भय थी। गुरु व साधु हमें निर्भय होने की प्रेरणा देते हैं, जिससे हम हमारे चहुँमुखी विकास की ओर कदम बढ़ा सकें और हमारा कल्याण कर सकें।''

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थिति में शांत-प्रशांत रहें। मैं जैसा भी हूँ, अच्छा हूँ। अपनी तुलना दूसरों से नहीं करें।

साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा. ने **'जिनवाणी सुनना है, आराधक बनना है'** श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। जिनवाणी पर श्रद्धा और संयम में पुरुषार्थ दुर्लभ हैं। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री राजमति श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, वीर बाफना परिवार निफाड़ सहित अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में बच्चों को श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जीवन निर्माण की नवीन शिक्षाएँ प्रदान की। आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए।

22 मार्च 2024

आत्मा में निवास करने वाला सुरक्षित

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रातः शुभ मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर ने तेजस्विता से भरपूर अपनी पावन वाणी में जन-जन के हृदयों को जिनवाणी से परिपूर्ण करते हुए फरमाया कि **''भगवान की दृष्टि में मेरा कोई नहीं है। मैं किसी का नहीं हूँ। व्यक्ति निर्लिप्त बनकर ही साधना के पथ पर अपने कदम बढ़ा सकता है। व्यक्ति स्नेह को तोड़कर ही सुरक्षित रह सकता है। आत्मा में निवास करने वाला व्यक्ति ही सर्वाधिक सुरक्षित है। सांसारिक बंधनों से बँधा हुआ व्यक्ति भयग्रस्त रहते हुए अपने आपको सर्वाधिक असुरक्षित महसूस करता है। जब मन में आत्मज्ञान की किरण जग जाती है कि मेरा कौन है? मेरा कोई नहीं है। मैं किसी का नहीं हूँ तो उसे संसार कचरा लगने लग जाता है। अनाथी मुनि का जीवन दृष्टांत हमारे सामने है। एकत्व भाव में पुद्गलों का संयोग हमें आत्मरमण करने से रोकने वाला है। इस धरा पर सब धरा ही रह जाएगा। जब यह आत्मचिंतन भीतरी शक्ति में जाग्रत होगा तब ही हमारा जीवन धन्य बन सकेगा। एकांत में हमारा मन शांत-प्रशांत बना रहे इसलिए गुरु हमें अकेलेपन की शिक्षा देते हैं। तत्त्वज्ञान में निपुण व्यक्ति से सहयोग अपेक्षित होने पर ही हमारा कल्याण संभव है।''**

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने अमूल्य समय को मोबाइल में बर्बाद न करने एवं स्वाध्याय साधना में सार्थक करने की प्रेरणा दी।

साध्वी श्री गुंजन श्री जी म.सा. ने 'काल के चार प्रकारों में से मरण काल में आत्मा का शरीर से अलग होना' विषय पर उद्बोधन में फरमाया कि काल को समझकर ही आत्मा सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो सकती है। साध्वी श्री सुविधा श्री जी म.सा. ने **'मेरे भगवान हो तुम'** भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर अपनी साधना, ऊर्जा एवं वात्सल्य से सभी को साधना के मार्ग पर आगे बढ़ा रहे हैं। हम भी सद्गुणों को जीवन में आगे बढ़ाएँ। साध्वीवृंद ने **'राम गुरु को वंदन करें'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने संस्कार निर्माण व तत्त्वबोध का ज्ञानार्जन बच्चों को करवाया। सुश्राविका मांगी बाई भंवरलाल जी सोनी, निम्बाहेड़ा के संथारा सहित महाप्रयाण पर गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति एवं संदेश प्राप्त किया।

23 मार्च 2024

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रातः भोर के आगाज पर **'मैं तो हूँ नादान प्रभु तेरी ही संतान जी, महावीर भगवान देना सद्ज्ञान जी'** भावपूर्ण प्रार्थना के पश्चात् युवाबोध शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने साधुचर्या के कल्पनीय-अकल्पनीय कल्पों पर विस्तृत प्रकाश डाला।

विशाल धर्मसभा में परम पूज्य आचार्य भगवन् ने उपस्थित अपार जनसमूह को भगवान महावीर की अमृतवाणी से पावन करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''अच्छे कार्यों में हमेशा विघ्न आते रहते हैं। साधुओं के 22 परीषह भी विघ्न के विषय हैं। कठिनाइयों का रोना रोने वाला जीवन में कभी भी सफल नहीं हो सकता। डूबने के भय से व्यक्ति तैरना नहीं सीख सकता। खतरों से खेले बिना जीवन में सफलता नहीं मिलती। लौटने की आशा लेकर आने वाला कुछ भी नहीं कर सकता। भगवान महावीर का मार्ग भी चुनौतियों से भरा है। अनेक कठिनाइयाँ इस मार्ग में खड़ी हैं। 56 इंच का सीना रखने वाला एवं कफन बाँधकर चलने वाला साधक ही सम्यक् साधना के मार्ग पर सफल हो पाता है। शादी की तैयारी कर रहा जम्बू कुमार बिना लक्ष्य लिए गतानुगति से आर्य सुधर्मा स्वामी के पास चला जाता है और तल्लीन होकर एक ही प्रवचन सुनकर सुधर्मा स्वामी से कहता है कि आपने फरमाया जो सत्य है। मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है। एक साँस के टूटते देर नहीं लगती। व्यक्ति के जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। फिर क्या था! जम्बू कुमार के हृदय में प्रबल वैराग्य भावना उत्पन्न हो गई और उन्होंने मन को जीत लिया। धन्ना सेठ ने सुभद्रा का एक वचन सुनकर मन को जीत लिया। पलभर में प्रबल वैराग्य के भाव पैदा हो गए और अपने जीवन को सफल बना लिया। संसारी जीवन तो चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात है। जब व्यक्ति धर्म की शरण में आ जाता है तो उसके दूसरे सब सहारे समाप्त हो जाते हैं। धर्म में जीवन जीने वाले की सब कठिनाइयाँ आसान हो जाती हैं। लोभ नहीं होने पर चिंता पैदा नहीं होती है। चिंता रूपी धुआँ ही जिंदगी की चिता सजा रहा है। हिम्मत वाले व्यक्ति के गले में ही विजय की माला पहनाई जाती है। जीवन का सुख पाना है तो त्यागी बनना आवश्यक है। मोह, ममत्व व अज्ञान को छोड़ने पर ही हमारा कल्याण संभव है।''**

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने श्रेष्ठ कार्यों व विचारों को जीवन में स्थान देने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री पल्लव श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु का स्मरण करने से संकटों से मुक्ति मिलती है।

कई लोगों ने होली पर्व रंग, गुलाल व पानी से नहीं खेलने का संकल्प लिया। आनंदमार्गी स्कूल में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया।

24 मार्च 2024

समाधान में जीता है श्रावक

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। आज का विशेष दिवस समता रविवारीय शाखा से धन्य होने को आतुर था। प्रातःकाल से ही भक्तों की अपार भीड़ आचार्य श्री रामेश के विशेष अवदान 'रविवारीय समता शाखा' के माध्यम से समता आराधना हेतु समता भवन की ओर अग्रसर थी। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रातःकालीन शुभ बेला में समता आराधना करवाई।

प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अपनी पावन दिव्यवाणी में श्रद्धालुजनों को धर्म की मूलता से परिचित करवाते हुए फरमाया कि **''संपूर्ण ज्ञान के द्रष्टा तीर्थंकर भगवान ही साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थों की स्थापना करते हैं। वे एकाकी साधना में पूर्ण सफल होने एवं केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद सामूहिक साधना पद्धति के अंतर्गत कारण, खोज, अनुसंधान की पराकाष्ठा पर परिपूर्णता की साधना करते हैं। चूंकि सभी लोग एकाकी नहीं हो सकते इसलिए सामूहिक साधना होती है। आठ गुणों से**

युक्त अणगार एकल विहार में साधना कर सकते हैं। गृहस्थ में रहते हुए श्रावक-श्राविकाएँ त्याग-प्रत्याख्यान में लीन रहते हुए धार्मिक क्रियाएँ एवं अनुष्ठान करते हैं। इसलिए उनको तीर्थ में समाविष्ट किया जाता है। सामान्य गृहस्थ उलझनों में उलझा रहता है। श्रावक समाधान में जीता है। उसकी मंजिल निश्चित होती है और वह उसी दिशा में कदम बढ़ाता है। उसकी यात्रा मंजिल दिलाने वाली होती है।''

आज होली फाल्गुनी चातुर्मासिक दिन होने से आचार्य भगवन् ने चौमासी प्रतिक्रमण का महत्त्व बताते हुए फरमाया कि ''आचरण पद्धति में प्रमाद के कारण हुई गलतियों के निस्तारण के लिए प्रतिक्रमण का प्रावधान किया गया, जिससे हमारी जीवनशैली नियंत्रित हो सके। साधु सुविधा में नहीं, अभावों में जीता हुआ ही अपनी साधना को सुरक्षित रख पाता है। विशाल मानव समुदाय की उपस्थिति में मानसिक शांति के लिए धर्मस्थान व संतों का सान्निध्य आवश्यक होता है।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी देशना में फरमाया कि ''**व्यक्ति अपने अलग उद्देश्यों में अपने मन को उलझाए रखता है। सद्गुरु ही हमें उलझन भरे मार्ग में सही राह दिखाते हैं। श्रद्धा व आस्था ही हमारे मार्ग के निर्धारणकर्ता हैं। जिसका आस्था का दीपक बुझ जाता है, वह चाहे 14 पूर्वों का ज्ञाता हो तो भी वह अज्ञानी है। ज्ञान कितना भी हो, जब तक आस्था मजबूत नहीं होगी तब तक ज्ञान का सही दिशा में अग्रसर होना नामुमकिन है। जब भीतर में संशय रहता है तो वह भटकाने वाला होता है। भीतर की सरलता शुद्धता प्रदान करने वाली होती है।**''

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने **'गुरुवर पधारो हृदय में विराजो'** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि गुरुदेव को मानसिक साता पहुँचे हमारा ऐसा प्रयास सदा होना चाहिए। साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पधारना हुआ। परम गुरुभक्त अजय जी पारख, राजनांदगाँव के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। प्रचुर संख्या में उपवास, पौषध, संवर, सामायिक आदि हुए।

मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती, दुर्ग एवं मुमुक्षु भाई सौरभ जी भूरा, देशनोक के गुरुदर्शनार्थ पदार्पण पर स्थानीय संघ की ओर से दोनों मुमुक्षु भाइयों तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष उमराव सिंह जी ओस्तवाल व परिवार का अध्यक्ष, मंत्री एवं सदस्यों ने शॉल, मोमेंटो, साफा आदि से बहुमान किया।

युवारत्न, परम गुरुभक्त, समता युवा संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष 39 वर्षीय मनीष जी पोखरना व उनकी धर्मपत्नी सरिता जी पोखरना ने युवावस्था में भौतिकता की चकाचौंध से दूर होते हुए आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान लेकर सभी के समक्ष आदर्श उपस्थित किया।

32 वर्षीय एक गुप्त युवा जोड़े ने आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान लेकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

25 मार्च 2024

आत्मा का गुणधर्म है समता भाव

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। **'शुभ मंगल हो दिन मंगल हो'** भजन की मधुर स्वर लहरी के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना में मंगल के भाव प्रस्फुटित हुए।

ओस्तवाल परिसर में आयोजित धर्मसभा में अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''हमारे पूर्वजों की पुण्याई से हमें यह जैन धर्म सहजता से मिल गया, इसलिए हम इसका मूल्य नहीं समझ पा रहे हैं। अखंड सत्य वाले धर्म में संसार सुरक्षित रहता है। धर्म की आराधना का लक्ष्य आत्मा में आनंद की अनुभूति करना है। मन में हीन भावना उत्पन्न नहीं हो, मन शांत रहे। पानी का स्वभाव शीतलता, गर्मी का स्वभाव

उष्णता है, उसी प्रकार हर वस्तु का अपना स्वभाव व गुणधर्म होता है। द्विजातीय भाव हटते ही वस्तु अपने मूल स्वरूप में आ जाती है। आत्मा का धर्म-स्वभाव समता व समभाव है। सामायिक मन की स्थिरता है। मन में आलोचना के भाव नहीं आते। विषमता के भाव राग-द्वेष, मोह तथा संक्लेश उत्पन्न करते हैं। छद्मस्थों में राग-द्वेष की हवा लगते ही मन तरंगित हो जाता है। इसलिए मन की कमजोरी का दमन आवश्यक है। अपना वचन पूरा करना ही विश्वास की चाबी है।''

'रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन न जाई' पर दृष्टिपात करते हुए नीतिशास्त्र के ज्ञान की व्याख्या करते हुए आपश्री जी ने फरमाया कि ''खर्च कम नहीं करने की सोचकर हमारे में कर्ज़ लेने की होड़ाहोड़ में हजारों कठिनाइयाँ व समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। हिम्मत हारने पर वे समस्याएँ पहाड़ बन जाती हैं। हिम्मत के बल पर ही कृष्ण वासुदेव रथ को हाथ में उठाकर लवण समुद्र को पार कर गए। उत्तम पुरुष में हिम्मत होने पर ही लाखों लोग उसका साथ व सहयोग देते हैं। जैसे भारत की आजादी में महात्मा गाँधी व भगत सिंह का लाखों भारतीयों ने साथ दिया। हमारी हिम्मत बचने के लिए नहीं, लक्ष्य प्राप्ति हेतु मरने की हो। प्रमाद छोड़कर धर्माराधना करने से ही हमारा कल्याण संभव है।''

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने 'चारों दिशाओं में राम, मन में बसाएँ गुरु राम' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें आलस्य, प्रमाद छोड़कर सामायिक, स्वाध्याय, ज्ञान-ध्यान में जीवन आगे बढ़ाना है। साध्वीवृंद ने भक्ति गीत प्रस्तुत किया। परम गुरुभक्त गौतम जी सांखला, दुर्ग के निधन पर पारिवारिकजनों ने आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री करुणा श्री जी म.सा. का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। देश के अनेक श्रद्धालु भाई-बहनों व संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित विपुल संख्या में गुरुभक्तों ने दर्शन-सेवा का लाभ लेते हुए धर्माराधना की। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा-समाधान एवं ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हुए।

26 मार्च 2024

चातुर्मास में नहीं होना चाहिए दिखावा, आडंबर, प्रदर्शन

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। आज चातुर्मासिक घोषणा का दिवस होने से देश के अनेक स्थानों से हजारों गुरुभक्तों का हुजूम उमड़ रहा था। प्रवचन प्रारंभ होने से पूर्व ही ओस्तवाल परिसर खचाखच भर गया। भक्तों के समक्ष धवल वेश में आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं संत-सती वर्ग की उपस्थिति हर्षित करने वाले थी।

धर्मसभा में धीर-वीर-गंभीर मुद्रा में आचार्य भगवन् के श्रीमुख से प्रवचन धारा का प्रवाह प्रारंभ हुआ। आपश्री जी ने अपनी दिव्यदेशना में उपस्थित जनसमूह को धर्मज्ञान प्रदान करते हुए फरमाया कि ''धर्माराधना करने का सुअवसर हमें मिला है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति, पंचेंद्रिय का योग, उत्तम कुल, आर्यक्षेत्र महान पुण्य के योग से मिलते हैं। इन सबसे बढ़कर हमें जिनेश्वर देव का शासन मिला है। जिस पर बढ़ते हुए अपनी आत्मा का परिमार्जन कर मोक्ष मार्ग की ओर गतिशील हो सकते हैं। साधु-साध्वियों के सहयोग से भी हम आत्मकल्याण की ओर अग्रसर हो सकते हैं। आत्मकल्याण निश्चित ही हो यह संभव नहीं है। हमारा उपादान ही काम आएगा। चातुर्मासिक विनतियों का सिलसिला चल पड़ा है। चातुर्मास स्वीकृति से पूर्व कुछ आगार रखे जाते हैं। अनावश्यक आरंभ का रूप न ले, इसलिए चातुर्मासिक नियमावली बनाई गई। युग आरंभ, प्रदर्शन, मार्केटिंग, देखादेखी, प्रतिस्पर्धा पर लोगों के कदम पड़ जाते हैं। नियमावली में ऐसा कोई प्रावधान नहीं रखा गया कि कितना पौषध, कितनी तपस्या या दीक्षा होगी तो ही चातुर्मास होगा। ये तो अपनी श्रद्धा, भक्ति की बात है। परंतु दिखावा, प्रदर्शन नहीं होगा तभी आध्यात्मिक भूमिका सुदृढ़ हो पाएगी।''

आचार्य भगवन् के श्रीमुख से 88 चातुर्मासों की घोषणा के साथ आगामी चातुर्मास रखे जाने वाले आगारों सहित भीलवाड़ा के लिए जैसे ही घोषित हुआ संपूर्ण पांडाल गगनभेदी जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता गान से गूँज उठा। आचार्यदेव ने महती कृपा कर 09 जून के दीक्षा प्रसंग हेतु बेगूँ के लिए घोषणा की।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **"श्रावक अटल श्रद्धा व निष्ठा रखते हुए आचार्य प्रवर के विचारों के अनुरूप अपने आपको मोड़ लेते हैं। सभी श्रावक महापुरुषों के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं। कुछ नियम-उपनियम बनाने से आवश्यक बाधाओं व शंकाओं का निवारण संभव है। इनके अंतर्गत-**

1. भोजनशाला में रेडियो नहीं बजेगा।

2. ज्यादा बैनर व पोस्टर नहीं लगाने हैं।

3. दीक्षा प्रसंगों पर फोटो आदि का प्रकाशन अधिक न हो।

4. आवश्यकता पड़ने पर चातुर्मासिक नियमावली में परिवर्तन संभव है। चातुर्मासिक स्थल पर खाने-पीने, ज्वेलरी, कपड़े के स्टॉल न लगें। होली, महावीर जयंती, आखातीज पर भी इन नियमों का पालन अवश्य रूप से हो।"

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने 'गुरु राम गुरु राम मंगलकारी, शरण तिहारी' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि चातुर्मास खुले वहाँ एक दीक्षा का लक्ष्य अवश्य हो। ऐसी उत्कृष्ट भावना भानी चाहिए।

संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं अन्य विशिष्टजनों सहित देशभर में पधारे सैकड़ों गुरुभक्तों ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। मंगलवाड़ चौराहा संघ की ओर से संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट करते हुए अहोभाव व्यक्त किए।

महेश नाहटा ने उभय गुरु-भगवंतों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन करते हुए ऐतिहासिक होली चातुर्मास की उपलब्धियों का जिक्र किया। भिंडर से 35 भाई-बहन पैदल चलकर गुरुदर्शन लाभ लेने हेतु मंगलवाड़ में गुरुचरणों में उपस्थित हुए। कई भाई-बहनों ने वर्ष में 50 एवं 100 संवर करने का नियम आचार्यदेव के श्रीमुख से ग्रहण किया।

धर्मसभा में अधिकांश भाई-बहनों ने सामायिक-संवर की साधना कर मिशाल पेश की। होली चातुर्मास को सफल बनाने में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मंगलवाड़ एवं सुंदर पृथ्वी ओस्तवाल परिवार की धर्मनिष्ठा, सेवाभक्ति अत्यंत सराहनीय रही।

27 मार्च 2024

न हो दोष देखने का नजरिया

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। पंच-परमेष्ठी को समर्पित प्रात:कालीन प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में कृपानिधान, भक्तों के भगवान आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में अमृतदेशना का पान करवाते हुए फरमाया कि **"तर्क-वितर्क, खंडन-विखंडन, वाद-विवाद से भी तत्त्वज्ञान पैदा हो सकता है, लेकिन बहस का उद्देश्य दूसरे को गलत साबित करने का नहीं होना चाहिए। हमारा नजरिया दोष देखने का नहीं होकर समाधान खोजने का होना चाहिए। 14 पूर्व की जानकारी वाला भी संपूर्ण ज्ञाता नहीं हो सकता। आचार, विचार, व्यवहार में किसी प्रकार की कमी नहीं मिलना ही परिपूर्ण ज्ञान का द्योतक होता है। प्रभु महावीर के शासनकाल में 14000 संत व 36000 साध्वियाँ थीं। उनके सभी के आचरण में भिन्नता होते हुए भी लक्ष्य एक ही मोक्ष मार्ग का था। एक समाचारी में देखने का नजरिया अच्छाई व आगे का लक्ष्य किसी की बुराई या दोष देखना नहीं अपितु गुणपरक दृष्टि था, जिससे समस्याओं का उत्पन्न होना ही संभव नहीं था।**

एक चित्रकार के चित्र में गलतियाँ बताने का कहने पर लोगों ने बहुत सारी गलतियाँ गिना दीं और अच्छाई बताने व गलतियाँ सुधार हेतु कहा तो कोई भी व्यक्ति एक भी सुधार व अच्छाई बताने को तत्पर नहीं हुआ। प्रभु महावीर की दृष्टि में सुधार का भाव था। उस युग में अज्ञानी लोग अपनी पीड़ा मिटाने के लिए पशुओं का वध करते थे। अतः दृष्टि में सुधार पर ही हमारा सुधार संभव है।''

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों की सेवा करने के लिए देवता भी तरसते हैं। पुण्यवान जीव भाग्यशाली माता की कोख से पैदा होता है। जो संतान जिनशासन की सेवा में अपनी पूरी जिंदगी समर्पित कर दे, उसी संतान का जन्म सार्थक होता है।

चमड़े की वस्तुएँ उपयोग नहीं करने एवं सप्ताह में एक दिन मोबाइल का उपयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने बच्चों को हितशिक्षा प्रदान की।

28 मार्च 2024

शरीर की ओर नहीं, आत्मा की ओर दें ध्यान

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। पक्षियों की मधुर कलरव के बीच प्रातः मंगलमय प्रार्थना की मधुर स्वरों से आत्मतत्त्व प्रसन्नता की ओर अग्रसर हुआ। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा सच्चा मित्र आत्मा है। शरीर जो हमेशा हमारे साथ रहता है उस पर हम सबसे ज्यादा ध्यान देते हैं, पर वह शरीर नाशवान है। परिवार वाले भी श्मशान तक साथ देते हैं। हमारी आत्मा अजर-अमर है। आत्मा ही हमारा सच्चा मित्र है और सदैव साथ निभाने वाला है। हमें शरीर पर नहीं आत्मा पर ध्यान देना है।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज परिवार सिमटता जा रहा है। घर में आपसी स्नेह-प्रेम सूखता जा रहा है। हमें दूसरों को नहीं अपने आपको बदलना है। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। उणोदरी तप का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ प्रदान किया। स्कूलों में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए।

29 मार्च 2024

ज्ञान रूपी उजाले से अज्ञान-अंधकार करें दूर

समता भवन, मंगलवाड़ चौराहा। प्रातःकाल भाई-बहन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति में लीन हो गए। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी धर्मसलिला वाणी में फरमाया कि **''यह संभव ही नहीं है कि आप दुःख बिखेरते चलें और जीवन में संघर्ष न हो। इसका उपाय बहुत ही सरल है। आप सरलता में जो कठिनाई है उस पर टिक जाओ। जब मैल चिपकता है तो बहुत कोमल होता है। जैसे-जैसे उसकी मात्रा बढ़ती है वह पत्थर की तरह कठोर होता जाता है। उसके बाद उसको दूर करना बहुत ही कठिन है। कुछ घटनाएँ मन के प्रतिकूल होती हैं तो मन अशांत होता है। धीरे-धीरे मैल जमा होता जाता है। राग-द्वेष से उत्पन्न होने वाले मैल हमारे मस्तिष्क से संचालित रक्तवाहिनियों में गाढ़ता से चिपक जाते हैं। मैल की मात्रा बढ़ने पर कठोर हो जाता है और वह जीवन में दुःखदायी बन जाता है। जैसे किसी मैल को उतारने के लिए निर्मल जल व साबुन का प्रयोग करते हैं। उसी प्रकार राग-द्वेष के मैल को उतारने के लिए निश्छल बुद्धि और स्वच्छ मनोभावों का आर्विभाव करें। आचार्य श्री नानेश ने लिखा है- ''मनुष्य शरीर से स्नान करने से अच्छा है शुद्ध भावना से स्नान करें। उसका महत्त्व भी अधिक है। नित्यप्रति समय निकालकर कोमल हृदय में**

जो अशांति चिपकी है उसको ध्यान एवं निर्मल विचारों से हटाएँ। दृष्टि में परिवर्तन लाकर अशांति को दूर करते जाएँ तो भविष्य में आने वाले समय में जीवन प्रतिरोधक होगा। तीर्थंकर भगवान ने ज्ञान को रसायन बताया है। ज्ञान रूपी रसायन हमारे अंदर प्रवेश करेगा तो सारा कचरा बाहर निकल जाएगा। सिद्धांत के रसायन में आत्मा को एकमेक हो जाना है। सारी दुनिया को जहाँ अँधेरा दिखता है, ज्ञानी पुरुष को वहाँ उजाला दिखता है। जहाँ सभी दुःखी होते हैं वहाँ ज्ञानी सुखी रहता है। मैं ही सुख-दुःख का निर्माता हूँ। ज्ञान में वह शक्ति है जो सभी दुःखों को दूर करने में समर्थ है।''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने **'जनम-जनम का दास हूँ गुरुदेव तुम्हारा'** भाव गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं। इच्छाओं का निरोध नहीं है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति हमारी आसक्ति को कम करें और संयम में पुरुषार्थ करें। भगवान महावीर को किसी वस्तु की कमी नहीं थी फिर भी उन्होंने सब कुछ त्याग दिया और सबके लिए आदर्श बन गए।

साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। गाड़ी चलाते समय व भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। रतलाम संघ सदस्यों सहित राष्ट्रीय मंत्री एवं महत्तम प्रभारी आदि अनेक जनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। जिज्ञासुओं ने अपनी जिज्ञासाओं का तात्त्विक समाधान महापुरुषों के सान्निध्य में प्राप्त किया।

भदेसर में विराजित संथारा साधिका नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे के 21वें दिवस पर आज विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

होली चातुर्मास के पावन प्रसंग का भरपूर लाभ मंगलवाड़ चौराहा संघ को देने के पश्चात् आज आचार्य भगवन् का अपने सान्निध्यवर्ती संतवृंद सहित मंगलवाड़ गाँव के लिए विहार हुआ। सम्पूर्ण मार्ग अहिंसा, संयम, तप एवं गुरुवर की कृपा से महकता रहा। मार्गवर्ती अनेक स्थानों पर श्रद्धालुजन गुरुवर की एक झलक पाने को आतुर नजर आए। जय-जयकारों से संपूर्ण मार्ग गुँजायमान हो रहा था। मंगलवाड़ गाँव के श्री वर्धमान जैन स्थानक भवन में आचार्य भगवन् आदि ठाणा का भव्य मंगलमय प्रवेश हुआ। अगवानी में पूर्व विधायक ललित जी ओस्तवाल एवं अन्य कई श्रद्धालु उपस्थित थे।

यहाँ आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विनय को जीवन में धारण करते हुए आत्मावलोकन करना है। कर्मबंधनों के कारणों से दूर होते हुए अधिकाधिक कर्मनिर्जरा का लक्ष्य रखें। आचार्य भगवन् ने जिज्ञासाओं का सुंदर समाधान किया।

30 मार्च 2024

राम नाम से दूर होती है परेशानियाँ

बिलौदा। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ मंगलवाड़ गाँव से विहार कर बिलौदा में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे जीवन में आए दिन परेशानियाँ आती हैं, किंतु जब हमारे मुँह से **'गुरु राम'** शब्द निकलता है तो सारी परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। जो अरिहंत के करीब हैं, उसका तीन लोक में कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। जिसके नजदीक धर्म होता है उसे अन्य किसी और शरण की जरूरत नहीं है। यदि हमारा मनोबल मजबूत है तो हमें कोई नहीं डिगा सकता और मनोबल मजबूत नहीं होगा तो भय से कोई नहीं बचा सकता।

स्थानीय संघ प्रमुखों ने आचार्य भगवन् के आगमन को महान पुण्यवानी का उदय बताया। विभिन्न त्याग-

प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए।

30 मार्च 2024

दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम

31 मार्च 2024, बिलौदा। छोटे से गाँव बिलौदा में अल्प जैन घर होते हुए भी आज के पावन दिवस पर प्रात: रविवारीय समता शाखा में भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। उपस्थित गुरुभक्तों ने समता आराधना के माध्यम से अपना जीवन धन्य बनाया।

यहाँ पर आयोजित विशाल धर्मसभा में श्रावक-श्राविकाओं को जन-जन के हितचिंतक परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''समाधि का अर्थ मानसिक ऊहापोह का समाप्त हो जाना है। बहुत सारे विकल्प मन में पैदा होते रहते हैं। हमारी अपेक्षाएँ, अभिलाषाएँ, इच्छाएँ उन विकल्पों को जन्म देने वाली होती हैं और बहुधा जब उनमें टकराहट होती है तो मन में द्वंद्व पैदा होता है। क्या करूँ, क्या नहीं करूँ? क्या करने योग्य है और क्या नहीं करने योग्य, व्यक्ति इसकी समीक्षा नहीं कर पाता और अधर्म में झूलता रहता है। अनिर्णायक स्थिति बनी रहती है और वह सही दिशा में आगे नहीं बढ़ पाता है। हम अनुभव करें कि हम आगे जाना चाहते हैं और आगे कदम नहीं बढ़ाएँगे तो हमारी गति नहीं हो पाएगी। वैसे ही दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम। शांत-प्रशांत अवस्था को समाधि कहते हैं। जिसकी इच्छाएँ, अपेक्षाएँ कम होंगी उसको समाधि मिलेगी। चाहे साधु-साध्वी हो या श्रावक-श्राविका समाधि का किसी से कोई गहरा संबंध नहीं है। गहरा संबंध है मन की शांति-समाधि से। हमारी चाह बढ़ती जाएगी तो वह हमें भटकाने वाली बनेगी। यदि ऊहापोह शांत हो जाए तो हम जैसा चाहें मन वैसा होगा।''**

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि एकमात्र आत्मा को देखने वाला व्यक्ति कभी दु:खी नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति दु:ख से मुक्त हो जाता है। जितना समय हम दूसरों को देखने में निकालते हैं उससे थोड़ा समय भी अगर अपने आत्मगुणों को देखने में लगाएँ तो हमारा कल्याण निश्चित है। इंद्रियों से मिलने वाला सुख, दु:ख का मूल कारण है।

साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

मंगलवाड़ होली चातुर्मास पश्चात् आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर द्वारा सान्निध्यवर्ती संतवृंद सहित मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में अद्भुत धर्म जागरणा की जा रही है। दया, संवर, सामायिक, एकासन, आयंबिल, उपवास आदि धर्माराधना प्रचुर संख्या में हो रही है।

भदेसर में 26 अप्रैल को मुमुक्षु सायली जी बाफना, निफाड़ की जैन भागवती दीक्षा एवं चित्तौड़गढ़ में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव व 10 से 26 मई तक अभिमोक्षम् शिविर पर महापुरुषों का सान्निध्य संभावित है।

तपस्या सूची	
संत-सती वर्ग	
5 उपवास	साध्वी श्री रविप्रभा श्री जी म.सा.
4 उपवास	साध्वी श्री संभाव्य श्री जी म.सा.
3 उपवास	साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा.

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	नक्षत्रमल जी सरूपरिया-मंगलवाड़, शांतिलाल जी जारोली-मोरवन, दिनेश जी ढेलड़िया-हालोल, पारसमल जी बोहरा-सिलोड़, मांगीलाल जी गांग-बेरोदा, रामचंद्र जी राव, संतोष जी नवलखा-गंगाशहर, हुक्मीचंद जी-रांची, कैलाश जी बोहरा-चिकारड़ा, देवीलाल जी अहीर, जीवन सिंह जी बाबेल-कानोड़, मोहनलाल जी बोहरा-नोखा, पुनमचंद जी-जेठाना, हिम्मतलाल जी खाब्या, सचिन जी कविता जी जैन-दिल्ली, कांता जी भंडारी-रतलाम
गाथा का स्वाध्याय	**एक लाख** - राज देवी लोढ़ा-बीकानेर, हरि सिंह जी भंडारी-कपासन, शोभा जी बोहरा-मुंबई, बसंती देवी सेठिया-गंगाशहर
पक्की नवकारसी	**आजीवन** - प्रकाश जी आँचलिया-देशनोक
संवर	**250** - आशा जी जैन-सवाई माधोपुर (सचित्त का त्याग)
वर्षीतप	आभा जी पोरवाल, साधना जी कपूर जी कोठारी-रतलाम, नीलम देवी रांका-मुंबई
पोरसी	**वर्षीतप में 200** - इंदिरा जी आँचलिया-देशनोक
चौविहार	**आजीवन** - मंजुला जी बोरूंदिया-ब्यावर
उपवास	**9** - भोपाल सिंह जी मांडावत, अंजना जी पोखरना-बेगूँ

-महेश नाहटा

दीक्षा महोत्सव निवेदन

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में **26 अप्रैल 2024** को भदेसर की पावनधरा पर **मुमुक्षु सुश्री सायली जी बाफना** सुपुत्री सुनीता जी-विजय कुमार जी बाफना, निफाड़ की जैन भागवती दीक्षा आचार्य भगवन् के श्रीमुख से होनी संभावित है। सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं एवं स्थानीय संघों से करबद्ध निवेदन है कि इस अवसर पर सपरिवार व ससंघ पधारकर दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर कर्मनिर्जरा का लाभ लेवें। इस पावन अवसर पर पधारने से आपको अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा।

अभय मोदी	आवास-निवास	हर्षित चपलोत
9057533100		7693088790

निवेदक

* श्री साधुमार्गी जैन संघ
* समता युवा संघ

भदेसर
चित्तौड़गढ़ (राज.)

* समता महिला मंडल
* समता बहू मंडल

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आवश्यकता

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, केंद्रीय कार्यालय- समता भवन, बीकानेर द्वारा उदयपुर में संचालित **आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र** एवं **श्री गणेश जैन छात्रावास** हेतु एक प्रशासनिक अधिकारी की शीघ्र आवश्यकता है। आवेदक संबंधित क्षेत्र में अनुभवी, सौम्य, शांत स्वभावी, कार्यालय एवं लेखा संबंधी ज्ञान में दक्ष, पत्र व्यवहार में निपुण एवं छात्रों पर नियंत्रण व मार्गदर्शन करने वाला होना चाहिए।

कंप्यूटर का सामान्य ज्ञान अनिवार्य है। जैन व धार्मिक योग्यता रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी। ५५ वर्ष से कम आयु वाले ही आवेदन करें। वेतन योग्यतानुसार।

कृपया अपना C.V. ईमेल से ganeshjainch@sadhumargi.com पर एवं डाक से नीचे उल्लेखित पते पर भिजवा सकते हैं -

संयोजक, आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र
राणा प्रताप नगर, रेलवे स्टेशन के पास,
ओस्तवाल प्लाजा के सामने, उदयपुर-313001 (राज.)

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे व्हाट्सएप्प नं. 9799061990 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं अथवा QR Code स्कैन कर अपनी जानकारी Google Form द्वारा भरकर हमें भिजवाने का कष्ट करें।

-श्रमणोपासक टीम

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव 2024 चित्तौड़गढ़ में

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की असीम अनुकंपा से **10 मई 2024** को अक्षय तृतीया पारणा का प्रसंग **चित्तौड़गढ़ संघ** को प्राप्त हुआ है।

सभी स्थानीय संघों एवं वर्षीतप आराधक श्रावक-श्राविकाओं से करबद्ध निवेदन है कि इस पावन अवसर पर पधारकर वर्षीतप पारणा का लाभ लेवें। इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त होना संभावित है। आपके आगमन एवं प्रस्थान की पूर्व सूचना नीचे दिए गए संपर्क सूत्र पर प्रदान कर व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

:: संपर्क सूत्र ::

9414109331
9414110955
9413046409
9829244305

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ संघ
श्री साधुमार्गी जैन समता महिला मंडल
श्री साधुमार्गी जैन समता बहू मंडल
चित्तौड़गढ़ (राज.)

॥ जय महावीर ॥
अभिमोक्षम्
10 May to 26 May 2024
1008+ रजिस्ट्रेशन
(संपूर्ण भारत से)
धर्म
आत्मबल
उदारता
धैर्य
साहस
व्यक्तित्व निर्माण
निर्णय क्षमता
CHITTORGARH
अभिमोक्षम्
Diving within...
For more details contact
+91 9827344055
+91 7021380109
SCAN NOW!!
ईर्ष्या
क्रोध
लालच
1000+ न्यू फ्रेंड्स
पूर्ण आवासीय शिविर
स्नान त्याग व संवर स्वैच्छिक
आवागमन खर्च व सामायिक किट
कंप्लीट डिजिटल डिटॉक्स (मोबाइल त्याग)

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

पूज्य आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना

राम चमकते भानु समाना

ब्याज मुक्त ऋण ₹ 10 लाख तक

साधुमार्गी परिवार हेतु

* कक्षा 10th और 12th में प्रथम श्रेणी प्राप्त किये है।
* स्नातक एवं स्नातकोत्तर पूर्णकालिक पाठ्यक्रम में भारत एवं विदेश में किसी मान्यता प्राप्त संस्था में प्रवेश लिया है या प्रवेश की प्रक्रिया जारी है।
* सहायता प्राप्त राशि 7.50 लाख स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से।
* शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क सीधे कालेज/संस्था एवं विश्वविद्यालय को प्रदान।
* पुनर्भुगतान – कोर्स समाप्ति के 1 वर्ष या रोजगार प्राप्ति के 6 महीने पश्चात् जो भी पहले

संजय भूरा
(संयोजक ,आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना)
मो.: 9810016751
ई-मेल :- uchhshikshayojna@gmail.com

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि श्री संघ की वेबसाइट www.sadhumargi.com/forms पर उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 8306098040

अब तक 269 छात्रों को 13.54 करोड़ रुपए की सहायता राशि उपलब्ध करवाई जा चुकी है।

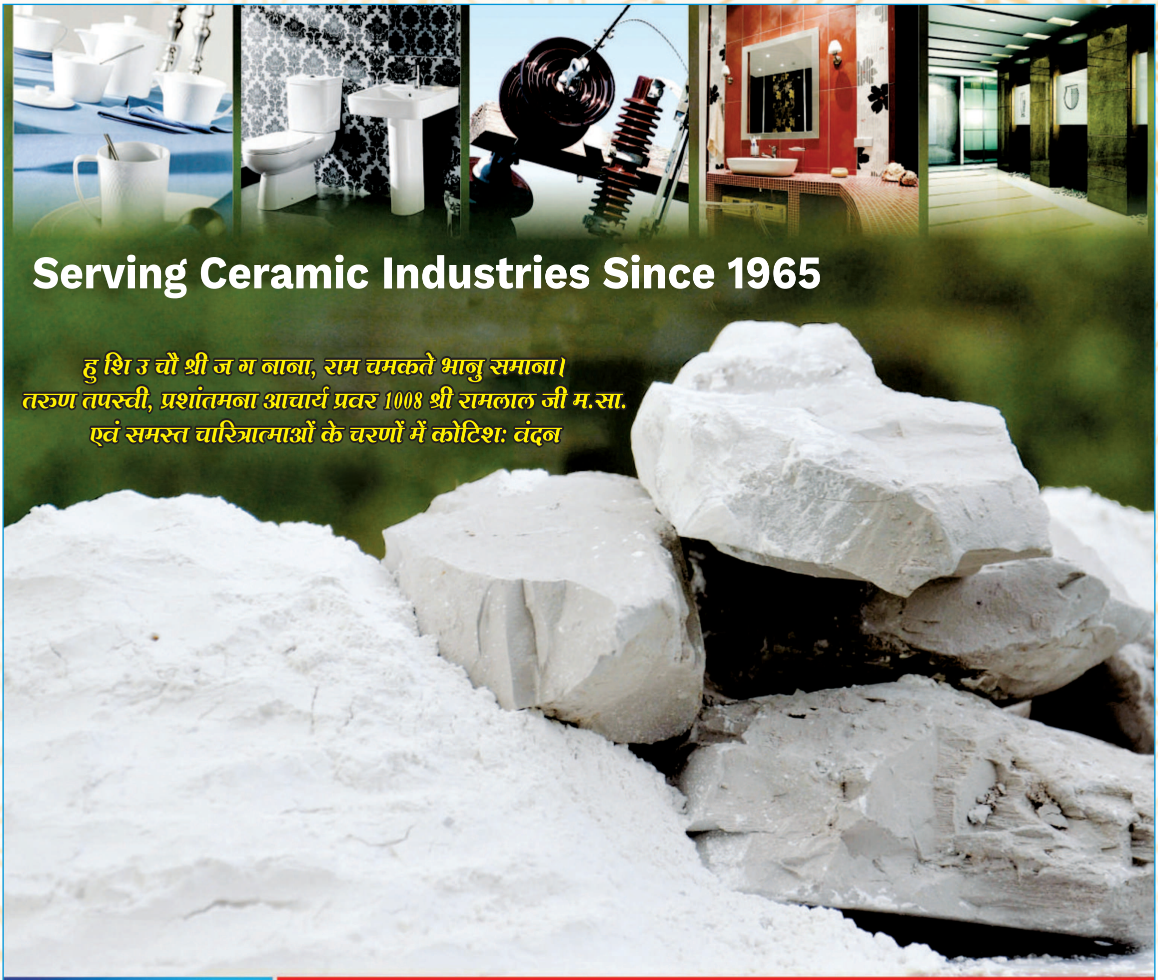

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/-	(15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/-	(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. :	31264126681
IFSC Code :	SBIN0003401
Branch :	G.S. ROAD, Bikaner
Mob. :	7073311108
E-mail :	**accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	: 8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	: 7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिश: वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond® Duroflex

Diamond® DUROLON

DURO RING

LEAK PROOF

NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO

LEAD FREE ENVIRONMENT FRIENDLY

UV STABILIZED

Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact

IS 15778 : 2007 CM/L NO : 2526149

cftri CERTIFIED

LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

@absjainsangh

www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261